दूर्वा

भाग 3

कक्षा 8 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

(द्वितीय भाषा)

© NCERT
not to be republished

0848

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जनवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण

दिसंबर 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
फरवरी 2011 फाल्गुन 1932
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
मई 2016 वैशाख 1938
दिसंबर 2016 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 श्रावण 1941

PD 30T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा गोयल स्टेशनर्स, बी-36/9, जी. टी. करनाल रोड इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली - 110 033 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-809-6

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **Phone : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 **Phone : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **Phone : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 **Phone : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 **Phone : 0361-2674869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
संपादक : *एम. लाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *दीपक जैसवाल*

आवरण एवं चित्रांकन

अरविंदर चावला

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

© NCERT not to be republished

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में

बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
30 नवम्बर 2007

© NCERT not to be republished

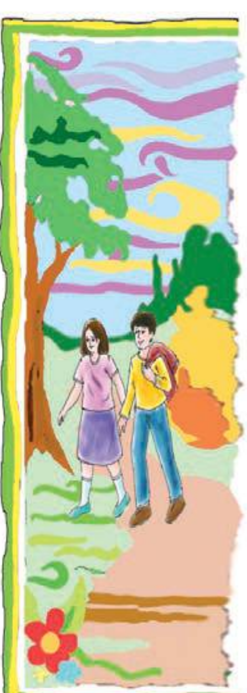

अध्यापक बंधुओं से

यह किताब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को बच्चे के व्यक्तित्त्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। हम जानते हैं कि भाषा की शिक्षा मातृभाषा से प्रभावित मात्र ही नहीं होती बल्कि वह द्वितीय भाषा कौशल की समृद्धि में भी लाभप्रद और सहायक सिद्ध होती है। इसलिए बदलते परिवेश एवं संदर्भ में ज्ञान के क्षेत्रों में हो रहे व्यापक परिवर्तन के कारण भी भाषा की शिक्षा को अन्य विषयों की शिक्षा के साथ मिलाजुलाकर देखने की ज़रूरत है। भाषा की महत्ता तो स्वयं सिद्ध है। इसी को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों की हिंदी की सामान्य संरचनाओं की जानकारी को धीरे–धीरे उसकी विशिष्ट और विपुल संरचनाओं से जोड़ने की कोशिश की गई है। इसमें हिंदी भाषा और साहित्य के विविध रूप–स्वरूप को सरल, सहज और रुचिकर पाठों के माध्यम से विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया गया है। हिंदी भाषा और साहित्य की विभिन्न विधाओं और शैलियों के साथ–साथ अन्य–विषयक ज्ञान से संबंधित सामग्रियों से तैयार विभिन्न पाठों द्वारा विद्यार्थियों को हिंदी की समृद्ध परंपरा से स्वाभाविक रूप से जोड़ने की कोशिश की गई है।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक में न केवल हिंदी के नए–पुराने महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की बाल सुलभ रचनाओं को बल्कि ज्ञान के विविध विषय क्षेत्रों से सम्बद्ध हिंदी से व्यापक सरोकार रखनेवाले अन्य भाषा–भाषी लेखकों की रचनाओं को भी शामिल किया गया है। इसमें द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने–पढ़ाने वालों की हिंदी के प्रति रुचि को बढ़ाने की भी कोशिश की गई है। हिंदी में उपलब्ध अनूदित बाल साहित्य को भी यथासंभव इसमें शामिल किया गया है। पाठों की भाषा और विषय–वस्तु न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि अन्य विषयक ज्ञान को भी अपने अंदर समेटे हुए है। यह विद्यार्थियों की भाषा और साहित्य को पढ़ने–समझने और जानने–बताने की रुचि को बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। इसमें नए तरह से प्रश्न–अभ्यास भी दिए गए हैं जिनके द्वारा विद्यार्थियों में भाषिक कौशल सहित ज्ञान के लिए आवश्यक अन्य कौशलों का भी स्वाभाविक रूप में पर्याप्त विकास हो सकेगा। इसलिए अभ्यासों में देखना, सुनना, अभिनय करना,

अभिव्यक्त करना, चिंतन करना, तर्क करना, विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना, समस्या सुलझाना, सृजन करना, जिम्मेदारी निभाना, आत्मविश्वास पैदा करना, सजग रहना और समझ बढ़ाना जैसी क्रियाशीलताओं के साथ-साथ भाषा के ज्ञान को भी समृद्ध करने पर ध्यान दिया गया है। चित्र, नक्शे और तालिका आदि के प्रयोग द्वारा शब्दों के निर्माण व पहचान के साथ वाक्यों के समुचित व्यवहार और प्रयोग की समझ को बढ़ावा देने की कोशिश की गई है। बहुभाषिकता को भाषा शिक्षण के संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने पर भी बल दिया गया है। विद्यार्थियों की भाषा शिक्षण की अपनी कुशलता और क्षमता सहित उनके परिवेश, विद्यालय और शिक्षकों के द्वारा उपलब्ध किए/कराए जाने वाले सभी संसाधनों सहित उनके भाषिक परिवेश की सीमाओं और विशिष्टताओं को भी यथासंभव ध्यान में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक में कुल उन्नीस पाठ हैं और अंतिम के दो पाठ 'आओ पत्रिका निकालें' और 'आह्वान' मात्र पढ़ने के लिए हैं। इसलिए पुस्तक में उसके साथ प्रश्न अभ्यास नहीं दिए गए हैं। भाषा सीखने में सिद्धांतों से अधिक व्यवहार के महत्व को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक में ही व्याकरण की समझ उत्पन्न करने के लिए संबंधित अभ्यास दिए गए हैं। अतः पढ़ाने के दरम्यान अध्यापक बंधु संदर्भ के अनुसार व्याकरणिक प्रयोगों को कक्षा की ज़रूरत के अनुसार स्वयं भी उपयोग कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, रुचि, कौशल और सोच को उसके आस-पास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु पाठों व प्रश्न-अभ्यासों का चयन और निर्माण किया गया है। भाषा शिक्षण के लिए अनिवार्य तरीकों व संसाधनों का प्रयोग विद्यार्थियों और शिक्षकों की स्वाभाविक रुचि और अभ्यास पर ही निर्भर करता है। अतः आशा है विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा हिंदी शिक्षण की दिशा में इस पुस्तक का उपयोग समुचित ढंग से किया जाएगा। आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

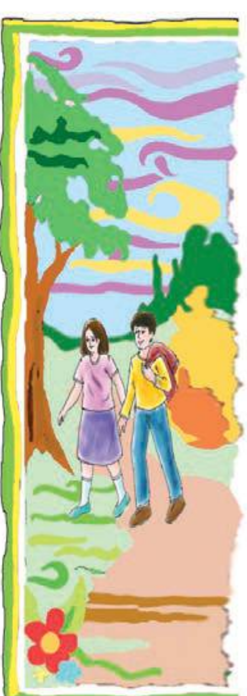

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *हिंदी शिक्षक,* निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली।

आशा जोशी, *प्रवाचक* (हिंदी विभाग), एस.पी.एम. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

उषा शर्मा, *प्रवाचक,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, पुष्कर रोड़, अजमेर।

गुलाम मोइनुद्दीन खान, *अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, रमादेवी महिला महाविद्यालय भुवनेश्वर, उड़ीसा।

गोबिंद प्रसाद, *रीडर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

पूरन सहगल, *निदेशक,* मालव लोक संस्कृति अनुष्ठान, मनासा, मध्य प्रदेश।

बी. प्रमीला देवी, *हिंदी शिक्षिका,* जवाहर नवोदय विद्यालय, एच.सी.यू कैम्पस, रंगारेड्डी हैदराबाद, आंध्र प्रदेश।

राम प्रकाश टिकेकर, *सह-आचार्य,* हिंदी विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति, आंध्र प्रदेश।

सी.ई.जीनी, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आर-12, नेहरु एंक्लेव, कालकाजी, नयी दिल्ली।

सुब्रत लाहिड़ी, *पूर्व सह-आचार्य,* प्रेसिडेंसी कॉलेज, 63-ए, साउथ सिंचिरोड, कोलकाता।

सदस्य-समन्वयक

संजय कुमार सुमन, *वरिष्ठ प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

नरेश कोहली, *प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद् सभी रचनाकारों, रचनाकारों के परिजनों, संस्थानों, प्रकाशकों के प्रति आभारी है।

पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए हम कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* कमलेश आर्य, *कॉपी एडीटर* पूजा नेगी *और प्रूफ़ रीडर* दुर्गा देवी एवं कंचन शर्मा का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

© NCERT
not to be republished

पाठ-सूची

आमुख			*iii*
अध्यापक बंधुओं से			*v*
1.	गुड़िया (कविता)	– कुँवर नारायण	1
2.	दो गौरैया (कहानी)	– भीष्म साहनी	5
3.	चिट्ठियों में यूरोप (पत्र)	– सोमदत्त	16
4.	ओस (कविता)	– सोहनलाल द्विवेदी	23
5.	नाटक में नाटक (कहानी)	– मंगल सक्सेना	28
6.	सागर यात्रा (यात्रा वृत्तांत)	– कर्नल टी.सी.एस. चौधरी	37
7.	उठ किसान ओ (कविता)	– त्रिलोचन	45
8.	सस्ते का चक्कर (एकांकी)	– सूर्यबाला	50
9.	एक खिलाड़ी की कुछ यादें (संस्मरण)	– केशवदत्त	60
10.	बस की सैर (कहानी)	– वल्ली कानन	65
11.	हिंदी ने जिनकी जिंदगी बदल दी –मारिया नेज्यैशी (भेंटवार्त्ता)	– जय प्रकाश पांडेय	74
12.	आषाढ़ का पहला दिन (कविता)	– भवानी प्रसाद मिश्र	82
13.	अन्याय के खिलाफ (कहानी) (आदिवासी स्वतंत्रता संघर्ष कथा)	– चकमक से	85
14.	बच्चों के प्रिय श्री केशव शंकर पिल्लै (व्यक्तित्व)	– आशा रानी व्होरा	93
15.	फ़र्श पर (कविता)	– निर्मला गर्ग	101
16.	बूढ़ी अम्मा की बात (लोककथा)	– संकलित	104
17.	वह सुबह कभी तो आएगी (निबंध)	– सलमा	110
18.	आओ पत्रिका निकालें (अतिरिक्त पठन के लिए)	– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	116
19.	आह्वान (अतिरिक्त पठन के लिए)	– अशफ़ाक उल्ला खाँ	119

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

© NCERT not to be republished

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

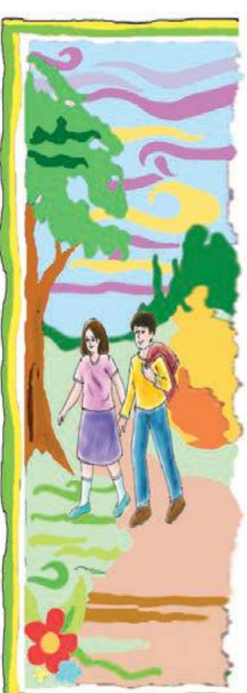

पहला पाठ

गुड़िया

मेले से लाया हूँ इसको
छोटी सी प्यारी गुड़िया,
बेच रही थी इसे भीड़ में
बैठी नुक्कड़ पर बुढ़िया।

मोल-भाव करके लाया हूँ
ठोक-बजाकर देख लिया,
आँखें खोल मूँद सकती है
वह कहती है पिया-पिया।

जड़ी सितारों से है इसकी
चुनरी लाल रंग वाली,
बड़ी भली हैं इसकी आँखें
मतवाली काली-काली।

ऊपर से है बड़ी सलोनी
अंदर गुदड़ी है तो क्या?
ओ गुड़िया तू इस पल मेरे
शिशुमन पर विजयी माया।

© NCERT not to be republished

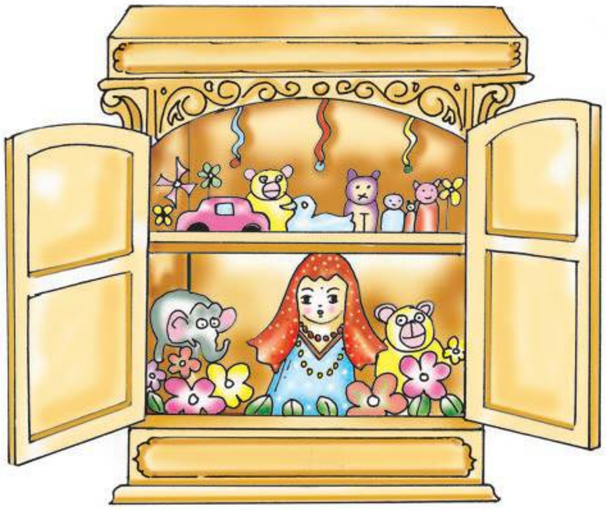

रखूँगा मैं तुझे खिलौनों की
अपनी अलमारी में,
कागज़ के फूलों की नन्हीं
रंगारंग फुलवारी में।

नये-नये कपड़े-गहनों से
तुझको रोज़ सजाऊँगा,
खेल-खिलौनों की दुनिया में
तुझको परी बनाऊँगा।

— *कुँवर नारायण*

अभ्यास

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ

नुक्कड़	–	मोड़, छोर,	गुदड़ी	–	फटे-पुराने कपड़ों से बनाई गई, बिछावन
मूँद/मूँदना	–	बंद/बंद करना	शिशुमन	–	बालमन, भोला मन
चुनरी	–	ओढ़नी, दुपट्टा, चुन्नी	रंगारंग	–	रंग-बिरंगी
भली	–	अच्छी, सुंदर	रोज़	–	हर दिन
सलोनी	–	सुंदर			

1. कविता से

(क) गुड़िया को कौन, कहाँ से और क्यों लाया है?

(ख) कविता में जिस गुड़िया की चर्चा है वह कैसी है?

(ग) कवि ने अपनी गुड़िया के बारे में अनेक बातें बताई हैं। उनमें से कोई दो बातें लिखो।

2. तुम्हारी बात

(क) "खेल-खिलौनों की दुनिया में तुमको परी बनाऊँगा।" बचपन में तुम भी बहुत से खिलौनों से खेले होगे। अपने किसी खिलौने के बारे में बताओ।

(ख) "मोल-भाव करके लाया हूँ
ठोक-बजाकर देख लिया।"

अगर तुम्हें अपने लिए कोई खिलौना खरीदना हो तो तुम कौन-कौन सी बातें ध्यान में रखोगे?

(ग) "मेले से लाया हूँ इसको
छोटी-सी प्यारी गुड़िया"

यदि तुम मेले में जाओगे तो क्या खरीदकर लाना चाहोगे और क्यों?

3. मेला

भारत में अनेक अवसरों पर मेले लगते हैं। कुछ मेले तो पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

(क) तुम अपने प्रदेश के किसी मेले के बारे में बताओ। पता करो कि वह मेला क्यों लगता है? वहाँ कौन-कौन से लोग आते हैं और वे क्या करते हैं? इस काम में तुम पुस्तकालय या बड़ों की सहायता ले सकते हो।

(ख) तुम पुस्तक-मेला, फ़िल्म-मेला और व्यापार-मेला आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करो और बताओ कि अगर तुम्हें इनमें से किसी मेले में जाने का अवसर मिले तो तुम किस मेले में जाना चाहोगे और क्यों?

4. कागज़ के फूल

कागज़ से तरह-तरह के खिलौने बनाने की कला को 'आरिगैमी' कहा जाता है। तुम भी कागज़ के फूल / वस्तु बनाकर दिखाओ।

5. घर की बात

तुम्हारे घर की बोली में इन शब्दों को क्या कहते हैं?

(क) गुड़िया

(ख) फुलवारी

(ग) नुक्कड़

(घ) चुनरी

6. मैं और हम

मैं मेले से लाया हूँ इसको

हम मेले से लाए हैं इसको

ऊपर हमने देखा कि यदि 'मैं' के स्थान पर 'हम' रख दें तो हमें वाक्य में कुछ और शब्द भी बदलने पड़ जाते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए दिए गए वाक्यों को बदलकर लिखो।

(क) मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ।

हम आठवीं कक्षा ....।

(ख) मैं जब मेले में जा रहा था तब बारिश होने लगी।

....

(ग) मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगी।

....

7. शब्दों की दुनिया

दिए गए शब्दों के अंतिम वर्ण से नए शब्द का निर्माण करो–

मेला लाल लगन नया याद

पिया

खोल

शिशुमन

© NCERT not to be republished

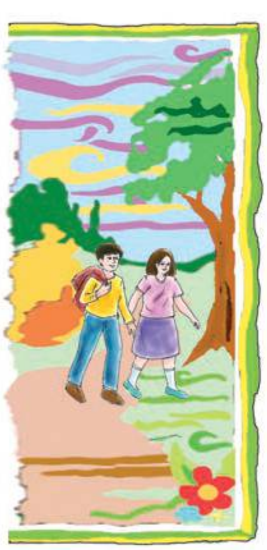

दूसरा पाठ

0848CH02

दो गौरैया

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं–माँ, पिताजी और मैं। पर पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है। हम तो जैसे यहाँ मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।

आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं। जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो। यहाँ कभी तोते पहुँच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह-तरह की गौरैयाँ। वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!

घर के अंदर भी यही हाल है। बीसियों तो चूहे बसते हैं। रात-भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं। वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते। बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं। एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है। एक दूसरा है जिसे बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसंद है। उसे शायद गर्मी बहुत लगती है। बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं मगर घर उसे भी पसंद है और वह कभी-कभी झाँक जाती है। मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है। शाम पड़ते ही दो-तीन चमगादड़ कमरों के आर-पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं। घर में

© NCERT not to be republished

कबूतर भी हैं। दिन-भर 'गुटर-गूँ गुटर-गूँ' का संगीत सुनाई देता रहता है। इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियाँ भी हैं और बर्रे भी हैं और चींटियों की तो जैसे फ़ौज ही छावनी डाले हुए है।

अब एक दिन दो गौरैया सीधी अंदर घुस आईं और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं। पिताजी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आईं थीं वैसे ही उड़ भी गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है, और सामान भी ले आईं हैं और मज़े से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। जाहिर है, उन्हें घर पसंद आ गया था।

माँ और पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे। थोड़ी देर बाद माँ सिर हिलाकर बोलीं, "अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।"

इस पर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, "देखता हूँ ये कैसे यहाँ रहती हैं! गौरैयाँ मेरे आगे क्या चीज़ हैं! मैं अभी निकाल बाहर करता हूँ।"

"छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!" माँ ने व्यंग्य से कहा।

माँ कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिताजी उबल पड़ते हैं वह समझते हैं कि माँ उनका मज़ाक उड़ा रही हैं। वह फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर ज़ोर से ताली बजाई

© NCERT not to be republished

और मुँह से 'श.....शू' कहा, बाँहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे, कभी बाहें झुलाते, कभी 'श. ..शू' करते।

गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झाँककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं-चीं करने लगीं। और माँ खिलखिलाकर हँसने लगीं।

पिताजी को गुस्सा आ गया, इसमें हँसने की क्या बात है?

माँ को ऐसे मौकों पर हमेशा मज़ाक सूझता है। हँसकर बोली, चिड़ियाँ एक दूसरी से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?

तब पिताजी को और भी ज़्यादा गुस्सा आ गया और वह पहले से भी ज़्यादा ऊँचा कूदने लगे।

गौरैयाँ घोंसले में से निकलकर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं। उन्हें पिताजी का नाचना जैसे बहुत पसंद आ रहा था। माँ फिर हँसने लगीं, ये निकलेंगी नहीं, जी। अब इन्होंने अंडे दे दिए होंगे।"

"निकलेंगी कैसे नहीं?" पिताजी बोले और बाहर से लाठी उठा लाए। इसी बीच गौरैयाँ फिर घोंसले में जा बैठी थीं। उन्होंने लाठी ऊँची उठाकर पंखे के गोले को ठकोरा। 'चीं-चीं' करती गौरैयाँ उड़कर पर्दे के डंडे पर जा बैठीं।

इतनी तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत थी। पंखा चला देते तो ये उड़ जातीं। माँ ने हँसकर कहा।

पिताजी लाठी उठाए पर्दे के डंडे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर किचन के दरवाज़े पर जा बैठी। दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाज़े पर।

माँ फिर हँस दी। तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाज़े खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाकी दरवाज़े बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।

अब पिताजी ने मुझे झिड़ककर कहा, "तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाजे बंद कर दे!"

मैंने भागकर दोनों दरवाज़े बंद कर दिए केवल किचन वाला दरवाज़ा खुला रहा।

पिताजी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। एक बार तो झूलती लाठी माँ के सिर पर लगते-लगते बची। चीं-चीं करती चिड़ियाँ कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं। आखिर दोनों किचन की ओर खुलने वाले दरवाज़े में से बाहर निकल गईं। माँ तालियाँ बजाने लगीं। पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।

"आज दरवाज़े बंद रखो" उन्होंने हुक्म दिया। "एक दिन अंदर नहीं घुस पाएँगी, तो घर छोड़ देंगी।"

तभी पंखे के ऊपर से चीं-चीं की आवाज सुनाई पड़ी। और माँ खिलखिलाकर हँस दीं। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैया फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं।

"दरवाज़े के नीचे से आ गई हैं," माँ बोलीं।

मैंने दरवाजे के नीचे देखा। सचमुच दरवाजों के नीचे थोड़ी-थोड़ी जगह खाली थी।

पिताजी को फिर गुस्सा आ गया। माँ मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हँसे जा रही थीं।

अब तो पिताजी गौरैयों पर पिल पड़े। उन्होंने दरवाज़ों के नीचे कपड़े ठूँस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए। और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े। चिड़ियाँ चीं-चीं करती फिर बाहर निकल गईं। पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं। अबकी बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।

"देखो-जी, चिड़ियों को मत निकालो," माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा, अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब ये यहाँ से नहीं जाएँगी।

क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूँ? पिताजी बोले और कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूँस दिया और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया। दोनों पिछले आँगन की दीवार पर जा बैठीं।

इतने में रात पड़ गई। हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए। जाने से पहले मैंने आँगन में झाँककर देखा, चिड़ियाँ वहाँ पर नहीं थीं। मैंने समझ लिया कि उन्हें अक्ल आ गई होगी। अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी।

दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मज़े से बैठी मल्हार गा रही थीं। पिताजी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज़ यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं पर रात के वक्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से वे अंदर घुस आतीं।

पिताजी परेशान हो उठे। आखिर कोई कहाँ तक लाठी झुला सकता है? पिताजी बार-बार कहें, "मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।" पर आखिर वह भी तंग आ गए थे। आखिर जब उनकी सहनशीलता चुक गई तो वह कहने लगे कि वह गौरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे। और वह फौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए।

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था। उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए," उन्होंने गुस्से से कहा।

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो

© NCERT not to be republished

झालर टाँग रखी हो। पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया और दाईं ओर को खींचा। दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे।

"चलो, दो तिनके तो निकल गए," माँ हँसकर बोलीं, अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएँगे!

तभी मैंने बाहर आँगन की ओर देखा और मुझे दोनों गौरैयाँ नज़र आईं। दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं। इस बीच दोनों कुछ-कुछ दुबला गई थीं, कुछ-कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।

अब पिताजी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। वे लिपटते गए, लिपटते गए, और घोंसला लाठी के इर्द-गिर्द खिंचता चला आने लगा। फिर वह खींच-खींचकर लाठी के सिरे के इर्द-गिर्द लपेटा जाने लगा। सूखी घास और रूई के फाहे, और धागे और थिगलियाँ लाठी के सिरे पर लिपटने लगीं। तभी सहसा ज़ोर की आवाज़ आई, "चीं-चीं, चीं-चीं!!!"

पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? क्या गौरैयाँ लौट आईं हैं? मैंने झट से बाहर की ओर देखा। नहीं, दोनों गौरैयाँ बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं।

"चीं-चीं, चीं-चीं!" फिर आवाज़ आई। मैंने ऊपर देखा। पंखे के गोले के ऊपर से नन्हीं-नन्हीं गौरैयाँ सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं और चीं-चीं किए जा रही थीं। अभी भी पिताजी के हाथ में लाठी थी और उस पर लिपटा घोंसले का बहुत-सा हिस्सा था। नन्हीं-नन्हीं दो गौरैयाँ! वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा, पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं। और घोंसले के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक ओर रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। इस बीच माँ कुर्सी पर से उठीं और सभी दरवाजे खोल दिए। नन्हीं चिड़ियाँ अभी भी हाँफ-हाँफकर चिल्लाए जा रही थीं और अपने माँ-बाप को बुला रही थीं।

उनके माँ-बाप झट-से उड़कर अंदर आ गए और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं-नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे। माँ-पिताजी और मैं उनकी ओर देखते रह गए। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।

—भीष्म साहनी

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

सराय	यात्रियों के लिए कुछ समय रुकने की जगह, मुसाफिर खाना	रोशनदान	कमरे के अंदर रोशनी आने के लिए बनी खिड़की
डेरा	रहने की जगह, पड़ाव	बिछावन	बिस्तर
शोर	हल्ला, कोलाहल	उबल पड़ना	गुस्साना
धमा-चौकड़ी	उछल-कूद	हुक्म	आदेश
अँगीठी	आग रखने का बरतन	अक्ल	बुद्धि
कसरत	व्यायाम	इर्द-गिर्द	आस-पास
छावनी	जहाँ सेना या पुलिस रहती हो, शिविर	थिगलियाँ	छेद बंद करने के लिए टाँका गया कपड़े का टुकड़ा, पैबंद
		निरीक्षण	जाँच

© NCERT not to be republished

1. पाठ से

(क) दोनों गौरैयों को पिताजी जब घर से बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे तो माँ क्यों मदद नहीं कर रही थी? बस, वह हँसती क्यों जा रही थी?

(ख) देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो। माँ ने पिताजी से गंभीरता से यह क्यों कहा?

(ग) "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो तो उसका घर तोड़ देना चाहिए," पिताजी ने गुस्से में ऐसा क्यों कहा? क्या पिताजी के इस कथन से माँ सहमत थी? क्या तुम सहमत हो? अगर नहीं तो क्यों?

(घ) कमरे में फिर से शोर होने पर भी पिताजी अबकी बार गौरैया की तरफ़ देखकर मुसकुराते क्यों रहे?

2. पशु-पक्षी और हम

इस कहानी के शुरू में कई पशु-पक्षियों की चर्चा की गई है। कहानी में वे ऐसे कुछ काम करते हैं जैसे मनुष्य करते हैं। उनको ढूँढ़कर तालिका पूरी करो–

(क) पक्षी – घर का पता लिखवाकर लाए हैं।

(ख) बूढ़ा चूहा –

(ग) बिल्ली –

(घ) चमगादड़ –

(ङ) चींटियाँ –

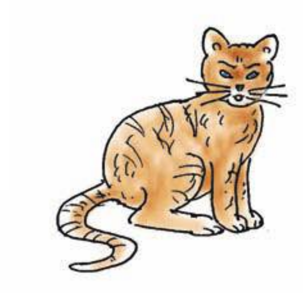

3. मल्हार

नीचे दिए गए वाक्य को पढ़ो-

"जब हम लोग नीचे उतरकर आए, तब वे फिर से मौजूद थीं और मज़े से बैठी मल्हार गा रही थीं।"

(क) अब तुम पता करो कि मल्हार क्या होता है? इस काम में तुम बड़ों की सहायता भी ले सकते हो।

(ख) बताओ कि क्या सचमुच चिड़ियाँ 'मल्हार' गा सकती हैं?

(ग) बताओ की कहानी में चिड़ियों द्वारा मल्हार गाने की बात क्यों कही गई है?

© NCERT not to be republished

4. पाठ से आगे

अलग-अलग पक्षी अलग-अलग तरह से घोंसला बनाते हैं। तुम कुछ पक्षियों के घोसलों के चित्र इकट्ठे करके उसे अपनी कॉपी पर चिपकाकर शिक्षक को दिखाओ।

5. अंदर आने के रास्ते

(क) पूरी कहानी में गौरैया, कहाँ-कहाँ से घर के अंदर घुसी थीं? सूची बनाओ।

(ख) अब अपने घर के बारे में सोचो। तुम्हारे घर में यदि गौरैया आना चाहे तो वह कहाँ-कहाँ से अंदर घुस सकती है? इसे अपने शिक्षक को बताओ।

6. कहने का अंदाज़

"माँ खिलखिलाकर हँस दीं।" इस वाक्य में 'खिलखिलाकर' शब्द बता रहा है कि माँ कैसे हँसी थीं। इसी प्रकार नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों पर भी ध्यान दो। इन शब्दों से एक-एक वाक्य बनाओ।

(क) पिताजी ने झिड़ककर कहा, "तू खड़ा क्या देख रहा है?"

(ख) "आज दरवाज़े बंद रखो," उन्होंने हुक्म दिया।

(ग) "देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो," माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा।

(घ) "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए," उन्होंने गुस्से में कहा।

तुम इनसे मिलते-जुलते कुछ और शब्द सोचो और उनका प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाओ।

संकेत-धीरे से, ज़ोर से, अटकते हुए, हकलाते हुए, फुसफुसाते हुए आदि।

© NCERT not to be republished

7. किससे-क्यों-कैसे

"पिताजी बोले, क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूँ?" ऊपर दिए गए वाक्य पर ध्यान दो और बताओ कि–

(क) पिताजी ने यह बात किससे कही?

(ख) उन्होंने यह बात क्यों कही?

(ग) गौरैयों के आने से कालीन कैसे बरबाद होता?

8. सराय

"पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है।" ऊपर के वाक्य को पढ़ो और बताओ कि–

(क) सराय और घर में क्या अंतर होता है? आपस में इस पर चर्चा करो।

(ख) पिताजी को अपना घर सराय क्यों लगता है?

9. गौरैयों की चर्चा

मान लो तुम लेखक के घर की एक गौरैया हो। अब अपने साथी गौरैया को बताओ कि तुम्हारे साथ इस घर में क्या-क्या हुआ?

10. कैसे लगे

तुम्हें इस कहानी में कौन सबसे अधिक पसंद आया? तुम्हें उसकी कौन-सी बात सबसे अधिक अच्छी लगी?

(क) माँ (ख) पिताजी (ग) लेखक (घ) गौरैया (ङ) चूहे (च) बिल्ली
(छ) कबूतर (ज) कोई अन्य/कुछ और

11. माँ की बात

नीचे माँ द्वारा कही गई कुछ बातें लिखी हुई हैं। उन्हें पढ़ो।

"अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं।"

"एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाकी दरवाज़े बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।"

"देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो। अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब ये यहाँ से नहीं जाएँगी।"

© NCERT not to be republished

अब बताओ कि–

(क) क्या माँ सचमुच चिड़ियों को घर से निकालना चाहती थीं?

(ख) माँ बार-बार क्यों कह रही थीं कि ये चिड़ियाँ नहीं जाएँगी?

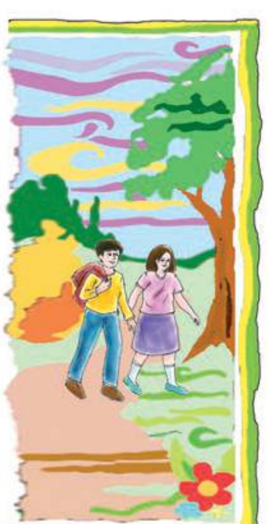

12. कहानी की चर्चा

(क) तुम्हारे विचार से इस कहानी को कौन सुना रहा है? तुम्हें यह किन बातों से पता चला?

(ख) लेखक ने यह अनुमान कैसे लगाया कि एक चूहा बूढ़ा है और उसको सर्दी लगती है?

13. शब्द की समझ

चुक - चूक

(क) अब उनकी सहनशीलता चुक गई।

(ख) उनका निशाना चूक गया।

अब तुम भी इन शब्दों को समझो और उनसे वाक्य बनाओ।

(i) सुख - सूख

(क) ....

(ख) ....

(ii) धुल - धूल

(क) ....

(ख) ....

(iii) सुना - सूना

(क) ....

(ख) ....

© NCERT
not to be republished

0848CH03

चिट्ठियों में यूरोप

22 मार्च 89
यूगोस्लाविया, नेविसाद

प्रिय नीलू, शेरू, कक्कू, पूत्रक और तुम सबकी मम्मी

तुम सबको खूब प्यार।

आज यहाँ पहुँचे एक हफ़्ता हो गया। मौसम अच्छा चल रहा है। यहाँ बसंत आ रहा है। सारे पेड़ नंगे खड़े हैं; एक अपनी विद्या जैसा पेड़ है जो हरा है, एक और जो नए साल पर घर-घर लगाया जाता है। फिर भी फूल आ रहे हैं। एक नीले और बैंगनी रंग का फूल है जो अपने यहाँ की सफ़ेद कुमुदनी जैसे होते हैं। कुछ लाल, कुछ पीले। खुशबू नहीं होती। आज इतवार है—सो एक बजे खाना खाकर आए और लिखने बैठ गए। आज हमने जो खाना खाया वह योगर्ट से शुरू हुआ—जैसा आइसक्रीम कप होता है वैसा बड़े कप में। रोज सूप होता है। उसमें सफेद सेम जैसी—यहाँ की बीन लंबी और पतली होती है—बरबटी जैसी। फिर आइसक्रीम। यही तीन कोर्स रोज सुबह शाम होते हैं। खाते खाते उकताहट हो रही है। कभी-कभी चावल होता है— स्ट्यू यानी करी के साथ खाने के लिए। एक दिन खरे सिके चिल्ले जैसी एक मिठाई आई उसमें खट्टी बेरी का गूदा भरा था। सेवइयाँ पानी में उबली-सूप में रहती हैं। और ब्रेड। सुबह ब्रेड बटर, मार्मलेड (जेली) या शहद। 30 ग्राम की छोटी-छोटी प्लास्टिक डिबियों में।

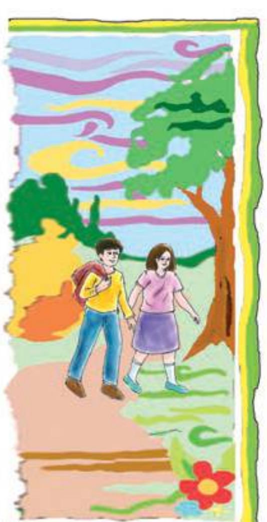

शहर के बीच 'दूना' (Danube) नदी बहती है। यह यूरोप के कई देशों में बहती है। नक्शे में देखोगे तो मिल जाएगी, 'नेविसाद' (NOVISAD)

© NCERT not to be republished

शहर भी मिल जाएगा। हमने तुम लोगों के लिए इटली के सिक्के, यहाँ के सिक्के, एक सिक्का इण्डोनेशिया का – मॉरिशस की कुछ टिकटें इकट्ठे किए हैं। चीज़ें यहाँ बहुत महंगी हैं – लोग कहते हैं मत खरीदो! रोज़ बाज़ार से गुजरते हैं तो तुम लोगों की याद आती है बच्चों को देखकर।

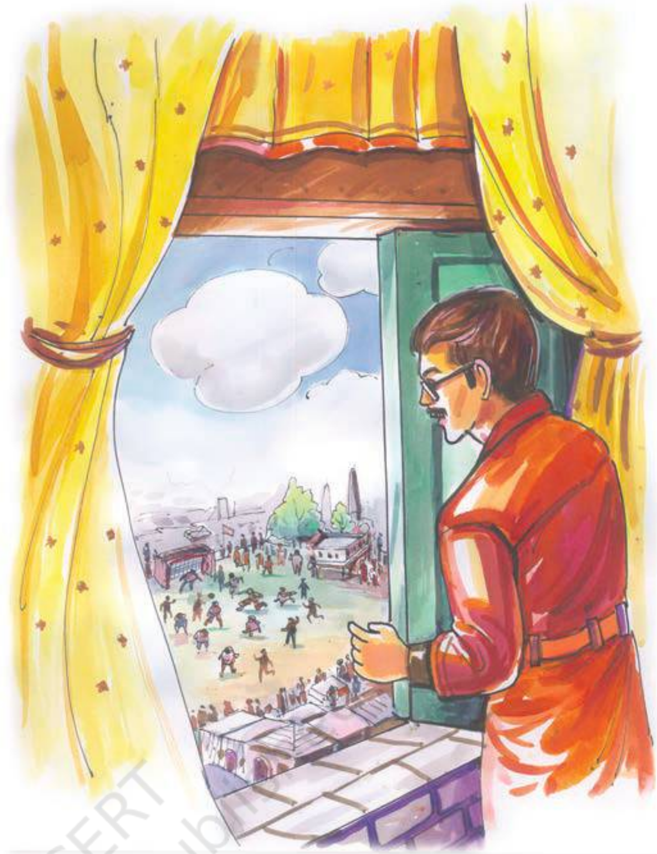

जो नदी है उसमें बड़े-बड़े यात्री जहाज चलते हैं। इस देश के भी और हंगरी के भी। कल हमने देखे। यहाँ फुटबॉल बहुत खेलते हैं। 14 से 20 अप्रैल तक यहाँ विश्व टेबल टेनिस चैम्पियनशिप होने वाली है। एकाध रोज़ देखेंगे। बाज़ार में 20-20 मंजिल, 10-10 मंजिल की बिल्डिंगें हैं। यहाँ इस शहर में हज़ारों वर्षों पहले आए भारतीयों की संतानें हैं – यूरोपीय मालूम होते हैं। यहीं की वेशभूषा, भाषा। लड़के स्केटिंग के बहुत शौकीन हैं। हमारे कमरे की खिड़की से खेल के मैदान दिखते हैं। इस समय एक मैदान में फुटबॉल मैच हो रहा है। एक टीम की वर्दी सफ़ेद है दूसरे की लाल। मैदान यहाँ से लगभग आधा फर्लांग दूर है पर हमारा कमरा पाँचवीं मंजिल पर है- इसलिए साफ दिखता है। कमरे की खिड़की कमरे के बराबर ऊँची और चौड़ी है। अब हम लोग 22 हो गए हैं – 17 देश। माल्टा, मारीशस, मेक्सिको, बोलीविया, नाइजीरिया, माली, अंगोला, बंगलादेश, अफगानिस्तान, इजिप्ट, जॉर्डन, इण्डोनेशिया, भारत, चीन, कोरिया, थाइलैंड। नेपाल का एक लड़का दुभाषिया है टंक प्रसाद ढकाल। कल हम लोग शहर से बाहर एक पॉल्ट्री फार्म देखने जाएँगे – यूनिवर्सिटी की बस से।

कल दोपहर हमने शादी पार्टी के बाद घर जा रही एक दुल्हन भी देखी, अपनी खिड़की से। सफ़ेद कपड़े पहने थी, नीचे से ऊपर तक। सर पर सफ़ेद टोपी जैसी दिख रही थी। पचासेक लोग थे। आगे के हाल बाद की चिट्ठी में लिखेंगे। तुम लोग गौतम से एरोग्राम मँगा कर हमको चिट्ठी लिखना। तुम सबको प्यार। अच्छे से रहना ताकि माँ को तकलीफ़ न हो।

तुम्हारा पापा

–सोमदत्त

2020-21

अभ्यास

शब्दार्थ

हफ़्ता	–	सप्ताह
उकताहट	–	बेचैनी, अधीरता
दुभाषिया	–	दो भाषाएँ जाननेवाला मध्यस्थ जो उन भाषाओं के बोलनेवाले दो व्यक्तियों की वार्ता के अवसर पर एक को दूसरे का अभिप्राय समझाए
विद्या जैसा पेड़	–	पत्र लेखक का संकेत मोरपंखी की ओर है।
योगर्ट	–	दही जैसा खाने का एक पदार्थ
बरबटी	–	एक पतली लंबी फली
खरा सिका	–	खूब अच्छी तरह सिका हुआ, करारा
चिल्ला	–	खाने की चीज़
पचासेक	–	लगभग पचास (संख्या)
फर्लांग	–	दूरी का एक माप
एरोग्राम	–	विदेश भेजे जाने वाली चिट्ठी

© NCERT not to be republished

1. पत्र के आधार पर

इस पत्र के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो –

(क) इस पत्र का लेखक किस शहर/देश की यात्रा पर गया था?

(ख) उस देश में कौन-कौन से खेल-खेले जाते हैं? वहाँ कौन-सा खेल सबसे अधिक लोकप्रिय है?

(ग) उस देश के कुछ खाद्य पदार्थों के नाम बताओ।

(घ) लेखक ने यह क्यों कहा कि "अच्छे से रहना ताकि माँ को तकलीफ़ न हो?"

2. पत्र से आगे

(क) भारतीय खाने की कुछ चीज़ें जैसे-चावल, सेवइयाँ, मिठाइयाँ यूरोप में अलग ढंग से खाई जाती हैं। क्या भारत में ये चीज़ें अलग-अलग ढंग/तरीकों से बनाई और खाई जाती हैं? पता करो और बताओ।

(ख) दूना नदी यूरोप के कई देशों में बहती है। भारत में भी अनेक ऐसी नदियाँ हैं जो कई राज्यों के बीच बहती हैं। ऐसी कुछ नदियों के नाम लिखो। यह भी पता करो कि वे कौन-कौन से राज्यों में से होकर बहती हैं।

नदी का नाम	राज्यों के नाम
....	....
....	....
....	....

3. मौसम और ऋतुएँ

पत्र में लिखा गया है कि "मौसम अच्छा चल रहा है। यहाँ बसंत आ रहा है।"

भारत के अलग-अलग भागों में भी अलग-अलग तरह का मौसम रहता है। साल भर अलग-अलग ऋतुएँ अपना प्रभाव दिखाती हैं। अब तुम बताओ कि तुम्हारे प्रदेश में साल भर मौसम कैसा रहता है?

4. खान-पान

(क) अपने प्रदेश की कुछ खाने-पीने की चीज़ों के नाम बताओ।

(ख) अपने मनपसंद व्यंजन को बनाने का तरीका पता करो और लिखो।

सामग्री –

विधि –

© NCERT not to be republished

5. इकट्ठा करने का शौक

इसी पुस्तक के किसी पाठ में है कि कुछ लोगों को कोई खास वस्तु इकट्ठा करने का शौक होता है। कुछ लोग गुड़िया, पुस्तकें, चित्र तो कुछ लोग डाक-टिकट इकट्ठे करते हैं।

(i) यदि तुम्हें भी कोई चीज़ इकट्ठा करने का शौक है तो उसके बारे में अपने साथियों को बताओ।

(ii) अपने या अपने किसी परिचित के बारे में लिखो जो इस तरह की चीज़ें इकट्ठा करता हो। तुम इन चीज़ों के बारे में लिख सकते हो–

(क) उन्हें कौन-सी चीज़ इकट्ठा करने का शौक है?

(ख) वे इन्हें कहाँ-कहाँ से इकट्ठा करते हैं?

(ग) उनके इस शौक की शुरुआत कैसे हुई?

(घ) वे इकट्ठी की गई चीज़ों को कैसे सँभालकर रखते हैं?

(ङ) इन चीज़ों को इकट्ठा करने और रखने में कौन-कौन सी समस्याएँ होती हैं?

6. पेड़-पौधों के नाम

इस पत्र में लेखक ने अलग-अलग तरह के पेड़-पौधों का ज़िक्र किया है। पता लगाओ, वे कौन से पेड़-पौधे हो सकते हैं। इस काम के लिए तुम अपने अध्यापकों, अपने साथियों, पुस्तकालय या अन्य साधनों की भी सहायता ले सकते हो।

संकेत	नाम
(क) जिसे नए साल पर लगाते/सजाते हैं	....
(ख) सफ़ेद कुमुदनी जैसा नीला-बैंगनी फूल	....
(ग) लाल और पीले फूल वाले पौधे	गुलाब, सूरजमुखी, कनेर

© NCERT not to be republished

7. मानचित्र में

इस पत्र में अनेक देशों, शहरों और नदियों का ज़िक्र किया गया है। नीचे दिए गए मानचित्र में उन स्थानों के नाम भरो-

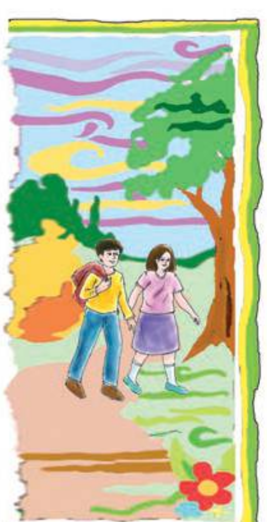

8. पत्रों के माध्यम

(क) "तुम लोग गौतम से एरोग्राम मँगाकर हमको चिट्ठी लिखना।"

ऊपर के वाक्य पर ध्यान दो और किसी डाकघर में जाकर पता करो कि 'एरोग्राम' किसे कहते हैं। साथ ही यह भी पता करो कि पत्र भेजने के लिए वहाँ कौन-कौन से साधन उपलब्ध हैं?

(ख) आधुनिक तकनीक द्वारा भेजे जाने वाले पत्रों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करो। जैसे-ई-मेल, फैक्स आदि।

9. पत्रों का संकलन

पत्र अपने समय के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की बातों/विचारों का दस्तावेज़ होता है। इसलिए महत्त्वपूर्ण पत्रों का संकलन भी किया जाता है और समय-समय पर उससे लाभ भी उठाया जाता है। तुम्हें पता होगा कि भारत की आज़ादी के लिए क्रांतिकारी आंदोलन भी चला था जिसमें **सरदार भगत सिंह** भी शामिल थे। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान उनके द्वारा अपने मित्रों को लिखे गए एक पत्र को आगे दिया गया है। तुम इसे पढ़ो।

साथियो,

ज़िंदा रहने की ख्वाहिश कुदरती तौर पर मुझमें भी होनी चाहिए। मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। लेकिन मेरा ज़िंदा रहना मशरूत(सशर्त) है। मैं बंदी बनकर या पाबंद होकर ज़िंदा रहना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदुस्तानी इंकलाब पार्टी का निशान बन चुका है और इंकलाब-पसंद पार्टी के आदर्शों और बलिदानों ने मुझे बहुत ऊँचा कर दिया है। इतना ऊँचा कि ज़िंदा रहने की सूरत में इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमज़ोरियाँ लोगों के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे ज़ाहिर हो जाएँगी और इंकलाब का निशान मद्धिम पड़ जाएगा या शायद मिट ही जाए। लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते फाँसी पाने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए बलिदान होने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि इंकलाब को रोकना साम्राज्यवाद की संपूर्ण शैतानी शक्तियों के बस की बात न रहेगी।

हाँ, एक विचार आज भी कचोटता है। देश और इंसानियत के लिए जो कुछ हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हज़ारवाँ हिस्सा भी मैं पूरा नहीं कर पाया। अगर ज़िंदा रह सकता तो शायद इनको पूरा करने का मौका मिल जाता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता।

इसके सिवा कोई लालच मेरे दिल में फाँसी से बचा रहने के लिए कभी नहीं आया। मुझसे ज़्यादा खुशकिस्मत और कौन होगा? मुझे आजकल अपने आप पर बहुत नाज़ है। अब तो बड़ी बेताबी से आखिरी इंतिहां का इंतज़ार है। आरज़ू है कि यह और करीब हो जाए।

आपका साथी

Bhagat Singh

भगत सिंह

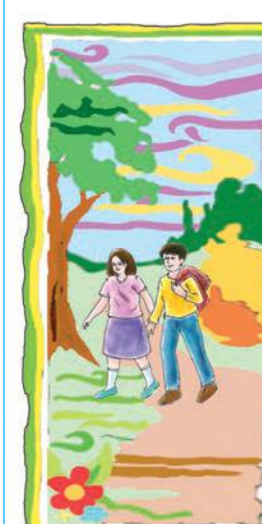

अब तुम बताओ कि

1. तुम्हें इस पत्र द्वारा आज़ादी से पहले किसके बारे में और क्या जानकारी मिली।
2. तुमने देखा कि पत्रों द्वारा तुम्हें देश-विदेश की ही नहीं बल्कि किसी भी समय, किसी भी महत्त्वपूर्ण बात की जानकारी मिल सकती है। तुम अपनी पसंद के विभिन्न समय, समाज और महत्त्वपूर्ण संदर्भों से जुड़े कुछ पत्रों का एक संकलन तैयार करो तथा उस पर अपने साथियों के साथ बातचीत भी करो।

© not to be republished

0848CH04

चौथा पाठ

ओस

हरी घास पर बिखेर दी हैं
ये किसने मोती की लड़ियाँ?
कौन रात में गूँथ गया है
ये उज्ज्वल हीरों की कड़ियाँ?

जुगनू से जगमग जगमग ये
कौन चमकते हैं यों चमचम?
नभ के नन्हें तारों से ये
कौन दमकते हैं यों दमदम?

लुटा गया है कौन जौहरी
अपने घर का भरा खज़ाना?
पत्तों पर, फूलों पर, पग पग
बिखरे हुए रतन हैं नाना।

बड़े सबेरे मना रहा है
कौन खुशी में यह दीवाली?
वन उपवन में जला दी है
किसने दीपावली निराली?

जी होता, इन ओस कणों को
अंजलि में भर घर ले आऊँ?
इनकी शोभा निरख निरख कर
इन पर कविता एक बनाऊँ।

– सोहनलाल द्विवेदी

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

गूँथना	– पिरोना	रतन	– रत्न
उज्ज्वल	– चमकता हुआ, उजला	नाना	– अनेक
जुगनू	– एक कीड़ा (रात में उड़ने पर इसकी दुम से रोशनी निकलती है)	निराली	– सुंदर, मनोहर
		अंजलि	– दोनों हथेलियों को मिलाने से बनने वाली मुद्रा
नभ	– आकाश, आसमान		
जौहरी	– रत्नों की जाँच-परख करने वाला	जी	– मन
		शोभा	– सौंदर्य
खज़ाना	– रुपया, सोना-चाँदी रखने का स्थान, कोश, धनागार	निरख-निरख	– देख-देखकर
		बहुमूल्य	– कीमती, मूल्यवान

© NCERT not to be republished

1. कविता से

(क) कविता में रतन किसे कहा गया है और वे कहाँ-कहाँ बिखरे हुए हैं?

(ख) ओस कणों को देखकर कवि का मन क्या करना चाहता है?

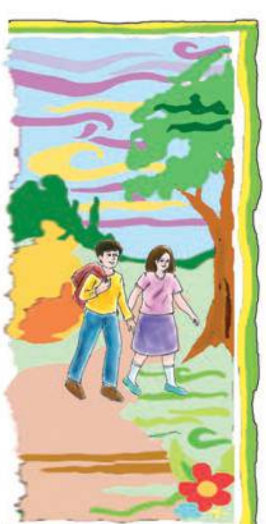

2. कविता से आगे

(क) पता करो कि सुबह के समय खुले स्थानों पर ओस की बूँदें कैसे बन जाती हैं? इसे अपने शिक्षक को बताओ।

(ख) क्या ओस, कोहरा और वर्षा में कोई संबंध है? इसके बनने और होने के कारणों का पता लगाओ और उसे अपने ढंग से लिखकर शिक्षक को दिखाओ।

(ग) सूरज निकलने के कुछ समय बाद ओस कहाँ चली जाती है? इसका उत्तर तुम अपने मित्रों, बड़ों, पुस्तकों और इंटरनेट की सहायता से प्राप्त करो और शिक्षक को बताओ।

3. तुम्हारी कल्पना

"इनकी शोभा निरख-निरख कर,
इन पर कविता एक बनाऊँ।"

कवि ओस की सुंदरता पर एक कविता बनाना चाहता है। यदि तुम कवि के स्थान पर होते, तो कौन-सी कविता बनाते? अपने मनपसंद विषय पर कोई कविता बनाओ।

4. मौसम की बात

(क) तुम्हारे विचार से यह किस मौसम की कविता हो सकती है?

(ख) तुम्हारे प्रदेश में कौन-कौन से मौसम आते हैं? उसकी सूची बनाओ।

(ग) तुम्हें कौन सा मौसम सबसे अधिक पसंद है और क्यों?

5. अंजलि में

"जी होता इन ओस कणों को
अंजलि में भर घर ले आऊँ"

कवि ओस को अपनी अंजलि में भरना चाहता है। तुम नीचे दी गई चीज़ों में से किन चीज़ों को अपनी अंजलि में भर सकते हो? सही (✓) का चिह्न लगाओ–

रेत	**ओस**	**धुआँ**	**हवा**	**पानी**	**तेल**	**लड्डू**	**गेंद**

© NCERT not to be republished

6. उलट-फेर

"हरी घास पर बिखेर दी हैं
ये किसने मोती की लड़ियाँ?"

ऊपर की पंक्तियों को उलट-फेर कर इस तरह भी लिखा जा सकता है–
"हरी घास पर ये मोती की लड़ियाँ किसने बिखेर दी हैं?"
इसी तरह नीचे लिखी पंक्तियों में उलट-फेर कर तुम भी उसे अपने ढंग से लिखो।

(क) "कौन रात में गूँथ गया है
ये उज्ज्वल हीरों की कड़ियाँ?"

(ख) "नभ के नन्हें तारों में ये
कौन दमकते हैं यों दमदम?"

7. शब्दों की पहेली

"ये उज्ज्वल हीरों की कड़ियाँ"

ऊपर की पंक्ति में उज्ज्वल शब्द में 'ज' वर्ण दो बार आया है परंतु यह आधा (ज्) है। तुम भी इसी तरह के कुछ और शब्द खोज़ो। ध्यान रहे, उस शब्द में कोई एक वर्ण (अक्षर) दो बार आया हो, मगर आधा-आधा। इस काम में तुम शब्दकोश की सहायता ले सकते हो। देखें, कौन सबसे अधिक शब्द खोज़ पाता है।

8. कौन ऐसा

नीचे लिखी चीज़ों जैसी कुछ और चीज़ों के नाम सोचकर लिखो–

(क) जुगनू जैसे चमकीले ....

(ख) तारों जैसे झिलमिल ....

(ग) हीरों जैसे दमकते ....

(घ) फूलों जैसे सुंदर ....

9. बूझो मतलब

"जी होता, इन ओस कणों को
अंजलि में भर घर ले आऊँ"

'घर' शब्द का प्रयोग हम कई तरह से कर सकते हैं। जैसे–

(क) वह <u>घर</u> गया। ....

(ख) यह बात मेरे मन में <u>घर कर</u> गई। ....

(ग) यह तो <u>घर-घर</u> की बात है। ....

(घ) आओ, <u>घर-घर</u> खेलें। ....

'बस' शब्द का प्रयोग कई तरह से किया जा सकता है। तुम 'बस' शब्द का प्रयोग करते हुए अपने मन से कुछ वाक्य बनाओ।
(संकेत–बस, बस-बस, बस इतना सा)

© NCERT not to be republished

10. रूप बदलकर

चमक–चमकना–चमकाना–चमकवाना

'चमक' शब्द के कुछ रूप ऊपर लिखे हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों का रूप बदलकर सही जगह पर भरो–

दमक, सरक, बिखर, बन

(क) ज़रा सा रगड़ते ही हीरे ने .... शुरू कर दिया।

(ख) तुम यह कमीज़ किस दर्ज़ी से .... चाहते हो?

(ग) साँप ने धीरे-धीरे .... शुरू कर दिया।

(घ) लकी को मूर्ख .... तो बहुत आसान है।

(ङ) तुमने अब खिलौने .... बंद कर दिए?

© NCERT not to be republished

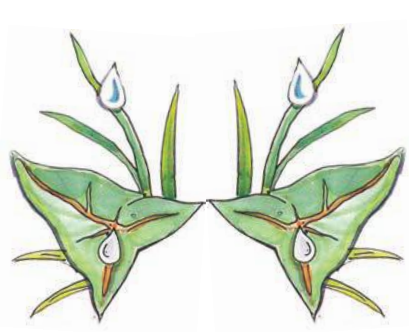

पाँचवाँ पाठ

नाटक में नाटक

राकेश का मन तो कह रहा था कि बिना पूरी तैयारी के नाटक नहीं खेलना चाहिए और जब नाटक में अभिनय करने वाले कलाकार भी नए हों, मंच पर आकर डर जाते हों, घबरा जाते हों और कुछ-कुछ बुद्धू भी हों, तब तो अधूरी तैयारी से खेलना ही नहीं चाहिए। उसके साथी मोहन, सोहन और श्याम ऐसे ही थे। राकेश को उनके अभिनय पर बिलकुल भी विश्वास नहीं था। वह स्वयं अभिनय इसलिए नहीं कर रहा था कि फुटबाल खेलते हुए वह अचानक गिर पड़ा था और उसके हाथ में चोट लग गई थी और हाथ को एक पट्टी में लपेटकर गर्दन के सहारे लटकाए रखना पड़ता था।

नाटक खेलना बहुत आवश्यक था। मोहल्ले की इज़्ज़त का सवाल था। मोहल्ले के बच्चों ने मिल-जुलकर फालतू पड़े एक छोटे से सार्वजनिक मैदान में दूब व फूल-पौधे लगाए थे। वहीं एक मंच भी बना लिया था। राकेश की योग्यता पर सबको बहुत विश्वास भी था।

समय था केवल एक सप्ताह का। सात दिन ऐसे निकल गए कि पता भी नहीं लगा। मोहन, सोहन और श्याम यूँ तो अच्छी तरह अभिनय करने लगे थे, पर राकेश को उनके बुद्धूपन से डर था। हर एक अपने को दूसरे से अधिक समझदार मानता था। इसलिए यह भूल जाता था कि वह कहाँ क्या कर रहा है बस कहने से मतलब! दूसरे चाहे उनकी मूर्खतापूर्ण बातों पर हँस रहे हों, मगर वे पागलों की तरह आपस में ही उलझने लगते थे।

राकेश ने पूर्वाभ्यास के सात दिनों में उन्हें बहुत अच्छी तरह समझाया था। निर्देशन उसने इतना अच्छा दिया था कि छोटी-से-छोटी और साधारण से साधारण बात भी समझ में आ जाए।

खैर प्रदर्शन का दिन और समय भी आ गया। राकेश साज-सज्जा कक्ष में खड़ा सबको खास-खास हिदायतें फिर से दे रहा था।

मोहन बोला, "मेरा तो दिल बहुत ज़ोरों से धड़क रहा है।"

© NCERT not to be republished

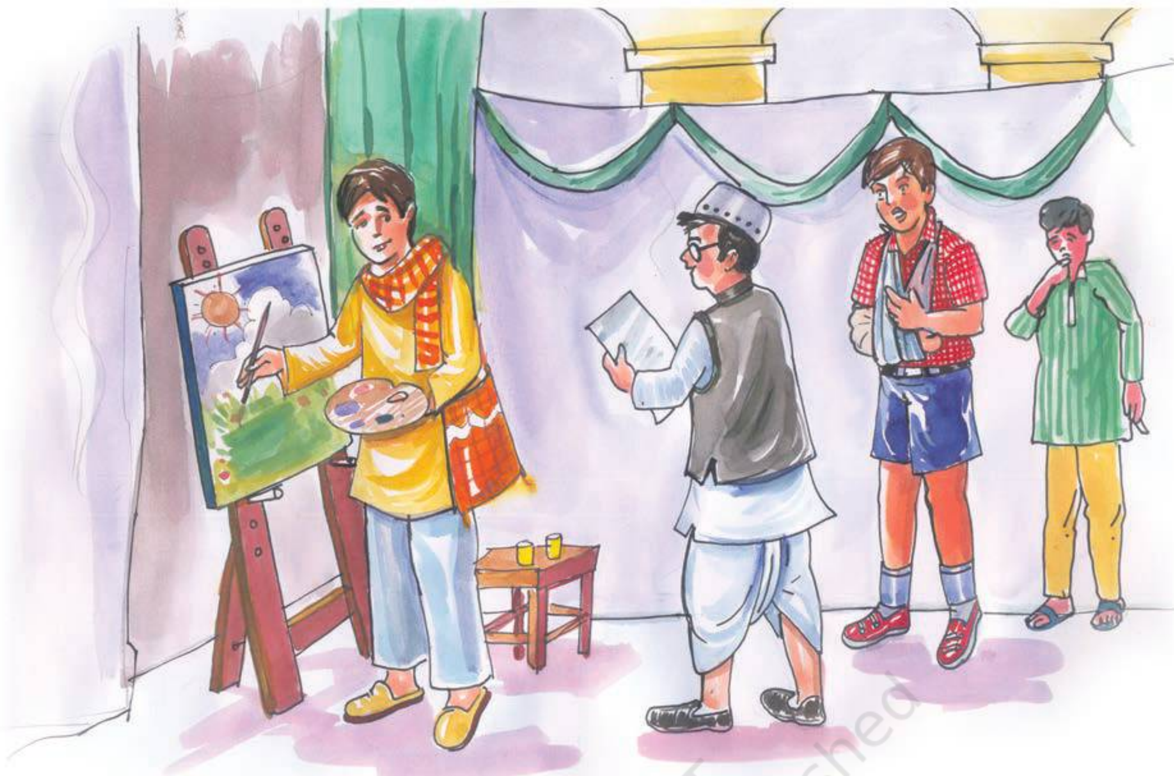

"मेरा भी", सोहन ने सीने पर हाथ रखकर कहा।

"तुम लोग पानी पियो और मन को साहसी बनाओ।" राकेश ने फिर हिम्मत बढ़ाई।

जैसे-तैसे अभी तक तो ठीक-ठाक हो गया। अभिनेता मंच पर आ गए। पर्दा उठा।

मोहन बना था चित्रकार। और सोहन बना था उर्दू का शायर। नाटक में दोनों दोस्त होते हैं। चित्रकार कहता है उसकी कला महान, शायर कहता है उसकी कला महान! श्याम बनता है संगीतकार! वह उनसे मुलाकात करने उनके उस स्थान पर आता है, जहाँ वे यह बहस कर रहे हैं। बजाय इसके कि वह नए-नए मित्रों से मधुर बातें करे, बड़े-छोटे के इस विवाद में उलझ जाता है। वह कहता है संगीतकार की कला महान!

अभी तक अभिनय अच्छी तरह चल रहा था। सबको अपना-अपना पार्ट याद आ रहा था। सब ठीक-ठीक अभिनय करते चले जा रहे थे। अचानक श्याम पार्ट भूल गया!

पर्दे की आड़ में राकेश स्वयं पूरा नाटक लिए खड़ा था। वह हर एक संवाद का पहला शब्द बोल रहा था, ताकि कलाकारों को संवाद याद आते रहें।

मगर श्याम घबरा गया। वह सहसा चुप हो गया। उसके चुप होने से चित्रकार और शायर महोदय भी चुप हो गए। होना यह चाहिए था कि दोनों कोई बात मन की ही बनाकर बात आगे बढ़ा

© NCERT not to be republished

देते। पर वे घबराकर राकेश की तरफ़ देखने लगे। संगीतकार महोदय भी पलटकर राकेश की ओर देखने लगे।

राकेश बार-बार संगीतकार जी का संवाद बोल रहा था मगर आवाज तेज होकर 'माइक' से सबको न सुनाई दे जाए, इसलिए धीरे-धीरे फुसफुसाकर बोल रहा था, संगीतकार जी को वह हल्की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

तभी शायर साहब संगीतकार के कंधे पर हाथ मारकर बोले "उधर जाकर सुन ले न।" संगीतकार अपना वायलिन पकड़े-पकड़े राकेश की ओर खिसक आए!

दर्शक ठठाकर हँस पड़े। संगीतकार जी और घबरा गए। जो कुछ सुनाई पड़ा उसे ही बिना समझे-बूझे झट से बोलने लगे।

संवाद था – 'जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है, तो पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते हैं, शायर साहब! आप क्या समझते हैं संगीत को?

मगर संगीतकार साहब बोल गए यों – "जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुँह की खा जाते हैं, गाजर साहब! आप क्या समझते हैं हमें?"

शायर साहब तपाक से बोले, "तुम्हारा सर! गाजर साहब हूँ मैं?"

दर्शक फिर ठठाकर हँस पड़े।

चित्रकार महोदय ने मंच पर सूझ और अक्लमंदी दिखाने की कोशिश की – "इनका मतलब है आपकी शायरी गाजर-मूली है और आप गाजर साहब हैं। सो इनकी कला महान है। मगर मेरी कला इनसे भी महान है।"

© NCERT not to be republished

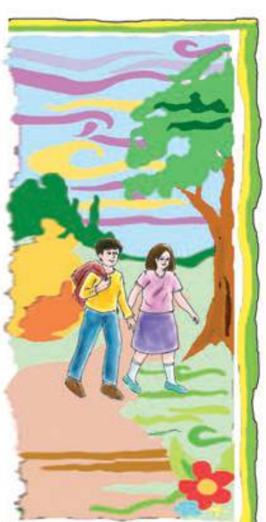

राकेश दाँत पीस रहा था। उसकी सारी मेहनत पर पानी पड़ गया था। पर इस तरह बात सँभलते देखकर कुछ शांत हुआ।

इस बार शायर साहब बुद्धूपना दिखा बैठे। गुस्सा होकर बोले, "तूने भी गलत बोल दिया। मुझे गाजर साहब कहने की बात थी क्या? और मेरी शायरी गाजर-मूली है, तो तेरी चित्रकला झाड़ू फेरना है, पोतना है, झख मारना है।"

चित्रकार महोदय ने हाथ उठाकर कहा,"देख, मुँह सँभालकर बोल!"

दर्शक फिर बड़े ज़ोर से हँस पड़े।

राकेश घबरा रहा था। गुस्सा भी आ रहा था उसे और रोना भी। सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गई।

2020-21

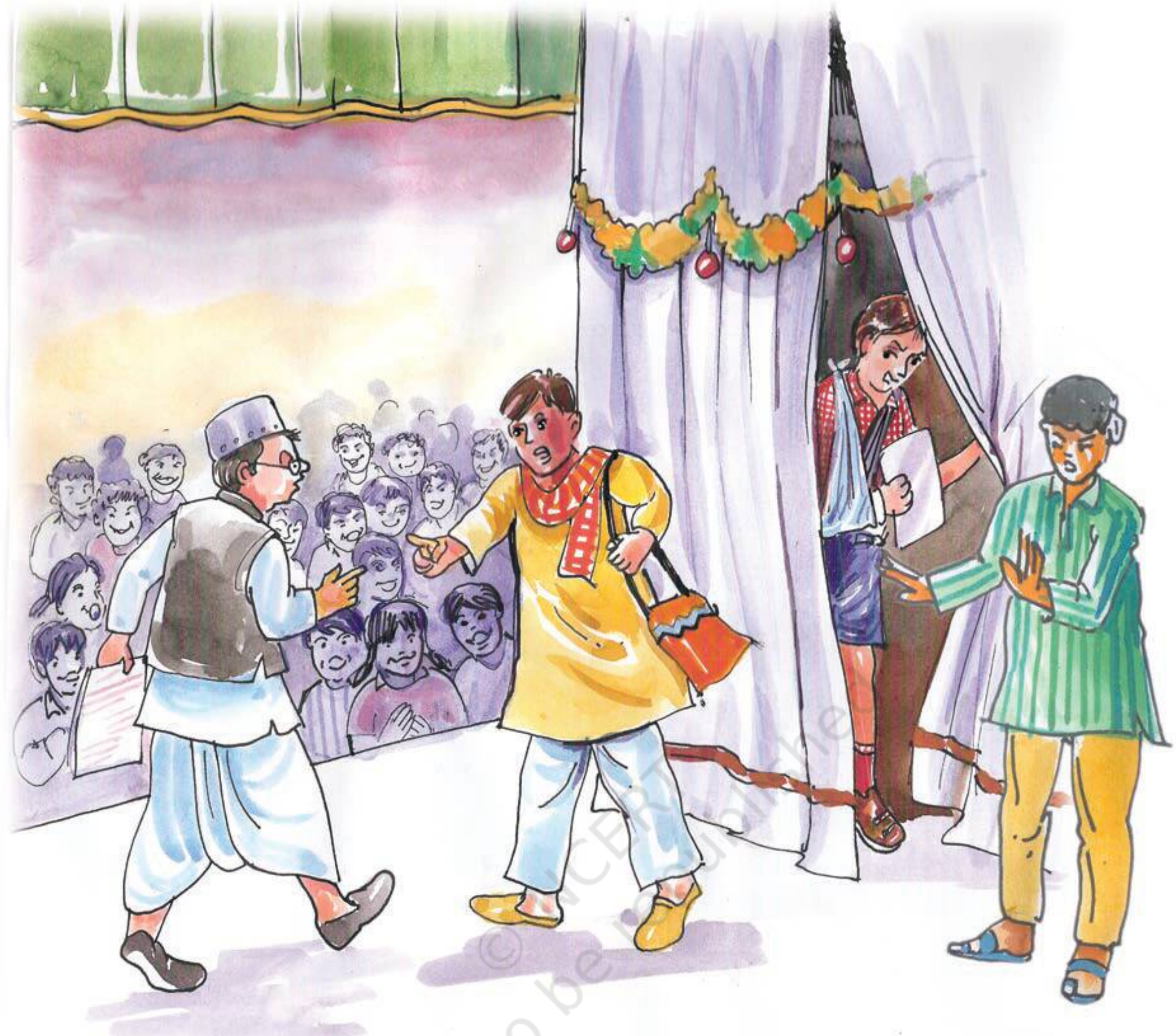

पर अब क्या हो? वह बार-बार दोनों हथेलियों को मसल रहा था और कोई तरकीब सोच रहा था।

इधर मंच पर तीनों में ज़ोरों से तू-तू मैं-मैं हो रही थी। चित्रकार महोदय हाथ में कूची पकड़े, आँखें नचा-नचाकर, मटक-मटककर बोल रहे थे-

"अरे चमगादड़ तुझे क्या खाक शायरी करना आता है! ज़बरदस्ती ही तुझे यह पार्ट दे दिया। तूने सारा गड़बड़ कर दिया।"

"मुझे चमगादड़ कहता है? अरे आलूबुखारे, शायरी तो मेरी बातों से टपकती है। तूने कभी 'टूथ-ब्रुश' के अलावा कोई ब्रुश उठाया भी है? यहाँ चित्रकार बना दिया तो सचमुच ही अपने को चित्रकार समझ बैठा।"

दर्शक हँसी से लोटपोट हुए जा रहे थे। संगीतकार महोदय कभी उन दोनों लड़ते कलाकरों की ओर हाथ नचाते, कभी दर्शकों की ओर।

2020-21

तभी तेज़ी से राकेश मंच पर पहुँच गया। सब चुप हो गए, सकपका गए। राकेश पहुँचते ही एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला – "आज मुझे अस्पताल में हाथ पर पट्टी बँधवाने में देर हो गई, तो तुमने इस तरह 'रिहर्सल' की है! ज़ोर-ज़ोर से लड़ने लगे। अभिनय का दिन बिलकुल पास आ गया है और हमारी तैयारी का यह हाल है।"

चित्रकार महोदय ने इस समय अक्लमंदी दिखाई बोले, "हम क्या करें, डायरेक्टर साहब? पहले इसी ने गलती की।"

राकेश बात काटकर बोला, "अरे तो मैंने कह नहीं दिया था कि रिहर्सल में भी यह मानकर चलो कि दर्शक सामने ही बैठे हैं। अगर गलती हो गई थी, तो वहीं से दुबारा रिहर्सल शुरू कर देते। यह क्या कि लड़ने लगे। सब गड़बड़ करते हो।"

बात राकेश ने बहुत सँभाल ली थी। पर्दे की आड़ में खड़े अन्य साथी मन ही मन राकेश की

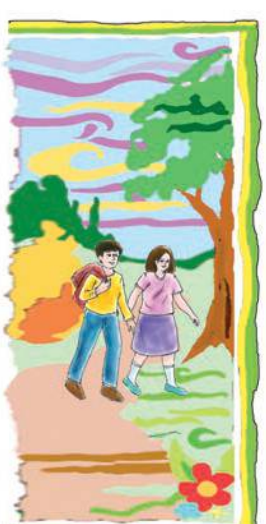

© NCERT not to be republished

तुरतबुद्धि की प्रशंसा कर रहे थे। दर्शक सब शांत थे, भौचक्के थे। वे सोच रहे थे यह क्या हो गया! वे तो समझ रहे थे कि नाटक बिगड़ गया, मगर यहाँ तो नाटक में ही नाटक था। उसकी रिहर्सल ही नाटक था। मानो इस नाटक में नाटक की तैयारी की कठिनाइयों और कमज़ोरियों को ही दिखाया गया था!

राकेश कह रहा था, "देखिए, हमारे नाटक का नाम है "बड़ा कलाकार" और बड़ा कलाकार वह है, जो दूसरे की त्रुटियों को नहीं अपनी त्रुटियों को देखे और सुधारे। आइए, अब हम फिर से 'रिहर्सल' शुरू करते हैं।"

तभी राकेश के इशारे पर पर्दा गिर गया। दर्शक नाटक की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने घर चले गए।

–मंगल सक्सेना

अभ्यास

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ

निर्देशन	– संवाद बोलने और अभिनय आदि का तरीका बताना	अक्लमंदी	– होशियारी, बुद्धिमानी
प्रदर्शन	– दिखलाना	दाँत पीसना	– गुस्सा करना
हिदायत	– सावधानी बरतने हेतु निर्देश	पोतना	– रंगना
बजाय	– अलावा	मुँह सँभाल कर बोलना	– सोच-समझकर बोलना
पार्ट	– भूमिका	इज़्ज़त मिट्टी में मिलना	– इज़्ज़त बरबाद होना
आड़	– ओट	तरकीब	– उपाय
सहसा	– अचानक	तू-तू, मैं-मैं होना	– कहासुनी होना
नाहक	– बिना मतलब का	भूरि-भूरि	– बेहद, बहुत ज़्यादा
फुसफुसाकर	– धीरे से बोलना		
सूझ	– समझ		

1. पाठ से

(क) बच्चों ने मंच की व्यवस्था किस प्रकार की?

(ख) पर्दे की आड़ में खड़े अन्य साथी मन-ही-मन राकेश की तुरतबुद्धि की प्रशंसा क्यों कर रहे थे?

(ग) नाटक के लिए रिहर्सल की ज़रूरत क्यों होती है?

2. नाटक की बात

"जब नाटक में अभिनय करने वाले कलाकार भी नए हों, मंच पर आकर डर जाते हों, घबरा जाते हों और कुछ-कुछ बुद्धू भी हों, तब तो अधूरी तैयारी से खेलना ही नहीं चाहिए।"

(क) ऊपर के वाक्य में नाटक से जुड़े कई शब्द आए हैं; जैसे–अभिनय, कलाकार और मंच आदि। तुम पूरी कहानी को पढ़कर ऐसे ही और शब्दों की सूची बनाओ। तुम इस सूची की तालिका इस प्रकार बना सकते हो–

व्यक्तियों या वस्तुओं के नाम	**काम**
कलाकार, मंच	अभिनय

© NCERT not to be republished

3. शायर और शायरी

"सोहन बना था शायर।"

तुम किसी गज़ल को किसी पुस्तक में पढ़ सकते हो या किसी व्यक्ति द्वारा गाते हुए सुन सकते हो। इसमें से तुम्हें जो भी पसंद हो उसे इकट्ठा करो। उसे तुम समुचित अवसर पर आवश्यकतानुसार गा भी सकते हो।

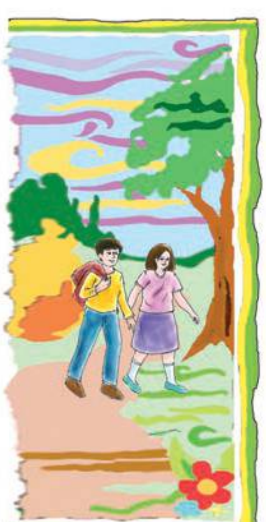

4. तुम्हारे संवाद

"श्याम घबरा गया। वह सहसा चुप हो गया। उसके चुप होने से चित्रकार और शायर महोदय भी चुप हो गए। होना यह चाहिए था कि दोनों कोई बात मन की ही बनाकर बात आगे बढ़ा देते।"

अगर तुम श्याम की जगह पर होते, तो अपने मन से कौन से संवाद जोड़ते। लिखो।

5. सोचो, ऐसा क्यों?

नीचे लिखे वाक्य पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दो।

"राकेश को गुस्सा भी आ रहा था और रोना भी।"

(क) तुम्हारे विचार से राकेश को गुस्सा और रोना क्यों आ रहा होगा?

"राकेश मंच पर पहुँच गया। सब चुप हो गए, सकपका गए।"

(ख) तुम्हारे विचार से राकेश जब मंच पर पहुँचा, बाकी सब कलाकार क्यों चुप हो गए होंगे?

"दर्शक सब शांत थे, भौंचक्के थे।"

(ग) दर्शक भौंचक्के क्यों हो गए थे?

"मैंने कहा था न कि रिहर्सल में भी यह मानकर चलो कि दर्शक सामने ही बैठे हैं।"

(घ) राकेश ने ऐसा क्यों कहा होगा?

6. चलो अभिनय करें

कहानी में से चुनकर कुछ संवाद नीचे दिए गए हैं। उन संवादों को अभिनय के साथ बोलकर दिखाओ।

(क) चित्रकार महोदय हाथ में कूची पकड़े–आँखें नचा–नचाकर, मटक–मटककर बोल रहे थे, "अरे चमगादड़, तुझे क्या खाक शायरी करना आता है। ज़बरदस्ती ही तुझे यह पार्ट दे दिया। तूने सारा गड़बड़ कर दिया।"

(ख) मोहन बोला, "मेरा तो दिल बहुत ज़ोरों से ध ड़क रहा है।"

(ग) राकेश पहुँचते ही एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला, "आज मुझे अस्पताल में हाथ पर पट्टी बँधवाने में देर हो गई, तो तुमने इस तरह 'रिहर्सल' की है। ज़ोर–ज़ोर से लड़ने लगे।"

(घ) चित्रकार महोदय ने हाथ उठाकर कहा, "देख, मुँह सँभालकर बोल।"

7. शब्दों का फेर

"जब संगीत की स्वर लहरी गूँजती है तो पशु–पक्षी तक मुग्ध हो जाते हैं, शायर साहब! आप क्या समझते हैं संगीत को?"

इस संवाद को पढ़ो और बाताओ कि–

(क) कहानी में इसके बदले किसने, क्यों और क्या बोला? तुम उसको लिखकर बताओ।

(ख) कहानी में शायर के बदले गाजर कहने से क्या हुआ? तुम भी अगर किसी शब्द के बदले किसी अन्य शब्द का प्रयोग कर दो तो क्या होगा?

© NCERT not to be republished

8. तुम्हारा शीर्षक

इस कहानी का शीर्षक 'नाटक में नाटक' है। कहानी में जो नाटक है तुम उसका शीर्षक बताओ।

9. समस्या और समाधान

कहानी में चित्रकार बना मोहन, शायर बना सोहन और संगीतकार बना श्याम अपनी-अपनी कला को महान बताने के साथ एक-दूसरे को छोटा-बड़ा बताने वाले संवादों को बोलकर झगड़े की समस्या को बढ़ावा देते दिख रहे हैं। तुम उन संवादों को गौर से पढ़ो और उसे इस तरह बदलकर दिखाओ कि आपसी झगड़े की समस्या का समाधान हो जाए। चलो शुरुआत हम कर देते हैं; जैसे–'चित्रकार कहता है उसकी कला महान' के बदले अगर चित्रकार कहे कि 'हम सबकी कला महान' तो झगड़े की शायद शुरुआत ही न हो। अब तुम यह बताओ कि–

(क) संगीतकार को क्या कहना चाहिए?

(ख) शायर को क्या कहना चाहिए?

(ग) तुम यह भी बताओ कि इन सभी कलाकारों को तुम्हारे अनुसार वह संवाद क्यों कहना चाहिए?

10. वाक्यों की बात

नीचे दिए गए वाक्यों के अंत में उचित विराम चिह्न लगाओ–

(क) शायर साहब बोले उधर जाकर सुन ले न

(ख) सभी लोग हँसने लगे

(ग) तुम नाटक में कौन-सा पार्ट कर रहे हो

(घ) मोहन बोला अरे क्या हुआ तुम तो अपना संवाद भूल गए

© NCERT not to be republished

छठा पाठ

0848CH06

सागर-यात्रा

दस भारतीयों ने एक नौका में दुनिया का चक्कर लगाया था। उस नौका का नाम 'तृष्णा' था। यह पहला ऐसा भारतीय अभियान था जो विश्व यात्रा पर निकला था। उसी दल के एक सदस्य के यात्रा-वर्णन के कुछ अंश–

नौका पर जीवन

नौका पर जीवन अति व्यस्त था। हमारे पास स्वचालन की व्यवस्था नहीं थी अतः तृष्णा के चक्के (व्हील) चौबीसों घंटे सँभालने के लिए आदमियों की ज़रूरत थी। हम हर घंटे बाद चक्का सँभालने का काम बदलते। एक चक्का सँभालता तो दूसरा जहाजों, द्वीपों और ह्वेल मछलियों आदि पर नज़र रखता।

जो लोग चौकसी से हटते वे अपने कपड़े बदलते, खाना खाते, पढ़ते, रेडियो सुनते और अपनी ड्यूटी के अन्य कार्य जैसे रेडियो की जाँच, इंजन की जाँच तथा व्यंजन सूची के अनुसार भोजन बनाने के लिए राशन देने का काम निबटाते।

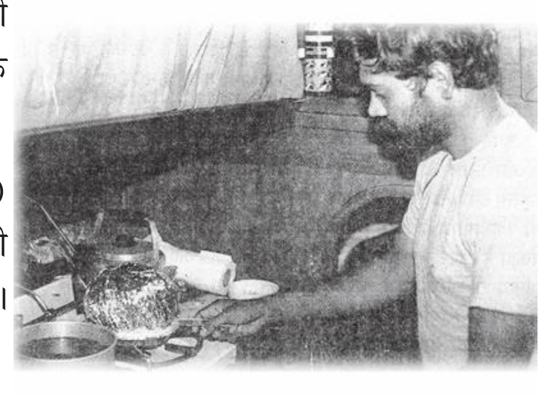

एक सदस्य 'माँ की भूमिका' (मदर वाच) निभाता। उसे खाना पकाने, बर्तन माँजने, शौचालय की सफ़ाई जैसे काम करने पड़ते ताकि नौका स्वच्छ रहे।

© NCERT not to be republished

'माँ की भूमिका' बारी-बारी से सबको करनी पड़ती। एकमात्र यही ड्यूटी ऐसी थी जिसके बाद आदमी पूरी रात आराम कर पाता। पाँच दिनों में केवल एक बार बारी आती और यदि मौसम ठीक रहता तो नींद आ पाती।

इस कठिन दिनचर्या के कारण शतरंज खेलने के लिए या किसी और मनोरंजन के लिए समय ही नहीं मिलता था और न ही बोरियत के लिए वक्त था। व्यस्तता खूब थी।

दिन में एक बार हम नौका पर 'खुशी का घंटा' बिताते।

अभियान दल के सभी सदस्य 16.00 बजे डेक पर आते और एक घंटा मिल-जुलकर बिताते। मदर वाच अधिकारी सबके लिए उनकी इच्छानुसार चाय-कॉफी बनाता या शीतल पेय देता। वह कुछ नाश्ता भी बनाता।

पानी की समस्या

एक बार बौछार आई, मैं बाहर को भागा, अपना शरीर तर किया और शरीर तथा बालों में साबुन लगा डाला। आकाश में बादल जमकर छाए थे और मुझे विश्वास था कि कुछ देर में पानी बरसेगा। अचानक वर्षा थम गई। मैंने पाँच मिनट और फिर दस मिनट तक प्रतीक्षा की लेकिन वर्षा का नामो-निशान नहीं था। साबुन की चिपचिपाहट और ठंडक के कारण समुद्री पानी में नहाने का फैसला किया। यह सबसे गलत काम था। गंदगी, साबुन और समुद्री जल ने मेरे शरीर पर एक मोटी, चिपचिपी और खुजलाहटवाली परत जमा दी, जो आसानी से छूटती नहीं है। मुझे उस परत को छुड़ाने के लिए कंघी और ब्रुश का सहारा लेना पड़ा। छाती, हाथ और पैरों पर उन्हें फेरने से ही छुटकारा मिला। नैतिक शिक्षा यही है कि जब नौका पर स्नान करना हो तो अपने पास पर्याप्त पानी रखो या विशेष समुद्री-जल साबुन का प्रयोग करो- समुद्री जल में साधारण साबुन का उपयोग मत करो।

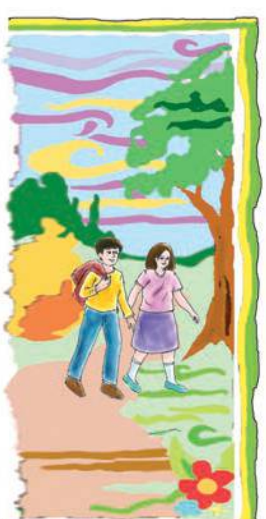

नौका पर पहनने के लिए केवल दो जोड़ी कपड़े होने के कारण हमें उन्हें बार-बार धोना पड़ता। नौका पर कपड़े सुखाने के लिए हमने उसके चारों ओर एक तार बाँध रखा था जिसमें हम क्लिप लगाकर कपड़े सुखाते। तेज़ हवाओं के कारण अथवा पाल की रस्सियाँ बाँधते समय कभी-कभी कपड़े गायब भी हो जाते।

तूफानों का सामना

हम सब इस अभियान के खतरों को जानते थे। हमें यह भी ज्ञात था कि शायद हम कभी वापस न लौट सके, शुरू में ही हमें खराब मौसम का सामना करना पड़ा । हम रुकना नहीं चाहते थे,

© NCERT not to be republished

इसलिए मरम्मत का काम चलती नौका में ही करने की ठानी। कैप्टन ऐसे मौसम में 15 मीटर ऊँचे मस्तूल पर चढ़े और उन्होंने एंटीना की मरम्मत की। यदि थोड़ी-सी भी असावधानी हो जाती तो वे आसानी से मस्तूल से टपककर समुद्र की गहराइयों में समा सकते थे।

मेडागास्कर के पास एक तूफ़ान आया और 12 मीटर ऊँची समुद्र की लहरें हमारी नौका पर टूट पड़ी और उसे पानी से भर दिया। अभियान दल के सदस्य अनेक बार समुद्र में गिर गए लेकिन सौभाग्य से उन्हें वापस नौका पर खींच लिया गया क्योंकि उन्होंने नौका से जुड़ी रस्सियों को अपनी बेल्ट से बाँध रखा था।

केप ऑफ गुड होप का चक्कर लगाते समय भी हम खतरनाक तूफ़ान से टकराए। हवा की गति थी 120 किलोमीटर प्रति घंटा और समुद्री लहरों की ऊँचाई 15 मीटर। हर क्षण, मौत को आमंत्रण दे रहा था। हम केप से पाँच किलोमीटर दूर बह गए। हमें लगा कि हमारी नौका किसी चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाएगी। हमने अपने जीवन रक्षक उपकरण खो दिए, रेडियो सैट बेकार हो गया, एरियल टूट गए और पूरी दुनिया से अगले 15 दिनों के लिए हमारा रेडियो संपर्क टूट गया। भारतीय समाचारपत्रों ने खबर छाप दी कि 'तृष्णा' लापता है, जिस कारण हमारे परिवारजन और मित्रगण बुरी तरह घबरा गए। एक दल हमारी तलाश में भेजा गया लेकिन वह असफल होकर लौट गया।

अनुभव बढ़ने के साथ हम नौका को निश्चित राह पर बनाए रखने में सफ़ल रहे।

© NCERT not to be republished

मुंबई वापसी

प्रथम भारतीय नौका अभियान दल विश्व की परिक्रमा कर 54,000 किलोमीटर की दूरी मापकर 470 दिन की ऐतिहासिक यात्रा के बाद, 10 जनवरी, 1987 को 6.00 बजे मुंबई बंदरगाह पहुँचा। जैसे ही तृष्णा के दस सदस्यीय अभियान दल ने गेटवे ऑफ इंडिया की सीढ़ियों पर कदम रखे, भीड़ खुशी से चिल्ला उठी, आतिशबाजी छोड़ी गई, बंदूकें दागी गईं और हमारे स्वागत में सायरन बजाए गए। हममें से कई अपने परिवारों से साढ़े पंद्रह माह से बिछुड़े हुए थे। 'आपका स्वागत है, स्वागत है, पापा', 'हमें आपकी याद आती थी' जैसे प्लेकार्ड हाथों में थामें हमारे बच्चों ने हमें सचमुच रुला दिया। लेकिन यहाँ केवल हमारे परिवार ही स्वागत में नहीं खड़े थे बल्कि पूरा गेटवे ऑफ इंडिया मित्रों और शुभचिंतकों से अटा पड़ा था।

10 जनवरी, 1987 को तृष्णा पर 'फर्स्ट डे कवर' और स्मारक टिकिट जारी किए गए। उसके बाद तृष्णा को खींचकर पानी से बाहर निकाला गया और रेल के दो वैगनों पर लादा गया ताकि गणतंत्र दिवस परेड में उसे शामिल किया जा सके।

तृष्णा 6 दिनों में दिल्ली पहुँच गई किंतु हमारी समस्याएँ समाप्त नहीं हुईं। उसे उतारने के लिए लंबी भुजा वाली क्रेन चाहिए थी। दिल्ली की व्यस्त सड़कों पर नौका ले जाने के लिए न केवल वृक्षों की डालियाँ छाँटनी पड़ीं बल्कि बिजली और टेलीफोन के तारों को भी ऊँचा उठाना पड़ा। पूरी रात मेहनत करने के बाद हम जैसे-तैसे 23 जनवरी को परेड की फुल ड्रेस रिहर्सल के लिए झाँकी तैयार कर सके। गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाली तृष्णा की झाँकी अब तक बनी सबसे बड़ी झाँकियों में से एक थी।

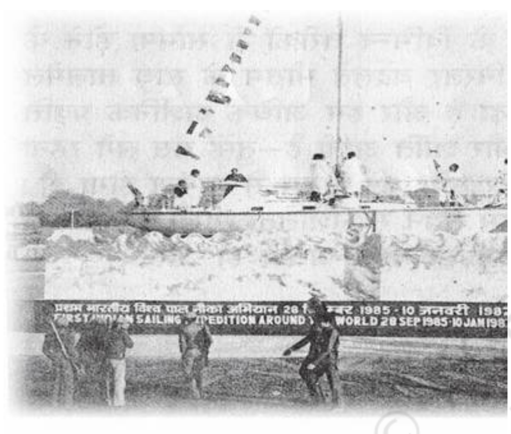

यह पहला अवसर था जब हममें से किसी ने गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया। हम सेना की टुकड़ी के अंग थे और 26 जनवरी को जब हम राजपथ से गुज़रे तो हमारा तालियों से ज़ोरदार स्वागत हुआ। सागर यात्रा की साहसिक एवं संघर्षपूर्ण स्मृति आज भी हमें रोमांचित कर देती है।

– टी.सी.एस. चौधरी

अनुवाद– बृजमोहन गुप्त

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

अभियान	-	लक्ष्य
स्वचालन	-	बिना किसी विशिष्ट प्रक्रिया के अपने-आप चलना
चौकसी	-	सजगता, पहरेदारी
निबटाना	-	पूरा करना
पाल (नौका)	-	नाव के मस्तूल के सहारे ताना जाने वाला कपड़ा जिसमें हवा भरने से नाव चलती है।
निरंतर	-	लगातार

1. पाठ से

(क) सागर यात्रा में नौका को सँभालने के लिए हर समय एक व्यक्ति की ज़रूरत थी। क्यों?

(ख) वे लोग समुद्र की यात्रा कर रहे थे। समुद्र यात्रा में भी उन्हें पानी की समस्या क्यों हुई?

2. खतरे

"हम सब इस अभियान के खतरों को जानते थे।"

समुद्री यात्रा में उन यात्रियों को कौन-कौन से खतरों और परेशानियों का सामना करना पड़ा था?

3. माँ के काम

"एक सदस्य माँ की भूमिका निभाता"

(i) नौका पर 'माँ' की भूमिका निभाने वाला व्यक्ति कौन-कौन से काम करता था?

(ii) तुम्हारे विचार से उन कामों को माँ के कामों की उपमा क्यों दी गई होगी?

(iii) क्या तुमने कभी किसी के लिए 'माँ की भूमिका' निभाई है? यदि हाँ, तो बताओ

(क) तब तुमने कौन-कौन से काम किए थे?

(ख) वे काम क्यों और किसलिए किए थे?

(iv) तुम्हारी माँ या घर का अन्य कोई सदस्य सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक कौन-कौन से काम करता है? सूची बनाओ।

© NCERT not to be republished

4. पानी की परेशानी

सागर के यात्रियों को पानी के कारण बहुत परेशानी होती थी। बताओ-

(क) उन्हें पानी के कारण क्या-क्या परेशानियाँ हुई?

(ख) क्या तुम्हारे आसपास भी पानी की समस्या होती है, उसके बारे में बताओ।

(ग) उस समस्या का समाधान कैसे किया जा सकता है?

5. अपनी-अपनी यात्रा

तुमने अभी दस भारतीय यात्रियों की एक अनूठी यात्रा की कहानी पढ़ी, तुम भी अपनी या किसी अन्य व्यक्ति की एक यात्रा के बारे में बताओ। तुम चाहो तो ये बातें बता सकते हो-

(क) वह यात्रा कहाँ की थी? कितने दिनों की थी? यात्रा कैसे की?

(ख) उसमें कौन-कौन सी समस्याएँ आईं?

(ग) उन समस्याओं को कैसे दूर किया गया?

(घ) उस यात्रा में किन-किन लोगों से मिले?

(ङ) कौन-कौन सी चीज़ें, पेड़-पौधे आदि पहली बार देखे?

6. विशेष जगहों के नाम

'बंदरगाह' समुद्र के किनारे की वह जगह होती है जहाँ पानी के जहाज़, नौकाएँ आदि ठहरते हैं। पता लगाओ इन जगहों पर क्या होता है-

(क) अस्तबल

(ख) हवाई-अड्डा

(ग) पोस्ट-ऑफिस

(घ) अस्पताल

(ङ) न्यायालय

(च) बाज़ार

7. गणतंत्र दिवस

'तृष्णा' को गणतंत्र दिवस परेड में शामिल किया गया था। आपस में चर्चा करके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर खोज़ो-

(क) गणतंत्र दिवस किसे कहते हैं? यह किस दिन मनाया जाता है?

(ख) गणतंत्र दिवस के दिन क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं?

(ग) दूरदर्शन या आकाशवाणी पर गणतंत्र दिवस परेड देखकर/सुनकर उसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखो।

© NCERT not to be republished

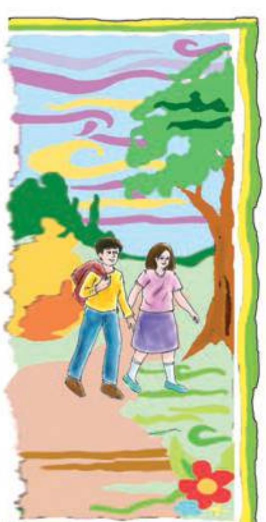

8. खेल

"इस कठिन दिनचर्या के कारण शतरंज खेलने के लिए समय ही नहीं मिलता था।"

यदि उन नाविकों के पास समय होता तो वे नौका पर कौन-कौन से खेल खेल सकते थे? सूची बनाओ-

(क) शतरंज

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

9. खुशी का घंटा

'दिन में एक बार हम नौका पर 'खुशी का घंटा' बिताते'

यदि तुम्हें स्कूल में 'खुशी का घंटा' बिताने का मौका मिले, तो तुम उस एक घंटे में कौन-कौन से काम करना चाहोगे?

10. हिम्मतवाले

"हम सब इस अभिमान के खतरों को जानते थे, हमें यह भी ज्ञात था कि शायद हम कभी वापस न लौट सकें।"

वे दस नाविक इतनी खतरनाक यात्रा के लिए क्यों निकले होंगे? आपस में चर्चा करो।

11. खोए हुए मोज़े की कहानी

तेज़ हवाओं के कारण कभी-कभी उन नाविकों के कपड़े उड़/खो जाते थे। मान लो, ऐसा ही एक मोज़ा तुम्हें अपनी कहानी सुनाना चाहता है। वह क्या-क्या बातें बताएगा, कल्पना से उसकी कहानी पूरी करो-

मैं एक मोज़ा हूँ। वैसे तो मैं हमेशा अपने भाई के साथ रहता हूँ।

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

12. छोटे-छोटे

"जो लोग चौकसी से हटते, वे अपने कपड़े बदलते, खाना खाते, पढ़ते, रेडियो सुनते और अपनी ड्यूटी के अन्य कार्य जैसे रेडियो की जाँच, इंजन की जाँच तथा व्यंजन सूची के अनुसार भोजन बनाने के लिए राशन देने का काम निबटाते।"

इस वाक्य को कई छोटे-छोटे वाक्यों के रूप में भी लिखा जा सकता है जैसे-

जो लोग चौकसी से हटते, वे अपने कपड़े बदलते। वे खाना खाते, पढ़ते और रेडियो सुनते। वे अपनी ड्यूटी के अन्य कार्य करते जैसे रेडियो की जाँच और इंजन की जाँच। वे व्यंजन सूची के अनुसार भोजन बनाने के लिए राशन देने का काम निबटाते।

तुम इसी प्रकार नीचे लिखे वाक्य को छोट-छोटे वाक्यों में बदलो-

प्रथम भारतीय नौका अभियान दल विश्व की परिक्रमा करके 54,000 किलोमीटर की दूरी मापकर 470 दिन की ऐतिहासिक यात्रा के बाद 10 जनवरी, 1987 को 6.00 बजे मुंबई बंदरगाह पहुँचा।

13. सही उपसर्ग लगाओ–

अ, सु

ऊपर बॉक्स में दिए गए उपसर्ग लगाकर सार्थक शब्द बनाओ।

(क) सफल + ... = ...

(ख) स्वागत + ... = ...

(ग) विश्वास + ... = ...

(घ) कन्या + ... = ...

(ङ) पुत्र + ... = ...

14. सही वाक्य

में, ने, को, का, के लिए, से, पर

तालिका में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों में भरो।

(क) सीमा .... फल खाए।

(ख) रोहित .... पेन नया है।

(ग) माँ–बच्चों .... मिठाई लाई।

(घ) हमने रस्सी .... कपड़े सुखाए।

(ङ) मैंने बैग .... किताबें रखीं।

(च) पौधों .... गमलों में रखो।

(छ) केरल जम्मू .... बहुत दूर है।

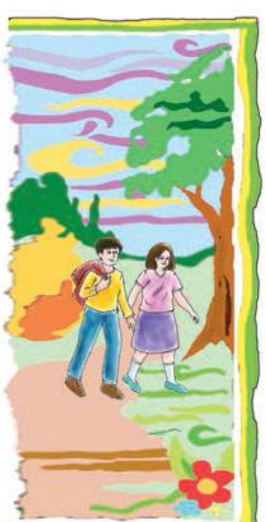

© NCERT not to be republished

0848CH07

सातवाँ पाठ

उठ किसान ओ

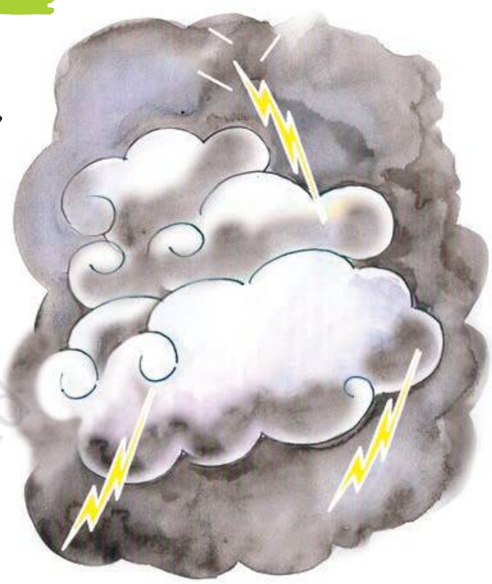

उठ किसान ओ, उठ किसान ओ,
बादल घिर आए हैं
तेरे हरे-भरे सावन के
साथी ये आए हैं

आसमान भर गया देख तो
इधर देख तो, उधर देख तो
नाच रहे हैं उमड़-घुमड़ कर
काले बादल तनिक देख तो

तेरे प्राणों में भरने को
नये राग लाए हैं

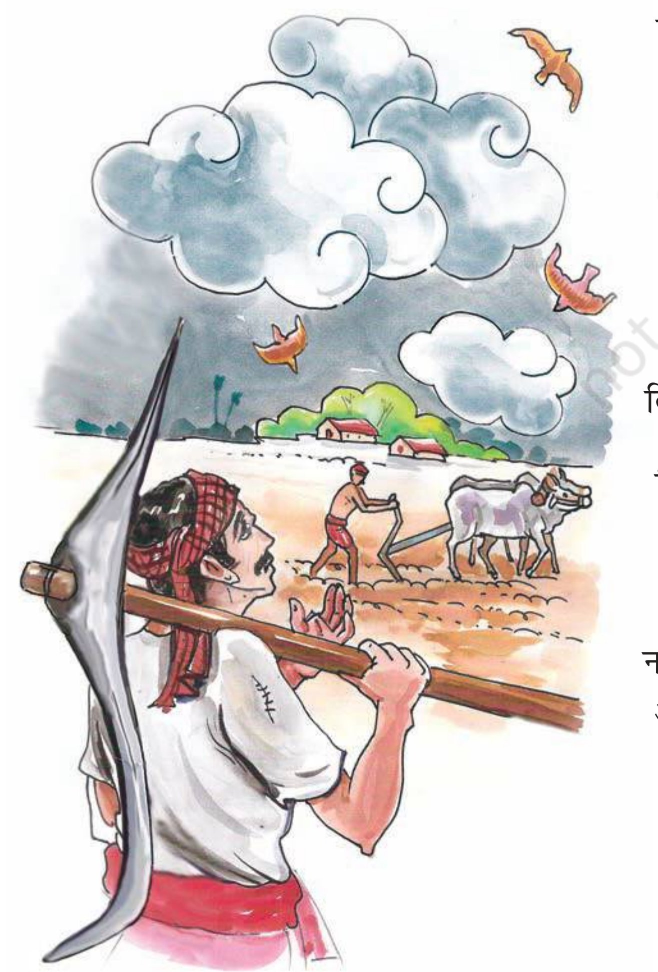

यह संदेशा लेकर आई
सरस मधुर, शीतल पुरवाई
तेरे लिए, अकेले तेरे
लिए, कहाँ से चल कर आई

फिर वे परदेसी पाहुन, सुन,
तेरे घर आए हैं

उड़ने वाले काले जलधर
नाच-नाच कर गरज-गरज कर
ओढ़ फुहारों की सित चादर
देख उतरते हैं धरती पर

छिपे खेत में, आँखमिचौनी
सी करते आए हैं

© NCERT not to be republished

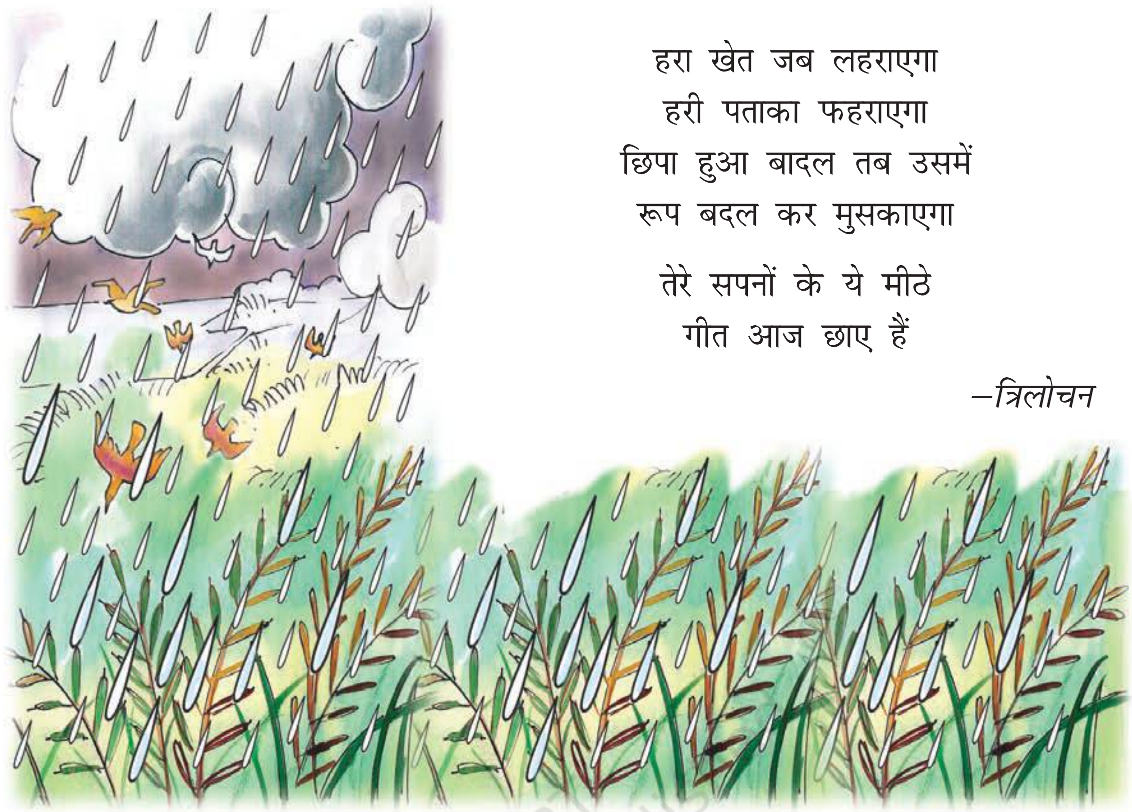

हरा खेत जब लहराएगा
हरी पताका फहराएगा
छिपा हुआ बादल तब उसमें
रूप बदल कर मुसकाएगा

तेरे सपनों के ये मीठे
गीत आज छाए हैं

–त्रिलोचन

अभ्यास

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ

घिरना	– चारों ओर से आना, छाना	फुहार	– बौछार, नन्हीं-नन्हीं बूँदे
तनिक	– थोड़ा-सा	सित	– सफ़ेद
संदेशा	– समाचार, खबर	ओढ़ना	– ढाँपना, किसी कपड़े आदि से बदन ढकना
पुरवाई	– पूर्व की ओर से चलने वाली हवा	पताका	– झंडा
शीतल	– ठंडी	आँख मिचौनी	– एक पल दिखना और छिप जाना, लुका-छुपी का खेल
परदेसी	– दूसरे देश में रहने वाला	गरज	– बादलों की ज़ोरदार ध्वनि
पाहुन	– मेहमान, अतिथि		
जलधर	– पानी से भरे बादल		

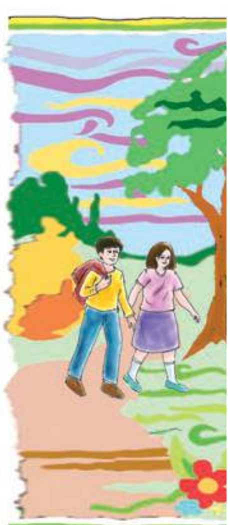

1. कविता से

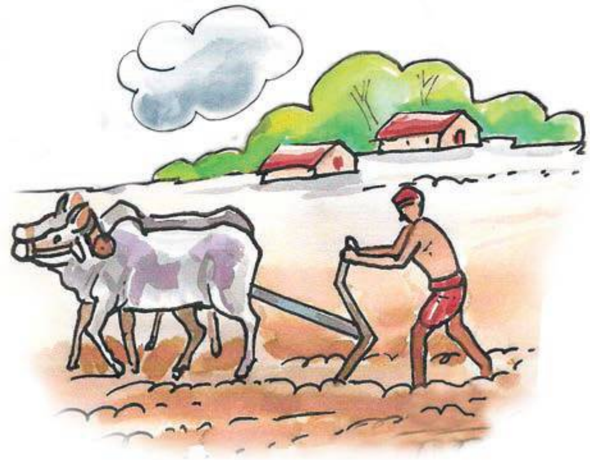

नीचे लिखी पंक्तियाँ पढ़ो। आपस में चर्चा करके इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो–

(क) "तेरे हरे-भरे सावन के साथी ये आए हैं"
क्या बादल हरे-भरे सावन के साथी हैं अथवा किसान के? या दोनों के।

(ख) "तेरे प्राणों में भरने को नया राग लाए हैं"
बादल ऐसा क्या लाए हैं जिससे किसान के प्राणों में नया राग भर जाएगा?

(ग) "यह संदेशा ले कर आई, सरस मधुर शीतल पुरवाई"
पुरवाई किसान के लिए क्या संदेशा लेकर आई होगी?

(घ) "तेरे लिए, अकेले तेरे लिए, कहाँ से चलकर आई"
क्या सचमुच पुरवाई केवल किसान के लिए चलकर आई है? वह कहाँ से चलकर आई होगी?

2. कविता के आधार पर बताओ कि

(क) जब हरा खेत लहरायेगा तो क्या होगा?

(ख) बादलों के घिर आने पर कवि किसान को उठने के लिए क्यों कहता है?

(ग) रूप बदल कर बादल किसान के कौन से सपनों को साकार करेगा?

© NCERT not to be republished

3. छिपा है कौन?

"हरा खेत जब लहराएगा
हरी पताका फहराएगा
छिपा हुआ बादल तब उसमें
रूप बदलकर मुसकाएगा"

कविता में हम पाते हैं कि सावन की हरियाली बादलों के कारण ही हुई है इसलिए कवि को उस हरियाली में मुसकराते बादल ही दिखाई देते हैं। बताओ, कवि को इन सब में कौन दिखाई दे सकता है–

(क) गर्म हवा। लू के थपेड़े।

(ख) सागर में उठती ऊँची-ऊँची लहरें।

(ग) सुगंध फैलाता हुआ फूल।

(घ) चैन की नींद सोती हुई बालिका।

4. किस्म-किस्म की खेती

आजकल पुराने जमाने की अपेक्षा किसान बहुत अधिक चीज़ों की खेती करने लगे हैं। खेती का स्वरूप बहुत विशाल हो गया है। पता करो कि आजकल भारत के लोग किन-किन चीज़ों की खेती करते हैं? अपने साथियों के साथ मिलकर एक सूची तैयार करो।

5. मातृभाषा की कविता

अपनी मातृभाषा में 'किसान' पर लिखी गई कविता को अपने मित्रों व शिक्षक को सुनाओ।

6. खेल-खेल में

"छिपे खेत में, आँखमिचौनी सी करते आए हैं"

तुम जानते हो कि आँखमिचौनी एक खेल है जिसमें एक खिलाड़ी आँखें बंद कर लेता है और बाकी खिलाड़ी छिप जाते हैं। तुम भी अपने आस-पास खेले जाने वाले ऐसे ही कुछ खेलों के नाम लिखो। यह भी बताओ कि इन खेलों को कैसे खेलते हैं?

7. गरजना-बरसना

"उड़ने वाले काले जलधर
नाच-नाच कर गरज-गरज कर
ओढ़ फुहारों की सित चादर
देख उतरते हैं धरती पर"

© NCERT not to be republished

बादल गरज-गरज कर धरती पर बरसते हैं परंतु इसके बिलकुल उलट एक मुहावरा है– जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

कक्षा में पाँच-पाँच बच्चों के समूह बनाकर चर्चा करो कि दोनों बातों में से कौन-सी बात अधिक सही है। अपने उत्तर का कारण भी बताओ। चर्चा के बाद प्रत्येक समूह का एक प्रतिनिधि पूरी कक्षा को अपने समूह के विचार बताएगा।

8. और मुहावरे

वर्षा से जुड़े या वर्षा के बारे में कुछ और मुहावरे खोज़ो। उनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाओ।

9. तनिक

"काले बादल तनिक देख तो।"

तुम भी अपने ढंग से 'तनिक' शब्द का इस्तेमाल करते हुए पाँच वाक्य बनाओ।

10. गीत/गाने

तुमने वर्षा ऋतु से संबंधित कुछ गीत/गानों को अवश्य सुना होगा। अगर नहीं तो इससे संबंधित कुछ गीत/गानों की सूची बनाओ और अपनी आवश्यकता और सुलभता के अनुसार उन्हें सुनो। उनमें से किसी गीत-गाने को तुम सुविधानुसार किसी अवसर पर गा भी सकते हो।

© NCERT
not to be republished

0848CH08

आठवाँ पाठ

सस्ते का चक्कर

(छुट्टी के घंटे की आवाज़, आठ-दस बच्चे एक दूसरे को धक्का देते हँसते, चिढ़ाते बैग लिए भागते हुए चले जाते हैं। बीच-बीच में स्टेज के अंदर से फेरीवालों की मज़ेदार लटके भरी आवाज़ें-चने कुरमुरे चटखारेदार, येई तरावटी आइसक्रीम, खट्टी गोलियाँ, ठंडा शरबत, नीबू-संतरे का...अजय और नरेंद्र आते हैं-उम्र नौ-दस वर्ष अजय दुबला, नरेंद्र तगड़ा...लगातार चटर-मटर की आवाज़ करता नरेंद्र चूरन खा रहा है।)

नरेंद्र : अरे अजय! तू तो इस समय *(नकल करके)* रोज़ लेफ्ट-राइट, पाजामा ढीला टोपी टाइट-करता रहता है न! आज अभी कैसे? डंडी मार दी न बच्चू-कैसा पकड़ा? और ड्रामे से भी निकाल दिया क्या टीचर ने? ऐं?

अजय : नहीं, आज मम्मी की तबियत कुछ खराब थी, मैंने टीचर से कहा तो उन्होंने मुझे छुट्टी दे दी। मेरा पार्ट मुझे याद भी था न! मैंने सोचा मम्मी तो रोज़ मुझे चाय-नाश्ता कराती हैं, आज मैं घर जल्दी पहुँचकर उन्हें चाय बनाकर पिलाऊँ तो किती खुश होगी वह!

नरेंद्र : *(बिना सुने)* वाह! ले इसी बात पर चूरन खा-बड़ा मज़ेदार है। लेकिन एक बात बता यार! आखिर तू सारे दिन इतनी पढ़ाई-लिखाई, ड्रामा-डिबेट की मशक्कत आखिर काहे को करता है? ऐं मुझे देख-क्या मौज़ भरी जिंदगी है-सैर सपाटा, खेल तमाशा। *(इसके साथ ही एक आदमी थोड़े से लाली पॉप बेचता हुआ आता है-पचास पैसे में तीन लाली पॉप, पचास पैसे में तीन...)*

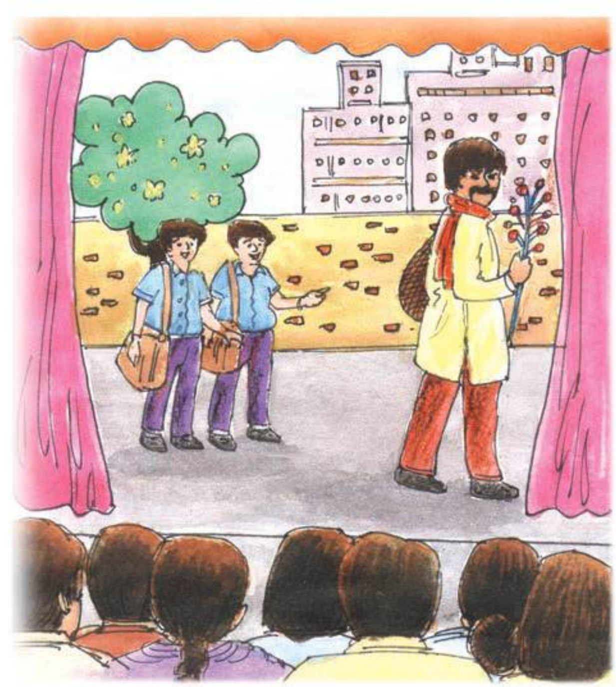

© NCERT not to be republished

नरेंद्र : *(चौंककर)* अरे सुना है तूने? पचास पैसे में तीन यानी एक रुपये में छह लाली पॉप! मज़ा आ गया...पर मेरे तो सारे पैसे ही खत्म हो गए, चूरन, चुस्की, आइसक्रीम ले ली–सुन, तेरे पास होंगे कुछ पैसे?

अजय : एक भी नहीं।

नरेंद्र : अरे उधार दे दे, उधार–कल पाँच पैसे ज़्यादा लौटा दूँगा। समझ क्या रखा है *(रुक कर)* सुन रिक्शे के तो होंगे?

अजय : हाँ हैं तो–पर रिक्शे के पैसों के लाली पॉप खरीद लूँ मैं? यह तो चीटिंग होगी।

नरेंद्र : अरे बाप रे! तू तो हरिशचंद्र जी का भी पड़दादा निकला। माँगे पैसे, देने लगा सीख! शुरू कर दी अपनी महाबोर स्पीच, मत दे, मत दे, ठीक–मैंने फीस नहीं दी। आज उसके पैसे तो हैं ही।

अजय : *(समझाते हुए)* देख नरेंद्र! तू हमेशा बिना सोचे समझे काम कर डालता है। मेरी बात मान, इस आदमी से लाली पॉप लेना बिल्कुल ठीक नहीं–मुझे लगता है या तो यह कहीं से चुराकर लाया है या कहीं से नुकसानदेह खराब माल उठा लाया है–मेरी मम्मी कहती है....

नरेंद्र : *(बात काटकर)* अरे! फिर तुझे तेरी मम्मी याद आ गई–मेरी बात मानेगा? तू ज़रा अपने दूसरे कान से भी तो कुछ काम लिया कर...

अजय : क्या मतलब?

नरेंद्र : *(हँसकर)* एक कान से सुनी, दूसरे कान से निकाल दी–समझा?

अजय : समझा! अब से तेरी बात के लिए ही यह दूसरा कान काम में लाऊँगा.. *(दोनों ज़ोर से हँसते हैं)*

नरेंद्र : सचमुच तू ज़रूरत से ज़्यादा सोचता है–इसी से *(उँगली दिखाकर)* दुबला सीकिया है–मुझे देख–हट्टा–कट्टा दारा सिंह का पट्ठा–रुस्तमेहिंद *(हँसता है)* अरे देख लाली पॉप वाला निकल गया तेरी बातों में अरे वो..वो जा रहा है, रुकना भाई। हाँ अजय, तू ठहर मैं अभी ले के आया। और हाँ मैंने अपने रिक्शे के पैसों की तो चूरन–चुसकी खा ली। प्लीज अपने साथ ही रिक्शे से लेते चलना मुझे–बस अभी आता हूँ... *(जाता है)*

(अजय इधर–उधर टहलता बेसब्री से इंतजार करता है)

अजय : इस नरेंद्र को कभी अक्ल नहीं आयेगी। सब सड़ी–गली चीज़ें खाएगा और वार्षिक परीक्षाओं में बीमार पड़ेगा...आँटी डाँटती हैं तो फट झूठ बोल जाएगा–बेचारी आँटी–देख. ..अभी तक नहीं आया ...

© NCERT not to be republished

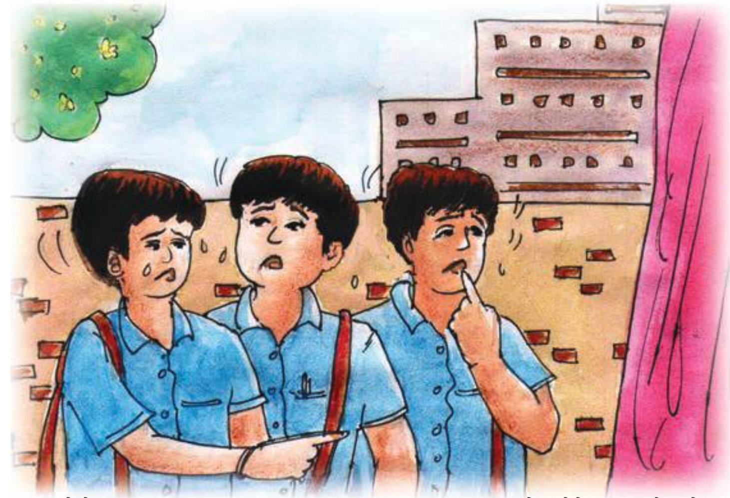

(दो-तीन बच्चे आते हैं)

पहला लड़का : अरे अजय! तू तो कब का टीचर से छुट्टी लेकर आया था, यहाँ क्या कर रहा है?

अजय : क्या करूँ, मुझे खुद इतनी देर हो रही है–नरेंद्र कब का उधर लाली पॉप लेने गया अभी तक आया ही नहीं–उसे मेरे रिक्शे में जाना है।

दूसरा लड़का : कौन नरेंद्र? उसे तो मैंने काफी देर पहले एक आदमी के साथ पीछे वाले आम के बगीचे में जाते देखा था–मैंने पूछा भी तो बोला इसके पास छुट्टे पैसे नहीं, वही लेने जा रहा हूँ...

तीसरा लड़का : अरे तू घर जा...नरेंद्र को जानता नहीं? उसके फेर में पड़ा तो अपनी भी शामत आई समझ। आता है तो आ जा मेरे साथ तुझे तेरे घर छोड़ दूँगा।

अजय : *(सोचते हुए)* नहीं सुभाष! मुझे डर है कहीं वह आदमी कोई बदमाश तो नहीं...*(लड़कों से)* तुम लोग ज़रा आओ न–देखा जाए कहीं नरेंद्र...

पहला : ना बाबा ना, यह जासूसी हमें नहीं करनी वैसे ही देर हो गई है, मेरी मम्मी मानने वाली नही–अपन तो चले, नरेंद्र की नरेंद्र जानें, जैसा करेगा वैसा भरेगा, हम क्यों अपनी जान खतरे में डालें।

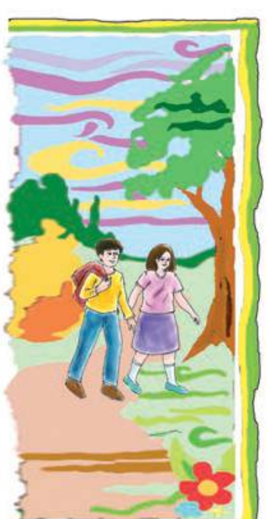

दूसरा : *(तीसरे से)* चल हम भी जल्दी चलें, नरेंद्र के फेर में कहीं भी आफत में फँसे तो खैर नहीं...बॉय अजय..*(जाते हैं)*

अजय : *(थका, उदास-परेशान होकर इधर–उधर टहलता है)* कहाँ गया नरेंद्र आखिर? अब तो बहुत देर हो गई, रास्ता भी सुनसान हो गया..स्कूल में भी कोई नहीं! किससे पूछूँ? *(तभी)* अरे! यह सरसराहट कैसी? आम के बगीचे से ही आ रही है। छुपकर बगीचे की ओर चलता हूँ आखिर नरेंद्र गया किधर? *(जाता है)*

(नरेंद्र की मम्मी रेखा, अजय की मम्मी मिसेज मेहता के घर आती हैं)

मिसेज मेहता : कौन रेखा जी? नमस्ते, आइए बैठिए।

© NCERT not to be republished

2020-21

रेखा : *(घबरायी आवाज़ में)* नहीं, बैठूगी नहीं बहन! मैं पूछने आयी हूँ कि क्या आपका अजय आ गया? मेरा नरेंद्र अभी तक स्कूल से नहीं लौटा...

मिसेज मेहता : आया तो अजय भी नहीं, पर उसे सालाना जलसे की प्रैक्टिस में देर हो जाया करती है, लेकिन आज मेरी तबियत भी ठीक नहीं थी। सुबह...अजय कह गया था टीचर से जल्दी छुट्टी माँग लूँगा...शायद टीचर ने छुट्टी नहीं दी और नरेंद्र भी उसके साथ रुक गया हो।

रेखा : नहीं बहन... नरेंद्र ज़रा शरारती है न। इसी से डर लग रहा है... देखिए एक बजे छुट्टी होती है, ढाई बज रहे हैं...

मिसेज मेहता : क्या सचमुच? मुझे तो दवा खाकर नींद आ गई थी, समय का पता ही नहीं चला, इतनी देर तो अजय को भी नहीं होनी चाहिए।

रेखा : *(रोने के स्वर में)* कुछ कीजिए जल्दी, मिसेज मेहता! हाय मेरा नरेंद्र...

मिसेज मेहता : घबराइए नहीं, रेखा जी–देखिए मेरा बेटा भी तो है लेकिन अजय पर तो मुझे पूरा विश्वास है...ठहरिए...रिक्शा लेकर चलते हैं...देर सचमुच काफ़ी हो गई है।

रेखा : *(जल्दी से)* आप आइए, तब तक मैं रिक्शा बुलाती हूँ।

(रेखा रिक्शा बुलाने के लिए पीछे की ओर मुड़ती है, तब तक सामने देखकर खुशी से चीख पड़ती है।)

रेखा : आ गए! आ गए! बहन बच्चे, देखिए...

2020-21

मिसेज मेहता : सच? अरे हाँ, पर दोनों के साथ ये पुलिस इंस्पेक्टर!

(भारी बूट की आवाज़ के साथ इंस्पेक्टर आता है)

इंस्पेक्टर : *(भारी आवाज़ में)* मिस्टर मेहता का घर है यह?

मिसेज मेहता : जी-जी हाँ... कहिए! ये बच्चे आपको कहाँ मिले? इंस्पेक्टर *(अजय की ओर संकेत कर)*-बच्चा आपका है?

मिसेज मेहता : जी हाँ-अजय है इसका नाम... क्या किया इसने?

इंस्पेक्टर : आज तो इसने वो शाबाशी का काम किया है कि आप सुनेंगी तो गर्व से झूम उठेंगी...

मिसेज मेहता : क्या? मैं तो इस पर नाराज़ हो रही थी कि समय से घर नहीं लौटा।

इंस्पेक्टर : *(हँसकर)* आज अजय ने अपने इस दोस्त—क्या नाम है इसका— नरेंद्र की जान बचाई है और एक बड़े गिरोह के सरदार को पकड़वाया है।

मिसेज मेहता : ओह! वो कैसे इंस्पेक्टर साहब?

इंस्पेक्टर : अब ये सब तो आप खुद अजय से सुनिए—हाँ सुना दो बेटे...?

अजय : मम्मी! आज मैंने टीचर से जल्दी छुट्टी माँग ली कि तुम्हारी तबियत खराब है, पर बाहर आया तो नरेंद्र मिल गया। फाटक पर एक आदमी पचास पैसे में तीन लाली पॉप बेच रहा था। मैंने नरेंद्र को मना किया, पर यह इतने सस्ते लाली पॉप सुनकर अपने को रोक नहीं पाया...चला गया...*(साँस लेने को रुकता है)*

रेखा : फिर?

अजय : फिर आंटी, मैं बहुत देर तक खड़ा रहा। सब ओर सुनसान हो गया—तब दूर पर मुझे कुछ सरसराहट मालूम हुई। इसके पहले मेरे एक दोस्त ने बताया था कि नरेंद्र आम के बगीचे की तरफ़ लाली पॉप वाले से छुट्टे पैसे लेने गया है।

रेखा : तो ... फिर तूने क्या किया बेटे?

अजय : मैं छुपते-छुपते दबे पाँव बगीचे में गया तो नरेंद्र का बैग पड़ा मिला, देखकर मैं हैरान रह गया। मुझे शक हुआ—तभी देखा तो दूर पर वही आदमी एक बड़ा-सा थैला पीठ पर रखे काली-भूरी चैक की चादर ओढ़े चला जा रहा था...मम्मी मुझे तुम्हारी सुनाई उन बदमाशों की कहानियाँ याद हो आईं जो बच्चों को उठाकर ले जाते हैं...रास्ता सूना था, इसलिए मैं चुपचाप उसके काफी पीछे बिना आवाज़ किए चलता रहा।

मिसेज मेहता : फिर?

अजय : चलते-चलते मेरे पैर बिलकुल थक गए...तभी वह आदमी अचानक एक सुनसान पतली सड़क पर मुड़ गया.. मेरी समझ में नहीं आया क्या करूँ. ..तभी देखा तो सीधी सड़क पर कुछ दूर पर पुलिस स्टेशन की लाल इमारत दिखाई दी। मैं समझ गया कि तभी यह आदमी सँकरी सड़क पर

मुड़ गया...मेरा शक पक्का हो गया। मैं पूरी तेज़ी से दौड़ा और...और इंस्पेक्टर साहब को...*(हाँफने लगता है)*

इंस्पेक्टर : वाह अजय बेटे वाह! सुना आपने मिसेस मेहता...

रेखा : अजय मेरे बेटे, आज तू न होता तो नरेंद्र का क्या हाल होता? *(सिसकी)*

मिसेज मेहता : *(हँसकर)* अरे तो दोस्त होकर इतना भी न करता रेखा बहन, फिर दोस्ती का मतलब ही क्या रहा, अगर मुसीबत में दोस्त दोस्त के काम न आए।

रेखा : नहीं, आज मैं अपने साथ बाजार ले जाऊँगी अजय को। और इसे इसके मन का शानदार इनाम खरीदूँगी।

इंस्पेक्टर : शानदार इनाम तो अजय को प्रधानमंत्री से मिलेगा।

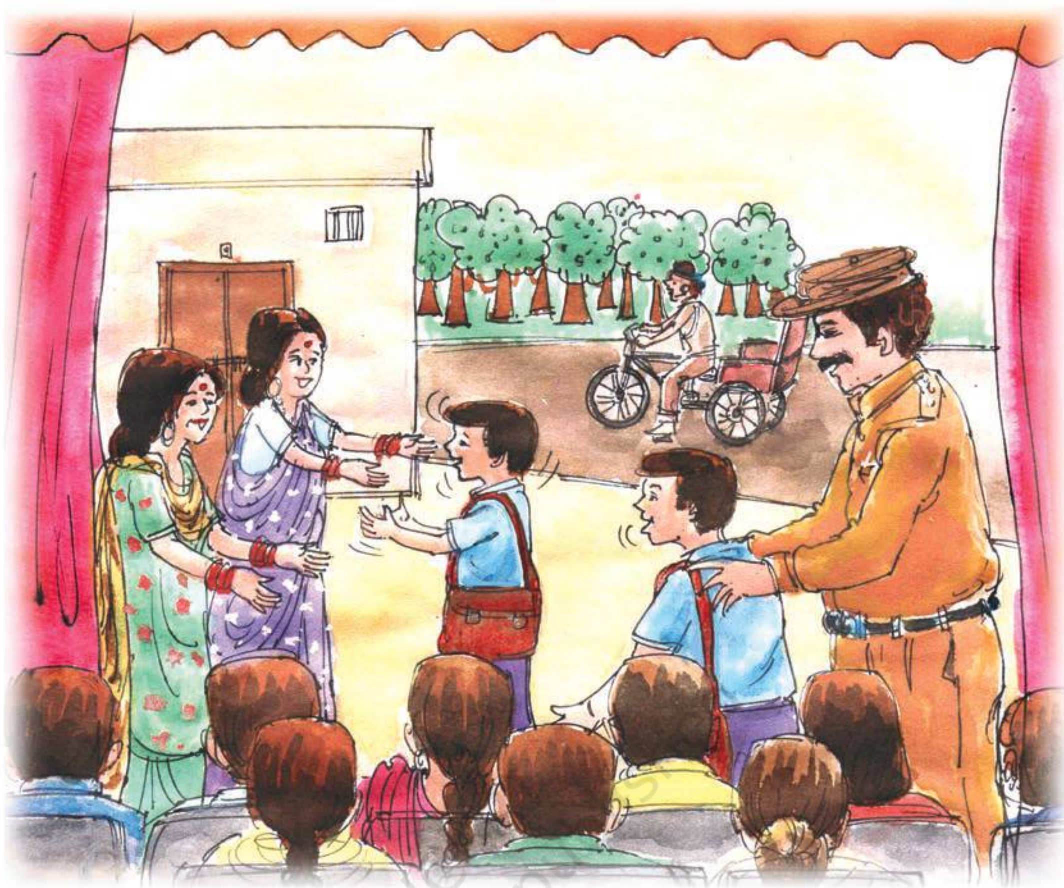

सब *(एक साथ)* : क्या?

इंस्पेक्टर : जी हाँ, हर साल हमारी सरकार देश के बहादुर बच्चों को उनके साहसिक कार्य के लिए पुरस्कार देती है—इस बार अजय का नाम उनमें होगा। अच्छा तो आज्ञा दीजिए...आओ अजय बेटे, एक बार फिर पीठ ठोंक दूँ तुम्हारी!

अजय : थैंक्यू इंस्पेक्टर साहब...पर अभी तो आपकी पहली बार की ठोंकी हुई ही मेरी पीठ दर्द कर रही है...

मिसेज मेहता : *(प्यार से)* चुप *(सब हँसते हैं)!*

– सूर्यबाला

अभ्यास

शब्दार्थ

लटके भरी	–	नाटकीय ढंग की आवाज़
चूरन	–	खट्टे-मीठे पदार्थों का खाने योग्य चूर्ण
तबियत	–	स्वास्थ्य
मशक्कत	–	मेहनत
शामत	–	आफ़त, मुसीबत
जलसा	–	समारोह

1. पाठ से

(क) नरेंद्र के सारे पैसे क्यों खत्म हो गए?

(ख) अजय ने नरेंद्र को क्या और क्यों समझाया?

(ग) अजय के अन्य दोस्तों ने नरेंद्र के बारे में क्या कहा और क्यों?

2. क्या होता?

(क) अगर नरेंद्र के पास फ़ीस के पैसे न होते?

(ख) अगर नरेंद्र अजय की यह बात मान लेता कि इस आदमी से लाली पॉप लेना बिल्कुल ठीक नहीं।

(ग) अगर अजय तीसरे लड़के की यह बात मान लेता कि "अरे तू घर जा नरेंद्र को जानता नहीं?"

(घ) अगर नरेंद्र की मुलाकात छुट्टी के बाद अजय से नहीं होती?

© NCERT not to be republished

3. विश्वास और डर

"नरेंद्र ज़रा शरारती है न इसी से डर लग रहा है।"

(क) नरेंद्र की माँ रेखा अजय की माँ से ऐसा क्यों कहती है?

(ख) नरेंद्र में ऐसा कौन-सा गुण होता जिससे उसकी माँ नहीं डरती और अजय की माँ से यह नहीं कहती कि नरेंद्र ज़रा शरारती है।

"घबराइए नहीं, रेखा जी-देखिए मेरा बेटा भी तो है लेकिन अजय पर तो मुझे पूरा विश्वास है"

(ग) अजय की माँ नरेंद्र की माँ से ऐसा क्यों कहती है?

4. सैर-सपाटा, खेल-तमाशा

पढ़ने-लिखने या अन्य काम करने के लिए भी अच्छे स्वास्थ्य का होना ज़रूरी है। इसलिए लोग सैर-सपाटा और खेल-तमाशे पर भी ध्यान देते हैं।

अब तुम बताओ कि

(क) तुम या तुम्हारे दोस्त सैर-सपाटे के लिए क्या-क्या करते हैं?

(ख) तुमने अब तक जिन-जिन खेल-तमाशों में भाग लिया है या उसे देखा है, उसकी सूची बनाओ।

5. बनाना

"मैंने सोचा मम्मी तो रोज़ मुझे चाय-नाश्ता कराती है, आज मैं घर जल्दी पहुँचकर उसे चाय बनाकर पिलाऊँ।"

ऊपर के वाक्य को पढ़ो और बताओ कि-

(क) क्या तुम चाय बनाना जानते हो? और क्या-क्या बनाना जानते हो?

(ख) अगर तुम अपने खाने-पीने की कोई भी चीज़ बनाना नहीं जानते तो तुम्हें जो चीज़ सबसे अधिक पसंद हो, उसको बनाना सीखो और उसकी विधि को लिखकर बताओ।

6. पता करो

नीचे तालिका दी गई है। पता करो कि खाने की उन चीज़ों में कौन से पोषक तत्व होते हैं। उसे तालिका में लिखो।

क्रम सं.	खाने की चीज़ों	पोषक तत्व
(क)	पालक	....
(ख)	गाजर	....
(ग)	दूध	....
(घ)	संतरा	....
(ङ)	दालें	....

7. मुहावरे की बात

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं जिनमें उपयुक्त मुहावरे भरने से ही वह पूरा हो सकता है। उन्हें पूरा करने के लिए मुहावरे भी दिए गए हैं। तुम सही मुहावरे से वाक्य पूरे करो।

© NCERT not to be republished

आग बबूला होना, सकपकाना, दबे पाँव, शामत आना, पीठ ठोकना

(क) चोर .... घर में घुस आया।

(ख) देर से आने पर मम्मी .... गईं।

(ग) सरसराहट की आवाज़ सुनकर अजय .... ।

(घ) ऊधम मचाने पर बच्चों की .... ।

(ङ) नरेंद्र की जान बचाने पर उसकी मम्मी ने अजय की .... ।

8. तुम्हारा स्कूल

(i) तुम्हारे स्कूल में जो गतिविधि कराई जाती हो और वह इस तालिका में हो तो उसके सामने (✓) या (×) का निशान लगाओ।

क्रम सं.	गतिविधि	✓ या ×
(क)	नाटक	....
(ख)	खेल-कूद	....
(ग)	गीत-संगीत	....
(घ)	नृत्य	....
(ङ)	चित्रकला	....

© NCERT not to be republished

नौवाँ पाठ

एक खिलाड़ी की कुछ यादें

60 साल की बात करने से पहले मैं कुछ साल और पीछे जाना चाहता हूँ। लाहौर को याद करना चाहता हूँ, जब मैं बैडमिंटन चैंपियन था। स्कूल ग्राउंड में एक दिन ध्यानचंद को हॉकी खेलते देखा। उसके बाद मैं हॉकी का ही हो गया। यह बताता है कि बड़े खिलाड़ी को देखना आप पर कितना असर डालता है।

1948 ओलंपिक से पहले हालात बहुत खराब थे। हमें भी लाहौर से भागना पड़ा था। किसी तरह बंबई (मुम्बई) में कैंप लगा। सब कुछ बिखरा हुआ था। हमारी टीम में कोई घर ऐसा नहीं था जहाँ कोई ट्रैजडी न हुई हो। दिमाग खेल से ज़्यादा भारत-पाकिस्तान के अलगाव और ट्रैजडी पर था।

हम लंदन पहुँचे। वहाँ भी विश्व युद्ध के बाद के हालात थे। शहर सँभल नहीं पाया था। बिल्डिंग में गोलियों के निशान दिखाई देते थे। ओलंपिक ड्रॉ निकला। भारत और पाकिस्तान अलग-अलग हॉफ में थे। सबको यही लग रहा था कि इन्हीं दोनों मुल्कों का फाइनल होगा। सेमीफाइनल में एक दिन हमें हॉलैंड और पाकिस्तान को इंग्लैंड से खेलना था। वेंबली स्टेडियम था जहाँ आमतौर पर फुटबॉल होता था। बारिश के बीच हम बड़ी मुश्किल से हॉलैंड को 2-1 से हरा पाए। इंग्लैंड ने

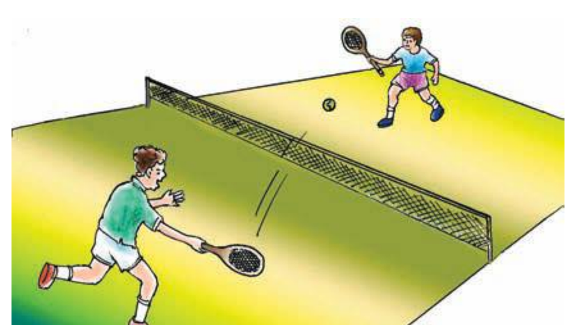

© NCERT not to be republished

पाकिस्तान को हरा दिया। अब इंग्लैंड से फाइनल था। क्वीन मौजूद थीं। हमने इंग्लैंड को 4–0 से हराया। हमारी टीम में कोई ऐसा नहीं था जिसकी आँख में आँसू न हों। उसी मुल्क में आकर हम जीते थे, जिसने हम पर राज किया। उसी के घर में हराया था। पहली बार विश्व स्तर पर कहीं जन–गण–मन बजा। हमें गर्व है कि यह इंग्लैंड में हुआ। इससे बड़ा लम्हा नहीं हो सकता। सारे दुख–दर्द भूल गए थे। आज़ाद भारत ने पहली बार दुनिया को दिखाया था कि वह क्या कर सकता है।

मुझे अफ़सोस है कि उसके बाद हॉकी का स्तर गिरा है। गिरावट सिर्फ़ हॉकी में ही नहीं, कई खेलों में है। कुल मिलाकर टीम गेम की हालत खराब हुई है। व्यक्तिगत खेलों में ज़रूर सफलताएँ मिली हैं। विश्वनाथन आनंद हैं, सानिया मिर्जा हैं। लेकिन उन्हें ऊपर लाने में कोई सिस्टम काम नहीं आया। यह उनकी अपनी मेहनत और परिवार के सपोर्ट का नतीजा है। मैं यही कहना चाहता हूँ कि सिस्टम गड़बड़ है। इसे ठीक करना पड़ेगा। बेसिक सुविधाएँ देनी ही पड़ेंगीं। जैसे, आपको हॉकी खेलने के लिए सिंथेटिक टर्फ ज़रूर चाहिए। लेकिन हमारे मुल्क में कितने हैं।

© NCERT not to be republished

अंग्रेज़ों के समय में एक बात अच्छी थी कि हर स्कूल में खेल बहुत ज़रूरी था। तब खेलना उतना ही ज़रूरी था, जितना पढ़ना । लेकिन यह बदला। खेल खास जगह नहीं पा सका। कुछ बदलाव है। लेकिन इतना काफी नहीं है। हर स्कूल में मैदान ज़रूरी हैं। आबादी के साथ खेल की जगह खत्म होती जा रही है। हमारे समय में कोचिंग ज़रूर आज जैसी नहीं थी। सीनियर खिलाड़ी एक तरह से कोच होते थे। लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा कोचिंग और तकनीक के इस्तेमाल का क्या वाकई हमें फ़ायदा हुआ है? मेरा

मतलब यह है कि खिलाड़ियों में जज़्बा ज़रूरी है। शूटिंग में भारत ने तरक्की की है। क्रिकेट में कुछ सफलताएँ मिली हैं। लेकिन 60 साल में हम हॉकी सहित उन खेलों में पिछड़े हैं जिनमें सबसे आगे थे। जिनमें आगे आए हैं, वहाँ सबसे आगे नहीं हैं।

(देश के बेहतरीन हॉकी खिलाड़ियों में एक श्री केशवदत्त 1948 और 1952 की स्वर्ण विजेता ओलंपिक टीम का हिस्सा थे। इस समय वह कोलकाता में रहते हैं।)

–केशवदत्त

अभ्यास

शब्दार्थ

असर	–	प्रभाव	सिस्टम	–	व्यवस्था
हालात	–	स्थिति	कोचिंग	–	प्रशिक्षण, शिक्षण देना
ट्रैजडी	–	दुखांत घटना	जज़्बा	–	भाव, जोश
लम्हा	–	क्षण, पल	शूटिंग	–	निशानेबाज़ी

© NCERT not to be republished

1. पाठ से

(क) लेखक बैडमिंटन चैंपियन था। उसे हॉकी खेलने की प्रेरणा किससे और कैसे मिली?

(ख) इंग्लैंड से मैच जीतने के बाद सबकी आँखों में आँसू क्यों थे?

(ग) 'खिलाड़ियों में जज़्बा ज़रूरी है।' लेखक ने किस जज़्बे की बात की है? यह जज़्बा क्यों ज़रूरी है?

2. याद करना

"60 साल की बात करने से पहले मैं कुछ साल और पीछे जाना चाहता हूँ। लाहौर को याद करना चाहता हूँ।"

ऊपर के वाक्यों को पढ़ो और बताओ कि–

(क) लेखक 60 साल की बात करने के लिए क्या करना चाहता है?

(ख) तुम्हें अगर अपने तीन साल के हिंदी सीखने की बात को कहने को कहा जाए तो उसके लिए क्या-क्या करोगे?

(ग) क्या पिछली किसी बात को याद करने के लिए बार-बार रटना ज़रूरी होता है या सोच-समझ के साथ उस पर चर्चा, विचार और उसका आवश्यकतानुसार व्यवहार करना ज़रूरी होता है? तुम्हें जो भी उचित लगे उसे कारण सहित बताओ।

3. बिखरा हुआ

(क) पता करो कि कोई सामान, विचार और ध्यान क्यों बिखरता है?

(ख) उनके बिखरने से क्या-क्या होता है?

(ग) लेखक का दिमाग खेल से ज़्यादा भारत-पाकिस्तान के अलगाव और ट्रैजडी होने के कारण कैसी मुश्किलों में उलझा होगा?

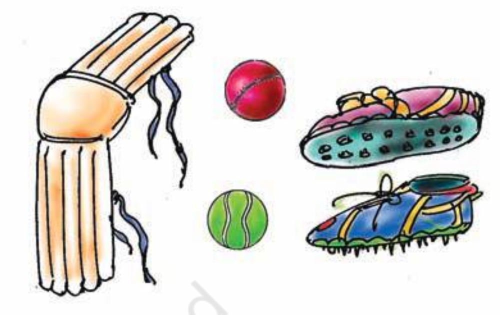

4. फ़िल्म और गीत

फ़िल्मों में दृश्यों के साथ गीत गाए जाते हैं। फिल्म के अतिरिक्त ऐसे बहुत से अवसर होते हैं जहाँ उसी के अनुकूल गीत भी गाए-बजाए जाते हैं। इस पाठ में भी 'पहली बार विश्व स्तर पर कहीं जन-गण-मन बजा' का उल्लेख हुआ है। तुम फ़िल्मों के कुछ मशहूर गीतों के बोलों की सूची बनाओ जो फ़िल्मों में दृश्यों के साथ तो गाए ही गए हों, जिन्हें विशेष अवसरों पर भी गाया बजाया जाता हो।

© NCERT not to be republished

5. खेल-कूद

नीचे कुछ खेलों के नाम दिए गए हैं। इन्हें खेलने के लिए किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होती है, उसकी सूची बनाओ।

(क) हॉकी ....

(ख) क्रिकेट ....

(ग) लॉन टेनिस ....

(घ) तैराकी ....

(ङ) तीरंदाज़ी ....

(च) कबड्डी ....

6. पता लगाओ

(क) क्रिकेट, फुटबॉल और हॉकी के मैदान में क्या अंतर होता है?

(ख) क्रिकेट, फुटबॉल और हॉकी में कितने-कितने खिलाड़ी होते हैं।

(ग) हॉकी से जुड़े शब्दों की सूची बनाओ।

7. तुम्हारी बात

(क) तुम्हें कौन-सा खेल पसंद है? अपने किसी स्थानीय खेल के नियम, खिलाड़ियों की संख्या और सामान के बारे में बताओ।

(ख) अपने जीवन की किसी ऐसी घटना के बारे में बताओ–

- जब तुम्हारी आँखों में आँसू आए हों।
- जब तुम अपना दुख-दर्द भूल गए हो।

8. खेल और सिनेमा

(क) खेलों पर बनी कुछ फ़िल्मों के बारे में पता लगाओ। उनमें से कुछ फ़िल्मों के नामों और उनमें दर्शाए गए खेलों के नामों को साथ मिलाकर एक सूची बनाओ। कक्षा में उन फ़िल्मों के बारे में बातचीत भी करो।

© NCERT not to be republished

9. जगह-जगह के खेल

कुछ खेल कुछ खास जगहों में ही खेले जा सकते हैं और कुछ खेल प्रचलन के कारण कुछ खास लोगों द्वारा ही खास स्थानों पर खेले जाते हैं। बताओ कि–

(क) कौन-से खेल अंदर खेले जाते हैं?

(ख) कौन-से खेल बाहर खेले जाते हैं?

(ग) कौन-से खेल अकेले खेले जाते हैं?

0848CH10

दसवाँ पाठ

बस की सैर

एक थी लड़की। नाम था उसका वल्ली अम्माई। आठ बरस की थी। उसे अपने घर के दरवाजे पर खड़े होकर सड़क की रौनक देखना बड़ा अच्छा लगता था।

वल्ली अम्माई को अपना नाम भी बड़ा अच्छा लगता था। वैसे, दुनिया में ऐसा कौन होगा जिसे अपना नाम पसंद न हो?

सड़क पर वल्ली अम्माई की उम्र का कोई साथी नहीं था। अपनी दहलीज पर खड़े रहने के अलावा वह कर भी क्या सकती थी? और फिर उसकी माँ ने उसे सख्त ताकीद कर रखी थी कि वह खेलने के लिए अपनी सड़क छोड़कर दूसरी सड़क पर न जाए।

सड़क पर सबसे ज्यादा आकर्षित करनेवाली वस्तु, कस्बे की बस थी जो हर घंटे उधर से गुजरती थी। एक दफा जाते हुए और एक दफा, लौटते हुए। हर बार नयी-नयी सवारियों से लदी

© NCERT not to be republished

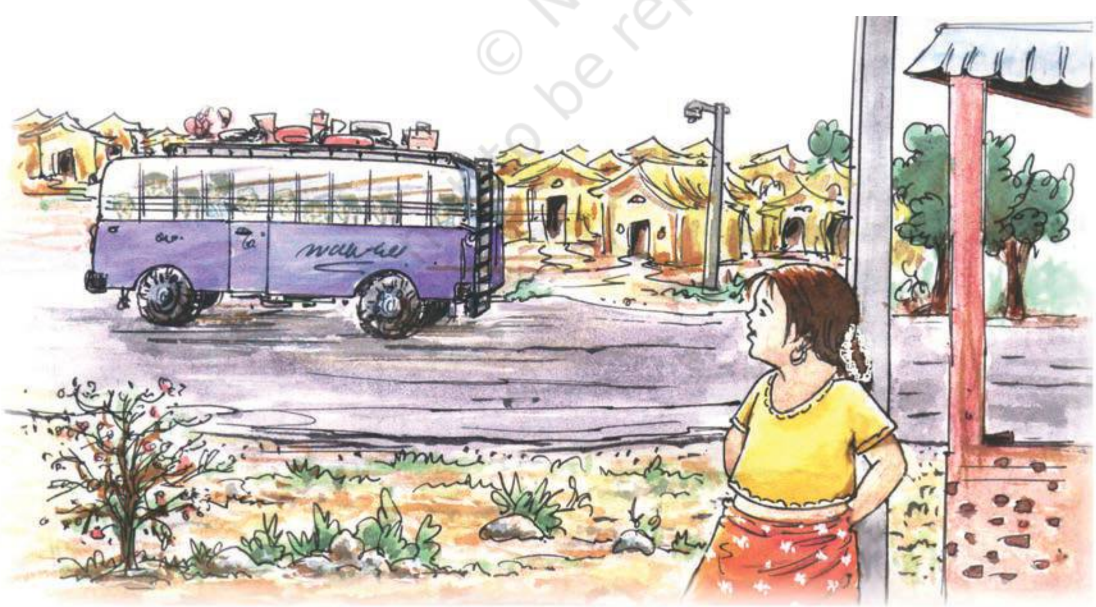

हुई बस का देखना, वल्ली अम्माई की कभी न खत्म होने वाली खुशी का खजाना था।

हर रोज़ वह बस को देखती। और एक दिन एक नन्हीं सी इच्छा उसके नन्हे से दिमाग में घुस कर बैठ गई। कम से कम एक बार तो वह बस की सैर करेगी ही। नन्हीं-सी इच्छा, बड़ी और बड़ी

होती चली गई। वल्ली बड़ी हसरत से उन लोगों की तरफ़ देखती जो सड़क के नुक्कड़ पर बस से उतरते-चढ़ते, जहाँ पर बस आकर रुकती थी। उनके चेहरे इसके दिल में सौ-सौ इच्छाएँ, सपने और आशाएँ जगा जाते। उसकी कोई सखी-सहेली जब उसे अपनी बस-यात्रा का किस्सा सुनाती, शहर के किसी दृश्य का हाल बताकर डींग हाँकती, तो वल्ली जल-भुन जाती "घमंडी...घमंडी" वह चिल्लाती। चाहे वल्ली और उसकी सहेलियों को इस शब्द का अर्थ मालूम नहीं था, फिर भी इसका बेधड़क इस्तेमाल करतीं।

दिनों-दिन, महीनों-महीने वल्ली ने बस-यात्रा से संबंधित छोटी-मोटी जानकारी गाँव से कभी-कभार शहर जानेवालों और बस में प्रायः सफ़र करते रहने वाले यात्रियों की आपसी बातचीत से प्राप्त कर ली थी। उसने आप भी कुछ लोगों से इस बारे में सवाल पूछे थे।

शहर उसके गाँव से कोई दस किलोमीटर दूर था। एक ओर का भाड़ा था तीस पैसे। इसका मतलब, जाने और लौटने—दोनों ओर के साठ पैसे। शहर तक पहुँचने में बस को पौन घंटा लगता था। शहर पहुँचकर, अगर वह बस में ही बैठी रहे और तीस पैसे और चुका दे तो उसी बस में बैठी-बैठी वापस भी आ सकती है। यानी अगर वह गाँव से दोपहर एक बजे चल दे तो पौने दो बजे शहर पहुँच जाएगी। और फिर उसी बस से वह अपने गाँव कोई तीन बजे लौट आएगी।

इसी प्रकार वह हिसाब पर हिसाब लगाती रही, योजना पर योजना बनाती रही।

एक दिन की बात है, जब यह बस गाँव की सीमा पार करके बड़ी सड़क पर प्रवेश कर रही थी, एक नन्हीं-सी आवाज़ पुकारती हुई सुनाई दी, "बस को रोको...बस को रोको।" एक नन्हा-सा हाथ हिल रहा था।

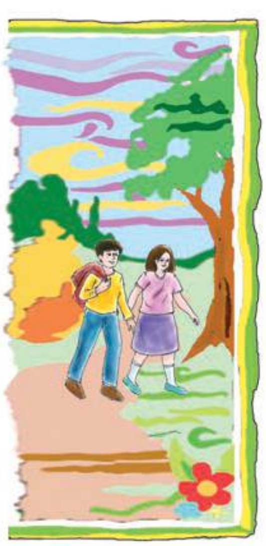

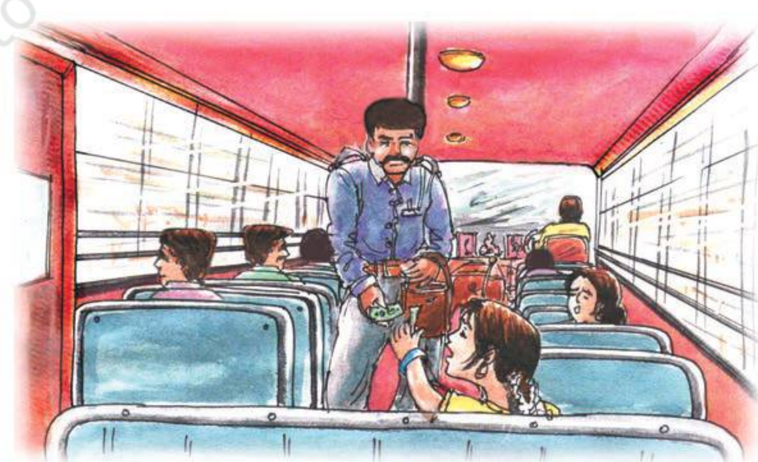

बस धीमी हो गई। कंडक्टर ने बाहर झाँका और कुछ तुनककर कहा, "अरे भई! कौन चढ़ना चाहता है? उनसे कहो कि जल्दी करें... सुना तुमने?"

"बस...मैं इतना जानती हूँ कि मुझे शहर जाना है...और यह रहा तुम्हारा किराया," उसने रेज़गारी दिखाते हुए कहा।

"ठीक! ठीक! पहले बस में चढ़ो तो!" कंडक्टर ने कहा और फिर उसे धीरे से उठाकर बस में चढ़ा लिया।

© NCERT not to be republished

"च च च...मैं अपने आप चढ़ूँगी...तुम मुझे उठाते क्यों हो?"

कंडक्टर बड़ा हँसोड़ था। "अरी मेम साहिब! नाराज क्यों होती हो?...बैठो...इधर पधारो..." उसने कहा।

"रास्ता दो भई रास्ता...मेम साहिब तशरीफ़ ला रही हैं।"

दोपहर के उस समय आने-जाने वालों की भीड़-भाड़ घट जाती थी। पूरी बस में कुल छह-सात सवारियाँ बैठी हुई थीं।

सभी मुसाफिरों की नज़र वल्ली पर थी और वे सब कंडक्टर की बातों पर हँस रहे थे।

वल्ली मन ही मन झेंप गई। आँखें फेर कर वह जल्दी से एक खाली सीट पर जा बैठी।

"गाड़ी चलाएँ? बेगम साहिबा।" कंडक्टर ने मुसकराकर पूछा। उसने दो बार सीटी बजाई। बस गरजती हुई आगे को बढ़ी।

वल्ली सब कुछ आँखें फाड़कर देख रही थी। खिड़कियों से बाहर लटक रहे परदे के कारण उसे बाहर का दृश्य देखने में बाधा पड़ रही थी। वह अपनी सीट पर खड़ी हो गई और बाहर झाँकने लगी।

इस समय बस एक नहर के किनारे-किनारे जा रही थी। रास्ता बहुत ही तंग था। एक ओर नहर थी और उसके पार ताड़ के वृक्ष, घास के मैदान, सुदूर पहाड़ियाँ और नीला आकाश! दूसरी ओर एक गहरी खाई थी, जिसके परे दूर-दूर तक फैले हुए हरे-भरे खेत! जहाँ तक नज़र जाती, हरियाली ही हरियाली!

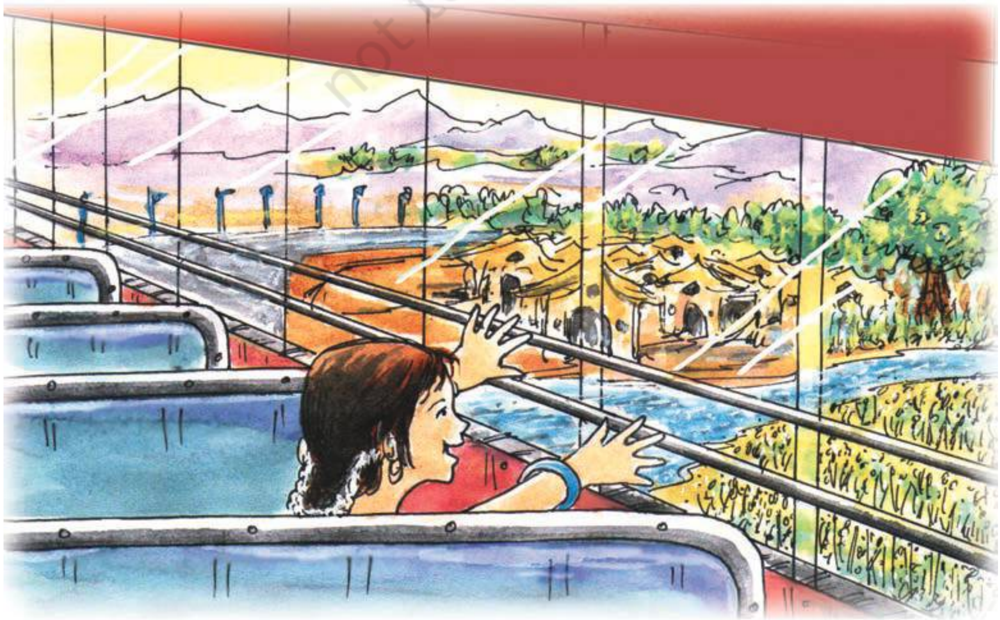

© NCERT not to be republished

अहा! यह सब कुछ कितना अद्‌भुत था! अचानक एक आवाज़ आई और वह चौंक गई। 'सुनो बच्ची!' वह आवाज़ कह रही थी, "इस तरह खड़ी मत रहो, बैठ जाओ!"

वल्ली बैठ गई और उसने देखा कि वह कौन था? वह एक बड़ी उम्र का आदमी था, जिसने उसी के भले के लिए यह कहा था। लेकिन उसके इन शब्दों से वह चिढ़ गई।

"यहाँ कोई बच्ची नहीं है", उसने कहा, "मैंने पूरा भाड़ा दिया है।"

कंडक्टर ने भी बीच में पड़ते हुए कहा, "जी हाँ, यह बड़ी बेगम साहिबा हैं। क्या कोई बच्चा अपना किराया अपने आप देकर शहर जा सकता है?"

वल्ली ने आँखें तरेरकर उसकी ओर देखा। "मैं बेगम साहिबा नहीं हूँ, समझे!... और हाँ, तुमने अभी तक मुझे टिकट नहीं दिया है।"

"अरे हाँ!" कंडक्टर ने उसी के लहजे की नकल करते हुए कहा, और सब हँसने लगे। इस हँसी में वल्ली भी शामिल थी।

कंडक्टर ने एक टिकट फाड़ा और उसे देते हुए कहा, "आराम से बैठो! सीट के पैसे देने के बाद कोई खड़ा क्यों रहे?"

"मुझे यह अच्छा लगता है", वह बोली।

"खड़ी रहोगी तो गिर जाओगी, चोट खा जाओगी—गाड़ी जब एकदम मोड़ काटेगी ...या झटका लगेगा। तभी मैंने तुम्हें बैठने को कहा है, बच्ची!"

"मैं बच्ची नहीं हूँ, तुम्हें बता दिया न!" उसने कुढ़कर कहा, "मैं आठ साल की हूँ।"

"क्यों नहीं...क्यों नहीं! मैं भी कैसा बुद्धू हूँ! आठ साल! बाप रे!"

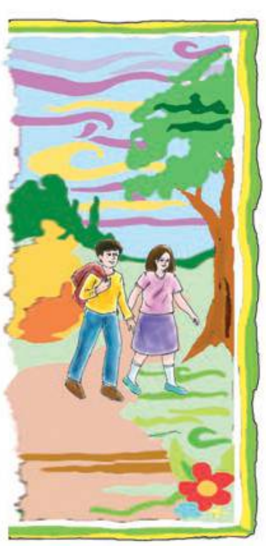

बस रुकी। कुछ नए मुसाफ़िर बस में चढ़े और कंडक्टर कुछ देर के लिए व्यस्त हो गया। वल्ली बैठ गई। उसे डर था कि कहीं उसकी सीट ही न चली जाए! एक बड़ी उम्र की औरत आई और उसके पास बैठ गई।

"अकेली जा रही हो, बिटिया?" जैसे ही बस चली, उसने वल्ली से पूछा।

"हाँ, मैं अकेली जा रही हूँ। मेरे पास मेरा टिकट है।" उसने अकड़ कर तीखा जवाब दिया।

"हाँ...हाँ, शहर जा रही हैं...तीस पैसे का टिकट लेकर" कंडक्टर ने सफाई दी।

"आप अपना काम कीजिए, जी!" वल्ली ने टोका, लेकिन उसकी अपनी हँसी भी छूट रही थी।

© NCERT not to be republished

कंडक्टर भी खिल-खिलाकर हँसने लगा।

"इतनी छोटी बच्ची के लिए घर से अकेले निकलना क्या उचित है?" बुढ़िया की बक-झक जारी थी। "तुम जानती हो, शहर में तुम्हें कहाँ जाना है? किस गली में? किस घर में?"

"आप मेरी चिंता न करें। मुझे सब मालूम है," वल्ली ने पीठ मोड़, मुँह खिड़की की ओर करके बाहर झाँकते हुए कहा।

यह उसकी पहली यात्रा थी। इस सफ़र के लिए उसने सचमुच कितनी सावधानी और कठिनाई से योजना बनाई थी। इसके लिए उसे छोटी-छोटी जो रेज़गारी भी हाथ लगी, इकट्ठी करनी पड़ी—उसे अपनी कितनी ही इच्छाओं को दबाना पड़ा...जैसे कि वह मीठी गोलियाँ नहीं खरीदेगी...खिलौने, गुब्बारे...कुछ भी नहीं लेगी। कितना बड़ा संयम था यह! और फिर विशेष रूप से उस दिन, जब जेब में पैसे होते हुए भी, गाँव के मेले में गोल-गोल घूमने वाले झूले पर बैठने को उसका कितना जी चाह रहा था।

पैसों की समस्या हल हो जाने पर, उसकी दूसरी समस्या यह थी कि वह माँ को बताए बिना घर से कैसे खिसके? लेकिन इस बात का हल भी कोई बड़ी कठिनाई पैदा किए बिना ही निकल आया। हर रोज़, दोपहर के खाने के बाद, उसकी माँ कोई एक बजे से चार-साढ़े चार बजे तक सोया करती थी। वल्ली का, बीच का यह समय गाँव के अंदर सैर-सपाटे करने में बीतता था। लेकिन आज वह यह समय गाँव से बाहर की सैर में लगा रही थी।

© NCERT not to be republished

बस चली जा रही थी—कभी खुले मैदान में से, कभी किसी गाँव को पीछे छोड़ते हुए और कभी किसी ढाबे को। कभी यह लगता कि वह सामने से आ रही किसी दूसरी गाड़ी को निगल जाएगी या फिर किसी पैदल यात्री को।...लेकिन यह क्या? वह तो उन सबको, दूर पीछे छोड़ती हुई बड़ी सावधानी-सफाई से आगे निकल गई। पेड़ दौड़ते हुए उसकी ओर आते दिखाई दे रहे थे... लेकिन बस रुकने पर वे स्थिर हो जाते और चुपचाप-बेबस से खड़े रहते।

अचानक खुशी के मारे वल्ली तालियाँ पीटने लगी। गाय की एक बछिया अपनी दुम ऊपर उठाए सड़क के बीचों-बीच बस के ठीक सामने दौड़ रही थी। ड्राइवर जितनी ज़ोर से भोंपू बजाता, उतना ही ज़्यादा वह डर कर बेतहाशा भागने लगती।

वल्ली को यह दृश्य बहुत ही मज़ेदार लगा और वह इतना हँसी, इतना हँसी कि उसकी आँखों में आँसू आ गए।

"बस...बस बेगम साहिबा!" कंडक्टर ने कहा, "कुछ हँसी कल के लिए रहने दो।"

आखिर बछिया एक ओर निकल गई। और फिर बस रेल के फाटक तक जा पहुँची। दूर से

रेलगाड़ी एक बिंदु के समान लग रही थी। पास आने पर वह बड़ी और बड़ी होती चली गई। जब वह फाटक के पास से धड़धड़ाती-दनदनाती हुई निकली तो बस हिलने लगी। फिर बस आगे बढ़ी और रेलवे-स्टेशन तक जा पहुँची। वहाँ से वह भीड़-भड़क्के वाली एक सड़क से गुजरी, जहाँ दोनों ओर दुकानों की कतारें थी। फिर मुड़कर वह एक और बड़ी सड़क पर पहुँची। इतनी बड़ी-बड़ी सजी हुई दुकानें, उनमें एक से एक बढ़कर चमकीले कपड़े और दूसरी चीज़ें। भीड़ की रेलम-पेल। वल्ली हैरान, भौंचक्की-सी, हर चीज़ को आँखें फाड़े देख रही थी।

बस रुकी, और सभी यात्री उतर गए।

"ए बेगम साहिबा! आप नहीं उतरेंगी क्या? तीस पैसे की टिकट खत्म हो गई।" कंडक्टर ने कहा।

"मैं इसी बस से वापस जा रही हूँ", उसने अपनी जेब में से तीस पैसे और निकालकर रेज़गारी कंडक्टर को देते हुए कहा।

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं, मेरा बस में चढ़ने को जी चाहा...बस!"

"तुम शहर देखना नहीं चाहती?"

"अकेली? न बाबा न। मुझे डर लगता है।" उसने कहा। उसके हाव-भाव पर कंडक्टर को बड़ा मज़ा आ रहा था।

"लेकिन तुम्हें बस में आते हुए डर नहीं लगा?" उसने पूछा।

© NCERT not to be republished

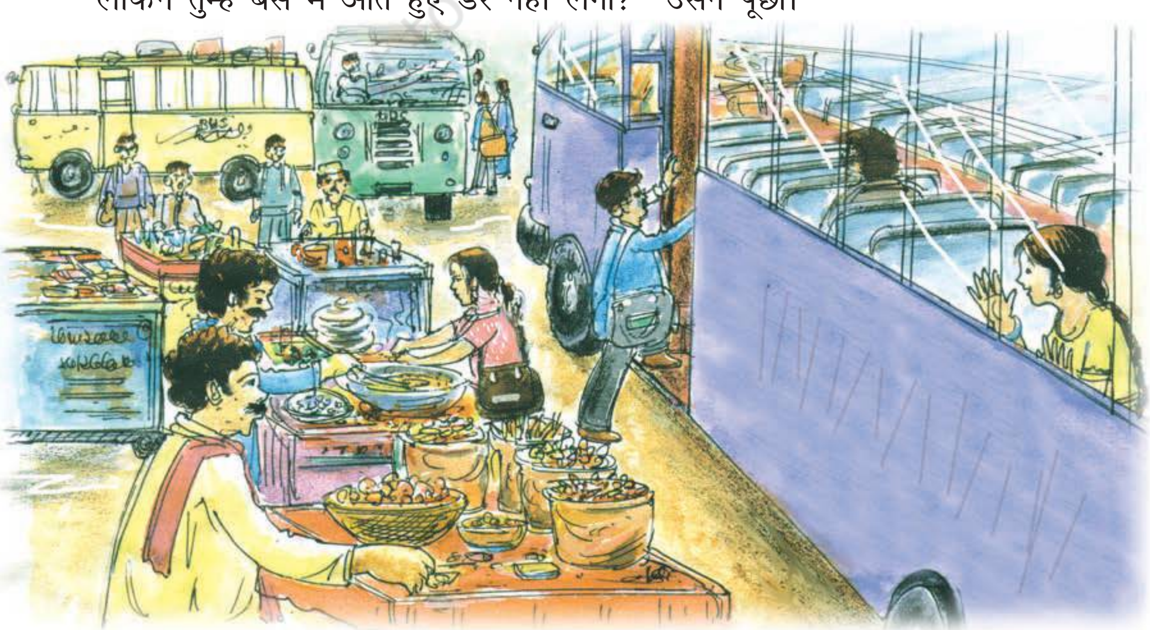

"इसमें डर की क्या बात है?" वल्ली ने जवाब दिया।

"अच्छा तो उतर कर...उस जलपान-गृह में हो आओ...कॉफी पी लो...इसमें डर की क्या बात है?"

"ऊँ हूँ...मैं नहीं पिऊँगी।"

"अच्छा तो क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ पकौड़े या चबैना लाऊँ?"

"नहीं, मेरे पास इनके लिए पैसे नहीं हैं...मुझे बस एक टिकट दे दो।"

"जल-पान के लिए तुम्हें पैसे की ज़रूरत नहीं। पैसे मैं दूँगा।"

"मैंने कह दिया न नहीं..." उसने दृढ़तापूर्वक कहा।

नियत समय पर बस फिर चल पड़ी। लौटती बार भी कोई खास भीड़ नहीं थी।

एक बार फिर वही दृश्य! लेकिन वह ज़रा भी नहीं ऊबी! हर दृश्य में उसे पहले जैसा मज़ा आ रहा था।

लेकिन अचानक-

ओह देखो...वह बछिया...सड़क पर मरी पड़ी थी। किसी गाड़ी के नीचे आ गई थी।

ओह! कुछ क्षण पहले जो एक प्यारा, सुंदर जीव था, अब अचानक अपनी सुंदरता और सजीवता खो रहा था। अब वह कितना डरावना लग रहा था।...फैली हुई टाँगें, पथराई हुई आँखें, खून से लथपथ...

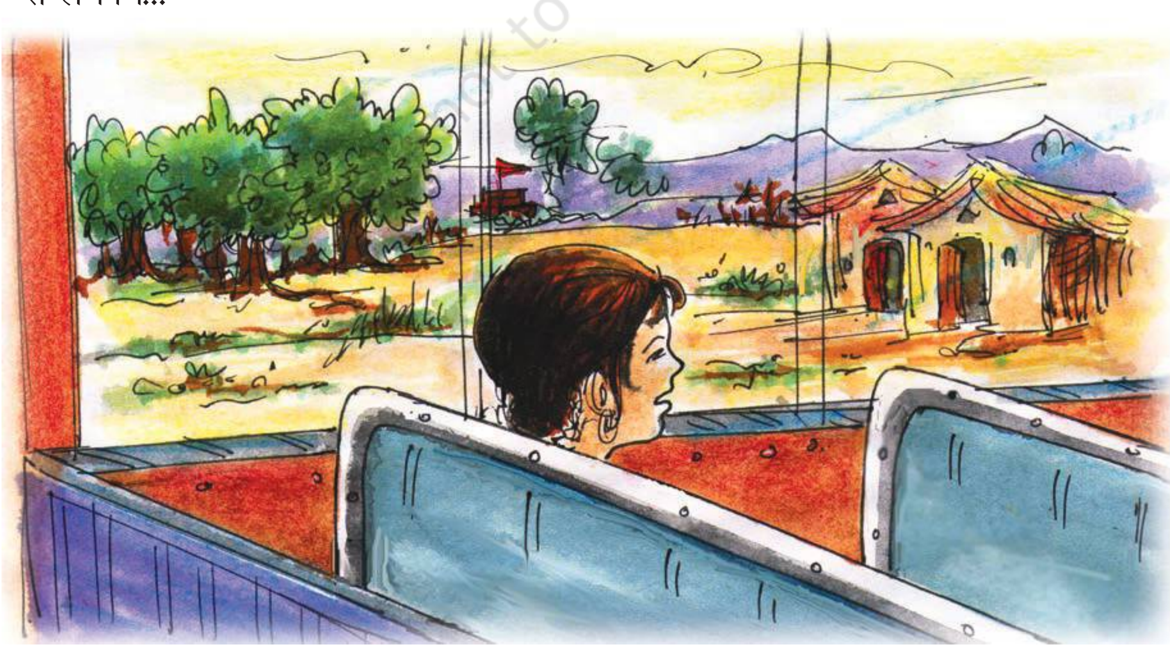

© NCERT not to be republished

ओह! कितने दुख की बात!

"यह वही बछिया है न जो बस के आगे-आगे भाग रही थी...जब हम आ रहे थे?" वल्ली ने कंडक्टर से पूछा।

कंडक्टर ने सिर हिला दिया। बस चली जा रही थी। बछिया का ख्याल उसे सता रहा था। उसका उत्साह ढीला पड़ गया था। अब खिड़की से बाहर झाँककर और दृश्य देखने की उसकी इच्छा नहीं रही थी। वह अपनी सीट पर जमी बैठी रही।

बस तीन बजकर चालीस मिनट पर उसके गाँव पहुँची। वल्ली खड़ी हुई। उसने जम्हाई लेकर कमर सीधी की और कंडक्टर को विदा कहते हुए बोली, "अच्छा, फिर मिलेंगे, जनाब!"

–वल्ली कानन
(अनुवाद–बालकराम नागर)

अभ्यास

शब्दार्थ

ताकीद – निर्देश   भाड़ा – किराया   मुसाफ़िर – यात्री

© NCERT not to be republished

1. कहानी से

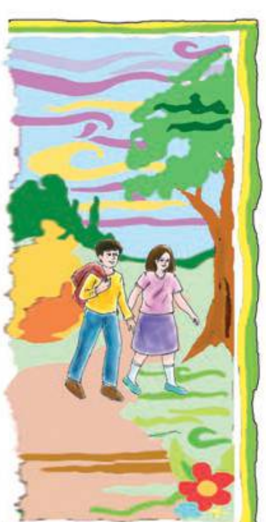

(क) शहर की ओर जाते हुए वल्ली ने बस की खिड़की से बाहर क्या-क्या देखा?
"अब तो उसकी खिड़की से बाहर देखने की इच्छा भी खत्म हो गई थी।"

(ख) वापसी में वल्ली ने खिड़की के बाहर देखना बंद क्यों कर दिया?

(ग) वल्ली ने बस के टिकट के लिए पैसों का प्रबंध कैसे किया?

2. क्या होता अगर

(क) वल्ली की माँ जाग जाती और वल्ली को घर पर न पाती?

(ख) वल्ली शहर देखने के लिए बस से उतर जाती और बस वापिस चली जाती?

3. छिप-छिपकर

"ऐसी छोटी बच्ची का अकेले सफ़र करना ठीक नहीं।"

(क) क्या तुम इस बात से सहमत हो? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

(ख) वल्ली ने यह यात्रा घर के बड़ों से छिपकर की थी। तुम्हारे विचार से उसने ठीक किया या गलत? क्यों?

(ग) क्या तुमने भी कभी कोई काम इसी तरह छिपकर किया है? उसके बारे में लिखो।

4. मना करना

"मैंने कह दिया न नहीं......।" उसने दृढ़ता से कहा।

वल्ली ने कंडक्टर से खाने-पीने का सामान लेने से साफ़ मना कर दिया।

(क) ऐसी और कौन-कौन सी बातें हो सकती हैं जिनके लिए तुम्हें भी बड़ों को दृढ़ता से मना कर देना चाहिए?

(ख) क्या तुमने भी कभी किसी को किसी चीज़/कार्य के लिए मना किया है? उसके बारे में बताओ।

© NCERT not to be republished

5. घमंडी

वल्ली को या उसके किसी साथी को घमंडी शब्द का अर्थ ही मालूम नहीं था।

(क) तुम्हारे विचार से घमंडी का क्या अर्थ होता है?

(ख) तुम किसी घमंडी को जानते हो? तुम्हें वह घमंडी क्यों लगता/लगती है?

(ग) वल्ली 'घमंडी' शब्द का अर्थ जानने के लिए क्या-क्या कर सकती थी? उसके लिए कुछ उपाय सुझाओ।

6. बचत

वल्ली ने एक खास काम के लिए पैसों की बचत की। बहुत से लोग अलग-अलग कारणों से रुपए-पैसे की बचत करते हैं। बचत करने के तरीके भी अलग-अलग हैं।

(क) किसी डाकघर या बैंक जाकर पता करो कि किन-किन तरीकों से बचत की जा सकती है?

(ख) घर पर ही बचत करने के कौन-कौन से तरीके हो सकते हैं?

(ग) तुम्हारे घर के बड़े लोग बचत किन तरीकों से करते हैं? पता करो।

हिंदी ने जिनकी ज़िंदगी बदल दी–मारिया नेज्यैशी

वह दिल्ली के सर्द जाड़ों की कोई आम सुबह ही थी जब जनपथ स्थित हंगेरियन सूचना एवं सांस्कृतिक केंद्र की जनसंपर्क अधिकारी हरलीन अहलूवालिया का फोन आया। हरलीन मुझे हंगरी की एक अंग्रेज़ हिंदी महिला विद्वान से मिलवाना चाहती थीं, जिन्हें हिंदी में किए गए उनके काम के चलते न केवल दुनिया भर में पहचान मिली थी, बल्कि अपने राष्ट्रपति अबुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम ने उन्हें सम्मानित भी किया था।

वह विदुषी तब चंद दिनों के लिए ही भारत में थीं और उसी शाम उन्हें दिल्ली से बाहर जाना था। लिहाज़ा सुबह 10 बजे का समय मुलाकात के लिए तय हुआ। भले ही वह महिला हिंदी के चलते जानी-पहचानी जा रही थीं लेकिन थीं तो अंग्रेज़ लिहाज़ा उनसे पूछे जाने वाले सवालों की फेहरिस्त तैयार करते वक्त हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का भी ध्यान रखा कि क्या पता कब संवाद के लिए इसकी ज़रूरत आ पड़े।

आश्चर्य, अंग्रेजी के सवालों की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। सुबह 10 बजे जब अपने फोटोग्राफर के साथ मैं हंगेरियन सूचना केंद्र पहुँचा तो हरलीन अपने कार्यालयी काम में व्यस्त थीं, हमें स्वागत कक्ष में बैठने को कहा गया। हम बैठकर अभी गरमा-गरम कॉफी की चुसकियाँ ले ही रहे थे कि एक भद्र अंग्रेज़ महिला आ पहुँची।

उन्होंने अभिवादन की शुरुआत हाथ जोड़कर 'नमस्ते' से की। फिर क्षमायाचना की कि दिल्ली के व्यस्त यातायात के चलते वह समय से नहीं पहुँच सकीं। हरलीन के आने के चंद मिनट बाद ही हम बातचीत में इतने मशगूल हो चुके थे कि औपचारिक परिचय की ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

वह डॉ. मारिया नेज्यैशी थीं। अप्रैल 1953 में हंगरी के बुडापेस्ट में जन्मी नेज्यैशी ने संस्कृत, लेटिन, प्राचीन यूनानी और भारत विज्ञान जैसे विषयों में एम. ए. कर संस्कृत व हिंदी में डाक्टरेट की उपाधि हासिल की।

© NCERT not to be republished

यूरोप हिंदी समिति की उपाध्यक्ष और इयोत्वोस लोरेंड यूनिवर्सिटी में हिंदी की विभागाध्यक्ष के तौर पर अकादमिक गतिविधियों से जुड़ी नेज्यैशी ने 3 दर्जन से भी अधिक किताबों का हिंदी से हंगेरियन व हंगेरियन से हिंदी में अनुवाद किया।

हमारी बातचीत के बीच छठे विश्व हिंदी सम्मेलन व जार्ज ग्रियर्सन सम्मान से सम्मानित नेज्यैशी को भारत, यहाँ की भाषा, यहाँ के लोग, यहाँ के शहर, यहाँ की फ़िल्में, यहाँ का साहित्य, यहाँ की राजनीति और यहाँ की संस्कृति कैसी लगती है? उनका खुद का बचपन कैसा था? उनका हिंदी से जुड़ाव कैसे हुआ? जैसे तमाम सवालों से होकर गुजरना पड़ा और सभी के जवाब उन्होंने बिंदास अंदाज में दिए।

लेकिन नेज्यैशी ने बातचीत की शुरुआत शिकायतों से की। उनका कहना था कि, "भारत बहुत बड़ा देश है। यहाँ की परंपरा बहुत समृद्ध है पर यहाँ के फ़िल्म वाले इतनी छोटी-छोटी बातों पर झूठ बोलते ही नहीं बल्कि झूठ दिखाते भी हैं कि उन्हें देखकर दुख होता है। आप फ़िल्म 'हम दिल दे चुके सनम' को ही लीजिए। इस पूरी फ़िल्म की शूटिंग हंगरी या यों कहिए कि हमारे शहर बुडापेस्ट में हुई थी। पर फ़िल्म में उसे इटली का शहर बता दिया गया। इस झूठ की ज़रूरत क्या थी? यों यह उस धरती के साथ भी नाइंसाफी है जिसके हुस्न को आपने कैमरे में कैद कर परदे पर दिखाया, पर जगह दूसरी बता दी।"

नेज्यैशी की इस शिकायत का कोई जवाब देते नहीं बना, लिहाजा यह कहकर कि हम आप की बात 'हम दिल दे चुके सनम' देखने वाले सभी दर्शकों के पास न भी पहुँचा पाए, तो अपने पाठकों तक ज़रूर पहुँचा देंगे ताकि उन्हें सच्चाई का पता चल जाए, क्षमा माँग ली। उसके बाद हिंदी से उनके जुड़ाव के बारे में मैंने जानना चाहा तो वह जैसे अपने बचपन में लौट गईं।

"हंगरी में संयुक्त परिवार की सोच नहीं है। पति-पत्नी व बच्चे। बच्चे भी केवल 20 साल की उम्र तक माता-पिता के साथ रह सकते हैं। कुल मिलाकर एक इकाई का छोटा परिवार। तकरीबन 30 साल पहले मेरे माता-पिता का तलाक हो गया था। दोनों ने दूसरा विवाह किया।"

"आज मेरी माँ की उम्र 81 साल है, पर वह अकेले रहती हैं। मेरी मौसी 86 साल की हैं, वह भी अकेली हैं। वे दोनों इस उम्र में भी स्वायत्त हैं। मैंने भी शादी नहीं की। काम व शादी में एक को चुनना था। बच्चे, पति व परिवार के साथ मैं वह नहीं कर पाती जो आज कर रही हूँ। मैंने हिंदी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।"

"दरअसल, मेरी जिंदगी के शुरुआती 20 साल बहुत छोटी-सी जगह पर बीते। मैं बचपन से ही इंसानी जीवन के शुरुआती दौर को जानने के लिए लालायित थी। इसीलिए मैंने ग्रीक, लेटिन, यूनानी और संस्कृत भाषाएँ पढ़ीं। एम. ए. की पढ़ाई के बाद मैं एक प्रकाशन संस्थान से भी जुड़ी। उस दौरान हंगरी में केवल 1-2 सज्जन ही हिंदी जानते थे।"

© NCERT not to be republished

"मेरे प्रोफ़ेसर ने मेरी रुचियों को देखकर मुझे हिंदी पढ़ने के लिए प्रेरित किया और एक बार जो मैं इससे जुड़ी तो जुड़ती चली गई। 1985 में मैं पढ़ाई के सिलसिले में पहली बार भारत आई और यहाँ 10 माह तक रुकी। एक लड़की, जिसने घर से कॉलेज की चारदीवारी ही देखी हो, उसने हिंदी की बदौलत पूरी दुनिया देख ली।"

"आज मैं विएना में पढ़ाती हूँ। मेरे एक शिष्य इमरे बांगा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाते हैं।"

"इंग्लैंड में हिंदी के तमाम जानकारों के बीच एक हंगेरियन का हिंदी पढ़ाने के लिए चुना जाना कम बड़ी बात नहीं है। जहाँ तक हंगरी की बात है तो मेरे समय में वहाँ न तो हिंदी भाषी लोग थे और न ही किताबें थीं। डॉ. हुकुम सिंह नामक एक गणितज्ञ ने हिंदी सीखने में मेरी काफी मदद की।"

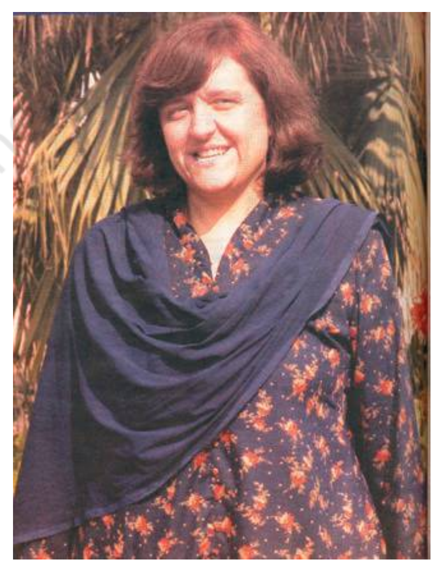

"आज हंगरी में मैंने हिंदी का पुस्तकालय बना रखा है, जिसकी किताबें भारतीय दूतावास ने उपलब्ध कराई हैं। मैं बुडापेस्ट में भारतीय पोशाक ही पहनती हूँ, जिसे देख मेरे छात्रों में भी इसके प्रति ललक बढ़ी है। कड़ाके की ठंड के चलते वहाँ सलवार-सूट ही ठीक है इसलिए साड़ी कम पहनते हैं।"

© NCERT not to be republished

भारत की कौन-सी चीज़ें आपको सबसे अच्छी...? वाक्य पूरा होता इससे पहले ही वह बोल पड़ीं, "यहाँ के मानवीय संबंध मुझे अच्छे लगते हैं। मेरे खुद के ढेरों रिश्ते यहाँ हैं, जो सालों-साल से बरकरार हैं। पिता, भाई व दोस्त की तरह। यहाँ के लेखकों ने मुझे प्रभावित किया। असगर वजाहत के साथ हंगरी में 5 साल तक साथ-साथ काम किया। अशोक वाजपेयी, राजेंद्र यादव, अशोक चक्रधर व जैनेंद्र कुमार जैसे लेखकों से मेरा संपर्क रहा। भारतीय खाने में पूरी, मटर-पनीर भी मुझे पसंद है।"

यहाँ का कौन-सा शहर व कौन-सी फ़िल्में आप को पसंद हैं? नेज्यैशी का जवाब था, "दिल्ली तो अपना शहर है, इसलिए कुछ कहूँगी नहीं। मैं 7 साल बाद दिल्ली आई तो सीएनजी का असर देखा। यहाँ का प्रदूषण कम हुआ है, हरियाली बढ़ी है। पांडिचेरी, मैसूर व उदयपुर भी मुझे काफी पसंद हैं। सच कहूँ तो जहाँ भीड़ कम है, हवा ज्यादा है, वे शहर मुझे पसंद हैं।"

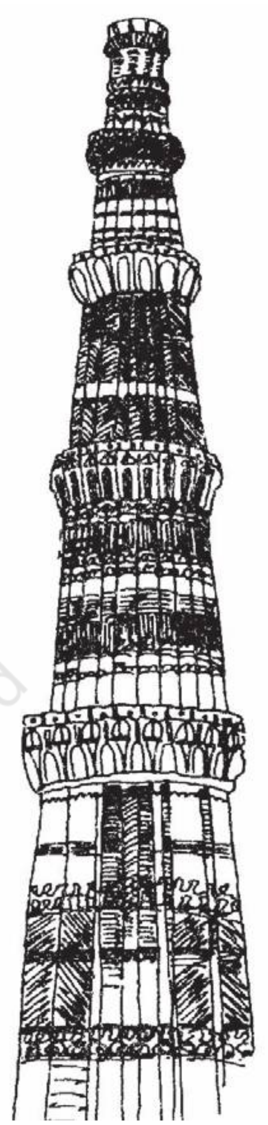

"रही फ़िल्मों की बात तो भारतीय फ़िल्में हंगरी में बहुत कम पहुँचती हैं। वैसे भी पूरे हंगरी में केवल 500 हिंदुस्तानी हैं। 10 साल पहले तो ये केवल 50 थे। जहाँ तक मेरी बात है तो मुझे फ़िल्म 'उमराव जान' काफी अच्छी लगी। नसीरुद्दीन शाह व शबाना आजमी मुझे अच्छे लगते हैं। शायद इसलिए कि ये कला फ़िल्मों से जुड़े कलाकार हैं। मनोरंजन की ज़रूरत तो इंसान को कभी-कभी पड़ती है पर कला फ़िल्में जिंदगी का हिस्सा हैं। आप इनसे मुँह कैसे मोड़ सकते हैं?"

धर्म और राजनीति के बारे में नेज्यैशी के खयाल पूरी तरह से तार्किक हैं। उनके मुताबिक, "मैं हर तरह के मंदिर, मस्जिद व चर्च गई हूँ, पर मैं न इधर की हूँ, न मैं उधर की। मैंने धर्म के बारे में काफी कुछ पढ़ा है और मैं इसके हर रूप से परिचित हूँ। लेकिन हर धर्म का आदर करते हुए भी मैं किसी एक धर्म को नहीं मानती।"

"रही राजनीति तो चूँकि मैं समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ पढ़ती हूँ, खबरिया चैनल देखती हूँ, इसलिए इसके बारे में थोड़ी बहुत समझ है। दरअसल, हंगरी में रहकर आप राजनीति के प्रभावों से बच नहीं सकते। वहाँ पिछले 15 सालों में काफी बदलाव हुए हैं। लेकिन भारत की राजनीति को समझने के लिए पूरी जिंदगी चाहिए।"

नेज्यैशी से आखिर में आधुनिकता को लेकर उनके विचारों के बारे में पूछा। अचरज यह कि उन्होंने आधुनिकता से असहजता जताई। उनका कहना था, "बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभाव इतना अधिक बढ़ गया है कि जगह की, सामान की खासियत और विविधता खत्म हो गई है।"

"हर जगह फास्ट फूड, एक जैसे साबुन, एक जैसा पेय, एक जैसे शैंपू... यह क्या है? यह ठीक है कि भूमंडलीकरण ने हमें जोड़ा है, इससे हम एक-दूसरे से जुड़े हैं और एक-दूसरे को समझ पा रहे हैं। पर लोग यह क्यों नहीं समझते कि पूरी धरती ही हमारी है। अगर हम इसे खराब करेंगे, तो इसका नतीजा सबको भुगतना होगा। कैटरीना, सुनामी, विल्मा, भूकंप और भी न जाने क्या क्या?"

"मैं एक अनुभव से अपनी बात खत्म करना चाहूँगी। एक बार मैं सूरीनाम के घनघोर जंगलों की तरफ़ गई, जहाँ से नदी मार्ग के अलावा गुजरने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था। हमने नाव पकड़ी, काफी अंदर तक गए। यानी उस इलाके तक गए जहाँ आबादी नहीं थी। बस्तियाँ, कल-कारखाने नहीं थे, उद्योग-धंधे नहीं थे पर वहाँ भी प्लास्टिक से बनी पानी की एक बोतल तैरती हुई मिली।"

"मैंने सुना है समुद्र में कहीं एक प्लास्टिक का द्वीप बन गया है, जो जल्द ही महाद्वीप बन जाएगा। हमें सोचना होगा कि इन चीजों का पर्यावरण पर क्या असर होगा। हम ऐसी दुनिया में जिएँगे कैसे? क्या ऐसे ही विश्व की कल्पना की थी हम सबने? क्या यही विश्व हमें मिलेगा?"

—जय प्रकाश पांडेय

अभ्यास

शब्दार्थ

फेहरिस्त	– सूची
अभिवादन	– शिष्टाचार का तरीका
क्षमा याचना	– माफ़ी माँगना
नाइंसाफ़ी	– अन्याय
ललक	– इच्छा
लालायित	– ललचाया हुआ
बदौलत	– कृपा से, दया से, मेहरबानी से
कड़ाके	– ज़ोरदार
बरकरार	– बनाए रखना
मुँह मोड़ना	– बेरुखी करना, ध्यान न देना
तार्किक	– तर्कपूर्ण
मुताबिक	– अनुसार
अचरज़	– आश्चर्य
खासियत	– विशेषता
विविधता	– कई तरह का
पेय	– पीने वाले पदार्थ
कैटरीना	– तूफ़ान का नाम
सुनामी	– समुद्री तूफ़ान
विल्मा	– तूफ़ान

© NCERT not to be republished

1. पाठ से

(क) मारिया को किस कार्य के लिए सम्मानित किया गया?

(ख) मारिया ने अनेक भाषाओं का अध्ययन क्यों किया?

(ग) मारिया बुडापेस्ट में कौन-सी भारतीय पोशाक पहनना पसंद करती हैं और क्यों?

2. अपनी-अपनी पसंद

नीचे दी गई तालिका में मारिया की और तुम अपनी पसंद लिखो?

क्र.सं.		मारिया की पसंद	तुम्हारी पसंद
(क)	भारतीय खाना	....	....
(ख)	शहर	....	....
(ग)	फ़िल्म	....	....
(घ)	कलाकार	....	....
(ङ)	भाषा	....	....
(च)	भारतीय पोशाक	....	....
(छ)	कार्यक्रम	....	....

3. क्षमायाचना और शिकायत

(क) इस भेंटवार्ता की शुरुआत में ही मारिया ने क्षमायाचना क्यों की?

(ख) उसने भेंटवार्ता की शुरुआत किस तरह की शिकायतों से की?

(ग) तुम भी कभी क्षमायाचना और शिकायतों का व्यवहार करते होगे। बताओं वह कौन-कौन से अवसर होते हैं और किन-किन चीज़ों के बारे में किस-किस से तुम क्षमा याचना और शिकायत करते हो?

© NCERT not to be republished

4. कुछ यह भी करो

मान लो कि तुम्हारे स्कूल और किसी अन्य स्कूल के बीच क्रिकेट मैच हुआ और उसमें तुम्हारे स्कूल की क्रिकेट टीम की जीत हुई हो। मगर, किसी समाचार-पत्र में खबरें तो सही रूप में तुम्हारे स्कूल और किसी अन्य स्कूल के बीच में खेले गए मैचों की छापी गई हो और उसके साथ जो तस्वीरें छापी गई हों, वह किसी दूसरे मैच में खेलने वाली टीम की हो। इसके लिए तुम शिकायत करना चाहो तो क्या-क्या करोगे?

5. झूठ और सच की बात

"यहाँ के फ़िल्म वाले इतनी छोटी-छोटी बातों पर झूठ बोलते ही नहीं बल्कि झूठ दिखाते भी हैं।"

ऊपर मारिया ने भेंटकर्ता से जो बात कही है उसको पढ़ो। अब बताओ कि-

(क) तुम इस बात से कहाँ तक और क्यों सहमत हो?

(ख) क्या सिनेमा में झूठ और सच की बातें दिखाना ज़रूरी होता है? यदि हाँ तो क्यों?

6. साथ-साथ

"हंगरी में संयुक्त परिवार की सोच नहीं है। पति-पत्नी व बच्चे। बच्चे भी केवल 20 साल की उम्र तक माता-पिता के साथ रह सकते हैं। कुल मिलाकर एक इकाई का छोटा परिवार।"

ऊपर के वाक्यों को पढ़ो और बताओ कि-

(क) भारत में बच्चे कब तक माता-पिता के साथ रह सकते है और क्यों?

(ख) तुम्हें अगर हंगरी या किसी अन्य देश में रहने की आवश्यकता हो तो किन-किन चीज़ों को साथ रखना चाहोगे और क्यों?

7. मातृभाषा

नीचे दिए गए शब्दों को अपनी मातृभाषा में लिखो और उन पर अपने मित्रों से चर्चा करो-

(क)	नमस्ते	–	....
(ख)	घर	–	....
(ग)	सड़क	–	....
(घ)	समाचार-पत्र	–	....
(ङ)	पानी	–	....
(च)	साबुन	–	....
(छ)	धरती	–	....
(ज)	जंगल	–	....
(झ)	सुबह	–	....

© NCERT not to be republished

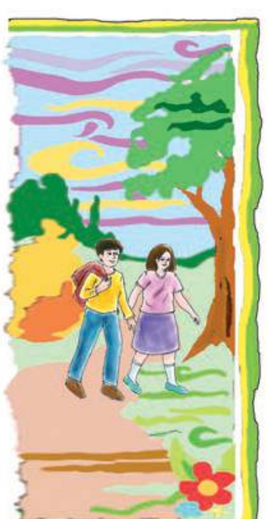

8. साफ़-सफ़ाई

(क) मारिया को समुद्र में प्लास्टिक के द्वीप और धरती को खराब करने वाली चीज़ों से चिंता हुई है। क्या तुम्हें भी अपने आस-पास में फैली गंदगी, कूड़े-कचरे के ढेर और तुम्हारे वातावरण को खराब करने वाली चीज़ों को देखकर चिंता होती है? कारण सहित उत्तर दो।

(ख) तुम अगर अपने आस-पास, घर, स्कूल व अपने परिवेश की साफ़-सफ़ाई करना चाहो तो क्या-क्या स्वयं कर सकते हो और क्या-क्या करने में तुम्हें अपने मित्रों, संबंधियों, शिक्षकों और अन्य लोगों की सहायता लेनी पड़ सकती है?

9. दो-दो समान अर्थ

नीचे एक शब्द के दो समान अर्थ दिए गए हैं। जैसे–

नमूना – धरती – पृथ्वी, धरा

अब तुम भी इन शब्दों के दो-दो समान अर्थ लिखो

(क) दोस्त – .... , ...

(ख) माँ – .... , ...

(ग) पानी – .... , ...

(घ) नारी – .... , ...

10. काफ़ी या कॉफ़ी?

'काफ़ी' शब्द का अर्थ है – पर्याप्त और 'कॉफ़ी' का अर्थ होता है एक पेय पदार्थ। दोनों शब्दों की वर्तनी में केवल थोड़ा-सा अंतर होने से अर्थ बदल गया है।

तुम दिए गए शब्दों को पढ़ो और वाक्य बनाओ।

(क) बाल, बॉल

(ख) हाल, हॉल

(ग) चाक, चॉक

(घ) काफ़ी, कॉफ़ी

11. नीचे दिए गए वाक्यों को सही शब्दों से पूरा करो

(क) रमा ने कमरे में फूल............. दिए (सज़ा/सजा)

(ख) माँ दही .... भूल गई। (ज़माना/जमाना)

(ग) घोड़ा .... दौड़ता है। (तेज़/तेज)

(घ) शीला ने मुझे एक .... की बात बताई। (राज/राज़)

(ङ) उदित सितार बजाने के .... में माहिर है। (फ़न/फन)

(च) कप में .... सी चाय बची थी। (जरा/ज़रा)

12. संचार माध्यमों की दुनिया

(क) तुम पढ़ने-लिखने में किन-किन संचार माध्यमों का उपयोग करते हो?

(ख) उनमें से तुम्हें सबसे उपयुक्त क्या और क्यों लगता है?

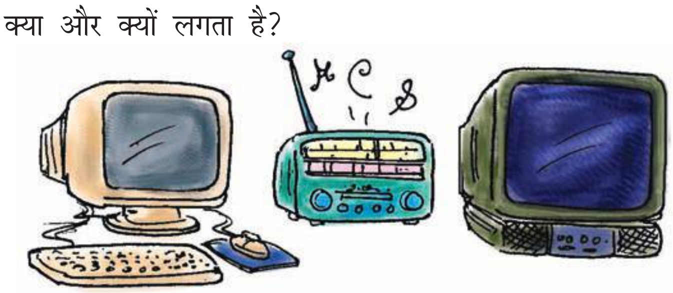

© NCERT not to be republished

आषाढ़ का पहला दिन

हवा का ज़ोर वर्षा की झड़ी, झाड़ों का गिर पड़ना
कहीं गरजन का जाकर दूर सिर के पास फिर पड़ना
उमड़ती नदी का खेती की छाती तक लहर उठना
ध्वजा की तरह बिजली का दिशाओं में फहर उठना
ये वर्षा के अनोखे दृश्य जिसको प्राण से प्यारे
जो चातक की तरह तकता है बादल घने कजरारे
जो भूखा रहकर, धरती चीरकर जग को खिलाता है
जो पानी वक्त पर आए नहीं तो तिलमिलाता है
अगर आषाढ़ के पहले दिवस के प्रथम इस क्षण में
वही हलधर अधिक आता है, कालिदास से मन में
तो मुझको क्षमा कर देना।

–भवानी प्रसाद मिश्र

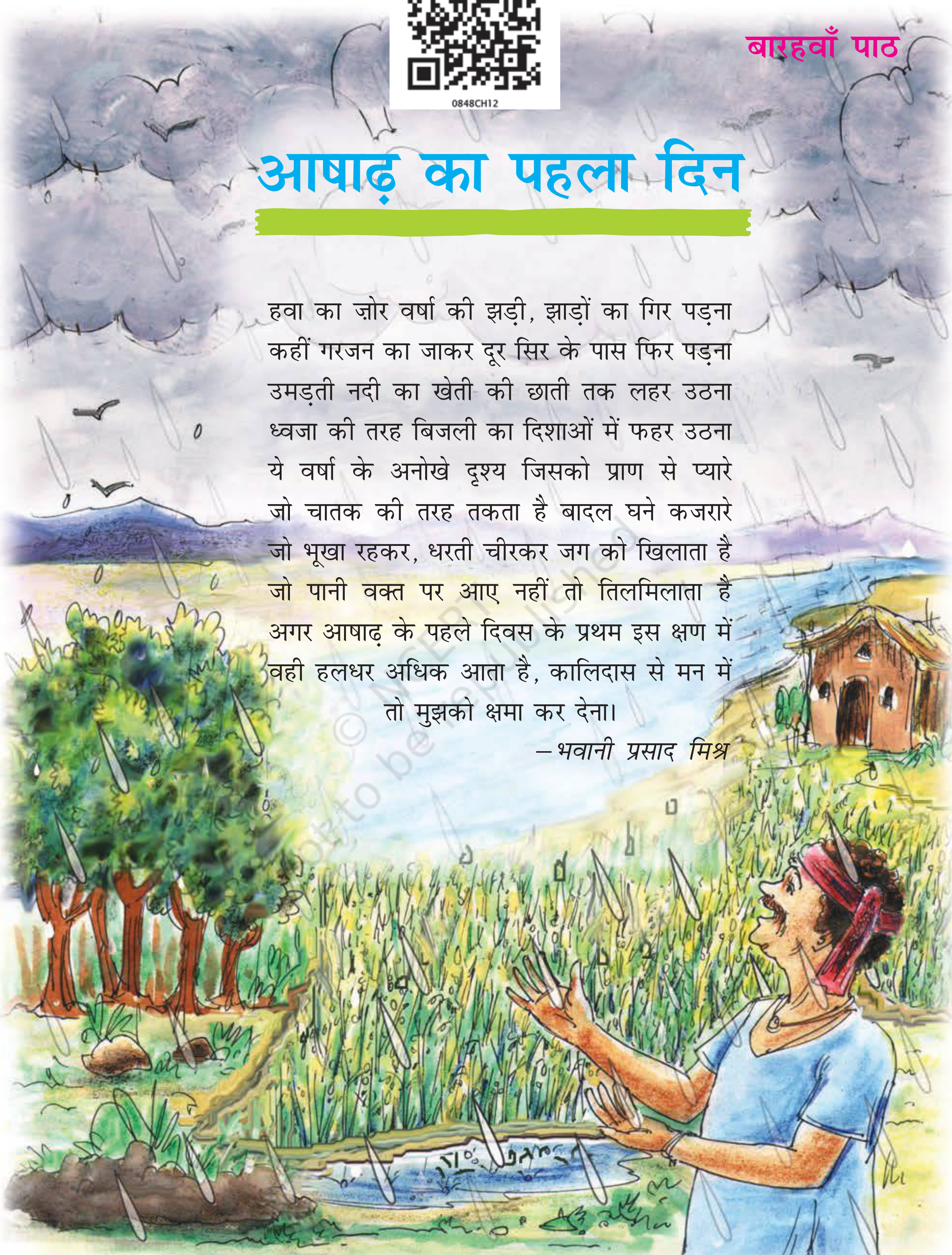

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

ज़ोर	–	तेज़ी	
झड़ी	–	हल्की किंतु लगातार वर्षा	
झाड़	–	कंटीले पौधों का समूह	
गरजन	–	बादलों की गड़गड़ाहट	
ध्वजा	–	झंडा	
फहरना	–	हवा में लहराना	
ताकना	–	देखना	
कजरारे	–	काजल जैसे काले	
तिलमिलाना	–	बेचैन होना	
क्षण	–	पल	
चातक	–	पपीहा (ऐसा कहा जाता है कि यह पक्षी केवल स्वाती नक्षत्र में होने वाली वर्षा का जल पीता है इसलिए सदा बादलों की ओर टकटकी लगाए रहता है।)	
हलधर	–	किसान	

© NCERT not to be republished

1. पाठ से

(क) किसान को बादलों का इंतज़ार क्यों रहता है?

(ख) कवि को वर्षा होने पर किसान की याद क्यों आती है।

(ग) कवि ने किसान की तुलना चातक पक्षी से क्यों की है?

2. पाठ से आगे

(क) कवि ने कविता में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। वर्षा ऋतु के बाद कौन-सी ऋतु आती है? उसके बारे में अपना अनुभव बताओ।

(ख) वर्षा ऋतु से पहले लोग क्या-क्या तैयारियाँ करते हैं? उनमें से कुछ लोगों के बारे में जानकारी एकत्र कर सूची बनाओ।

3. पहला दिन

(क) तुम अपनी कक्षा में जब पहले दिन आए थे तो उस दिन क्या-क्या हुआ था? अपनी याद से अपने अनुभव को दस वाक्यों में लिखकर दिखाओ।

(ख) तुम चाहो तो 'पहला दिन' शीर्षक पर कुछ पंक्तियों की कोई कविता भी लिखकर दिखा सकते हो।

4. सोचो-समझो और बताओ

क्या होगा–

(क) अगर वर्षा बिलकुल ही न हो।

(ख) अगर वर्षा बहुत अधिक हो।

(ग) अगर वर्षा बहुत ही कम हो।

(घ) वर्षा हो मगर आँधी-तूफ़ान के साथ हो।

(ङ) वर्षा हो मगर तुम्हारे स्कूल में छुट्टियाँ हों।

5. कल्पना की बात

कवि अपनी कल्पना से शब्दों के हेर-फेर द्वारा कुछ चीज़ों के बारे में ऐसी बातें कह देता है, जिसे पढ़कर बहुत अच्छा लगता है। तुम भी अपनी कल्पना से किसी चीज के बारे में जैसी भी बात बताना चाहो, बता सकते हो। हाँ, ध्यान रहे कि उन बातों से किसी को कोई नुकसान न हो। शब्दों के फेर-बदल में तुम पूरी तरह से स्वतंत्र हो।

6. तुम्हारा कवि और सबकी कविता

तुमने इस कविता में एक कवि, जिसने इस कविता को लिखा है, उसके बारे में जाना और इसी कविता में एक और कवि कालिदास के बारे में भी जाना। अब तुम बताओ–

(क) तुम्हारे प्रदेश और तुम्हारी मातृभाषा में तुम्हारी पसंद के कवि कौन-कौन हैं?

(ख) उनमें से किसी एक कवि की कोई सुंदर-सी कविता, जो तुम्हें पसंद हो, को हिंदी में अनुवाद कर अपने साथियों को दिखाओ।

7. नमूने के अनुसार

नीचे शब्दों के बदलते रूप को दर्शाने वाला नमूना दिया गया है। उसे देखो और अपनी सुविधानुसार तुम भी दिए गए शब्दों को बदलो।

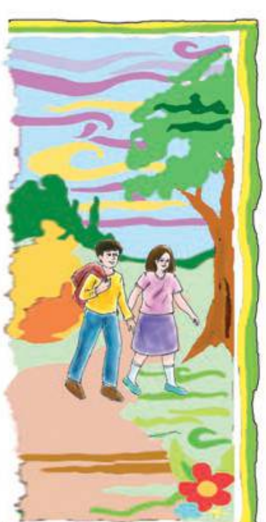

नमूना – गिरना – गिराना – गिरवाना

उठना

पढ़ना

करना

फहरना

सुनना

© NCERT not to be republished

0848CH13

तेरहवाँ पाठ

अन्याय के खिलाफ़

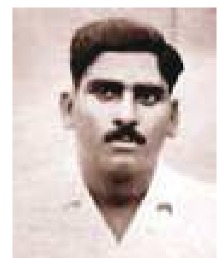

बात 1922 की है। उन दिनों अंग्रेज़ों का शासन था। भारत देश अंग्रेज़ों का गुलाम था। अपने लोगों को तरह-तरह के अत्याचार सहने पड़ते थे। अंग्रेज़ शासन ने अपने स्वार्थ पूरे करने के लिए भारत के लोगों को बहुत डरा-धमका कर रखा था। पर उनकी धमकियों के खिलाफ़ लड़ने की हिम्मत रखने वाले भी लोग थे। ऐसे ही लोग थे आंध्र प्रदेश के कोया आदिवासी और उनके नेता का नाम था श्रीराम राजू।

आंध्र के घने जंगलों के बीच रहने वाले कोया आदिवासी सीधी-सादी खेती के माध्यम से अपनी रोज़ी-रोटी जुटाया करते थे। पर जब से अंग्रेज़ों ने उनके बीच आकर अपना हक जमाया, उनका जीवन मुश्किल हो गया।

अंग्रेज़ों की योजना थी कि घने जंगलों और पहाड़ों को चीरती हुई एक सड़क बिछाई जाए। पर सड़क के निर्माण कार्य के लिए मज़दूर कहाँ से आएँगे? यह सवाल जब तहसीलदार महोदय के सामने आया तो उनकी निगाह कोया आदिवासियों पर पड़ी। तहसीलदार का नाम था बेस्टीयन। बेस्टीयन को शासन द्वारा सड़क बनवाने का काम सौंपा गया था।

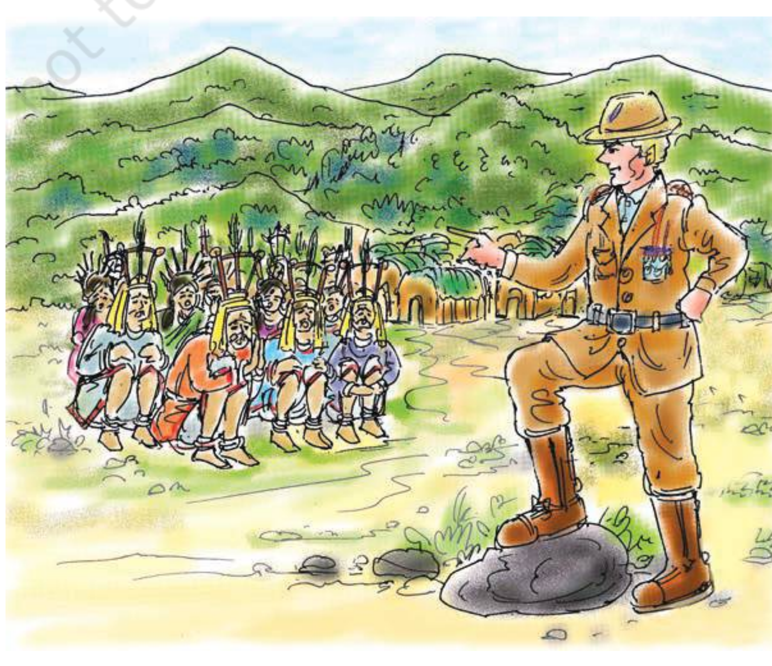

बेस्टीयन स्वभाव से बहुत अक्खड़ और क्रूर था। वह आदिवासियों के गाँवों में गया और बड़े घमंड के साथ खूब चिल्ला-चिल्लाकर बोला, "दो दिन में जंगल में सड़क बनाने का काम शुरू होगा। तुम सब लोगों को इस काम पर पहुँचना है। अगर नहीं पहुँचे तो ठीक नहीं होगा। अंग्रेज़ सरकार का हुक्म है, यह

© NCERT not to be republished

जान लो।" आदिवासी लोग चुप हो गए। वे उन घने जंगलों के बीच अकेले पड़े थे। वे कुछ पूछें तो किससे, कुछ करें तो क्या? किसी ने हिम्मत करके तहसीलदार से पूछना चाहा कि काम करेंगे तो बदले में क्या मिलेगा? तो बेस्टीयन का चेहरा तमतमा गया, "क्या मिलेगा? हुक्म बजाना नौकर का काम है। आगे से यह सवाल मत पूछना।"

आदिवासी सहम गए। काम पर जाने लगे। पर उनका मन नहीं मानता था। वे अपमान से अंदर ही अंदर घुट रहे थे और गुस्से से सुलग रहे थे।

उन्हीं दिनों एक साधु जंगलों में आकर रहने लगा था। उस साधु का नाम था, अल्लूरी श्रीराम राजू। श्रीराम राजू ने हाई स्कूल तक पढ़ाई की थी। उसके बाद अगली पढ़ाई छोड़कर वह 18 वर्ष की उम्र में ही साधु बन गया। जब वह उन जंगलों में रहने आया तो आदिवासी लोगों से अच्छी तरह हिल-मिल गया। लोग उसे अपने दुख-दर्द की कहानी सुनाते और पूछते कि कैसे अपने कष्टों से छुटकारा पाएँ।

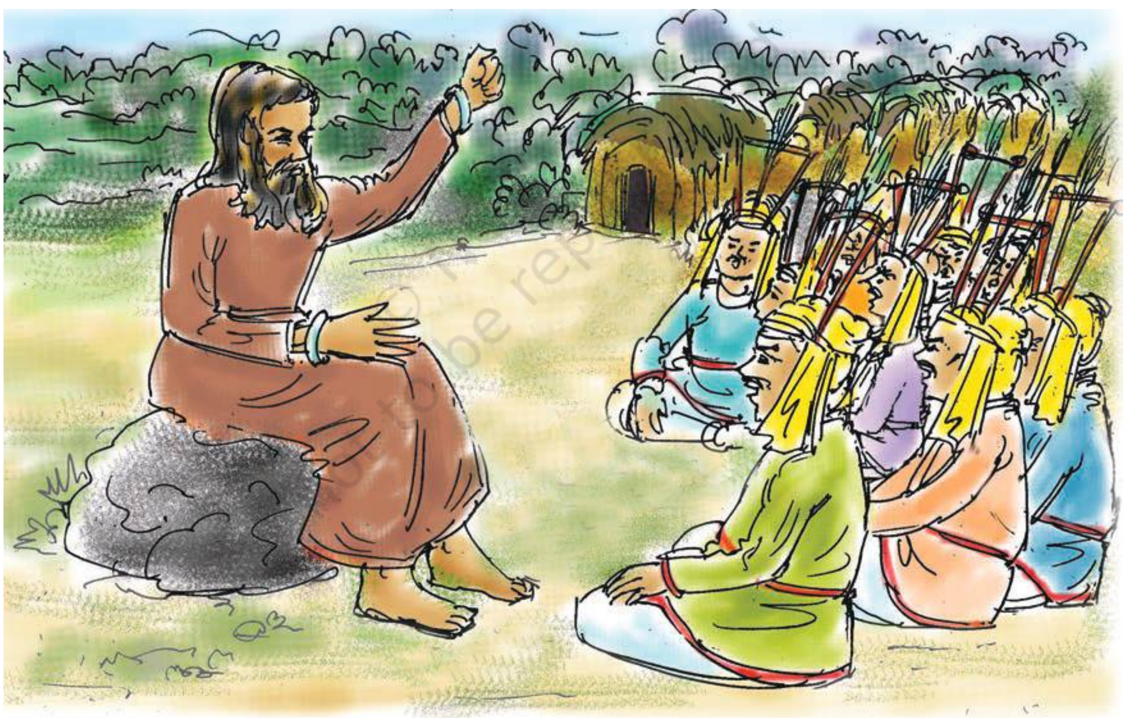

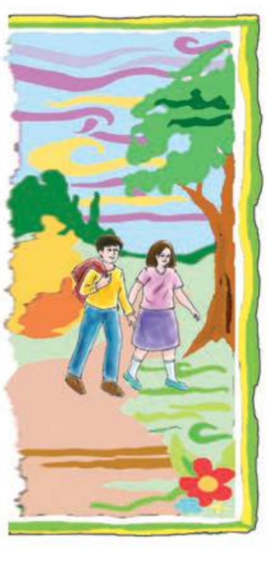

श्रीराम राजू ने आदिवासियों से कहा, "अत्याचार के सामने दबना नहीं चाहिए। तुम लोगों को काम पर जाने से मना करना चाहिए।"

उसकी बात सुनकर आदिवासियों में हिम्मत आई। श्रीराम राजू ने उन्हें यह भी बताया कि देश में और लोग भी अंग्रेज़ों के अत्याचार के खिलाफ़ लड़ रहे हैं। उनमें एक मशहूर नेता हैं, जिनका नाम गांधी जी है। गांधी जी का कहना है कि भारत के लोगों को अंग्रेज़ी सरकार का सहयोग नहीं करना चाहिए। अगर कोई अंग्रेज़ अन्याय करेगा तो हम अन्याय सहने से इंकार करेंगे।

यह सब सुनकर कोया आदिवासियों का दिल मजबूत हुआ। फिर क्या था, विद्रोह की ऐसी आग भड़की कि अंग्रेज़ों के होश उड़ गए। भोले-भाले आदिवासियों के मन में भरा सारा अपमान, दुख और क्रोध फूट के निकल पड़ा। भद्राचलम से परवथीपुरम तक पूरे इलाके के आदिवासी लोग अन्याय के खिलाफ़ लड़ने के लिए कूद पड़े। अंग्रेज़ सरकार के ऐसे छक्के छूटे कि आसपास के

राज्यों से सेना बुलानी पड़ी, पर अंग्रेज़ों की इतनी भारी सेना भी दो साल तक विद्रोह को दबा न पाई।

जब सँकरी पगडंडियों से सेना की टुकड़ी गुजर रही होती तो जंगलों में छिपे आदिवासी भारतीय सिपाहियों को गुजर जाने देते और जैसे ही अंग्रेज़ सारजेंट या कमांडर नज़र आते तो उन पर अचूक निशाना लगाते। आदिवासियों के विद्रोह से अंग्रेज़ सरकार इतना डरने लगी थी कि राजू के दल को आते देखकर थानों से पुलिस भाग जाती थी। श्रीराम राजू ने आदिवासियों से कह रखा था कि अंग्रेज़ों से लड़ो पर एक भी भारतीय सैनिक का बाल बाँका न होने पाए। अंग्रेज़ों की सेना में बहुत से भारतीय सिपाही भी थे। राजू के आदेश का सख्ती से पालन हुआ। जब वह पहाड़ों से कूच करता था, मानो उन्हें किसी का भय न हो। आदिवासी लोग पुलिस चौकियों या सेना पर हमला कर देते थे और उनके अस्त्र-शस्त्र लूटकर भाग जाते थे।

राजू ने एक कोने से दूसरे कोने तक गुप्त संदेश पहुँचाने के लिए गुप्तचरों का जाल फैला रखा था। अंग्रेजी सेना के आने-जाने के संदेश ऐसे पहुँचाए जाते कि किसी को कानों-कान खबर न हो। यह सब देखकर अंग्रेज़ों ने भी अपने दाँतों तले उँगली दबा ली।

जंगलों और पहाड़ों में राजू के लोग बड़ी फुर्ती से छिपते-फिरते। ऐसे इलाके में हथियारों से लदी अंग्रेज़ों की भारी-भरकम सेना अपने-आपको कमजोर महसूस करने लगती थी। राजू के लोगों को गाँव-गाँव का सहारा था। गाँव के लोग विद्रोहियों को शरण देते और लाख कोशिश करने पर अंग्रेज़ उनकी खबर नहीं लगा पाते। फिर अंग्रेज़ों को एक तरकीब सूझी। उन्होंने सोचा कि आदिवासियों को लड़ाई में तो हरा नहीं पाएँगे, अब इन्हें भूखे रखकर मारना पड़ेगा। अंदर जंगल के गाँवों में राशन लाने वाले सारे रास्ते बंद कर दिए गए। किसी को भी सामान का एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना मुश्किल हो गया। लोगों की बंदूकों के कारतूस खत्म हो गए। इसके कारण अंग्रेज़ों के सिपाही गाँवों में घुसकर लोगों को मारने-पीटने लगे। यहाँ तक की उगी हुई फसल को भी जलाया जाने लगा।

आदिवासियों की हिम्मत जवाब देने लगी। आखिर कब तक यह तकलीफ़ बर्दाश्त की जा सकती थी। राजू के कुछ साथी पुलिस की पकड़ में आ गए थे। एक बार राजू भी पुलिस की गिरफ्त में आकर बुरी तरह जख़्मी हो गया था। लोग परेशान होकर राजू के पास पहुँचते। राजू भी परेशान था। उससे उनका दुख देखा नहीं गया। राजू ने सोचा कि अगर मैं अंग्रेज़ों के सामने आत्म-समर्पण

© NCERT not to be republished

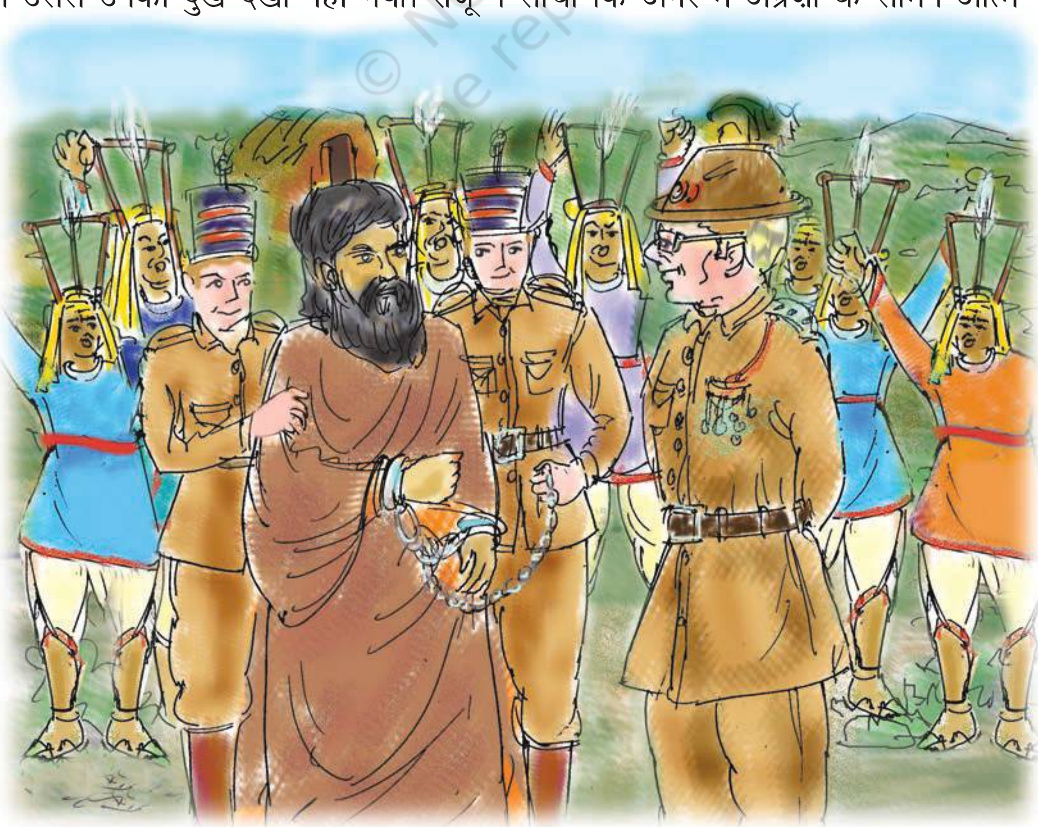

कर दूँ तो अंग्रेज़ इन हज़ारों लोगों को रोज़ सताना बंद कर देंगे। उसने देखा कि दो वर्षों के इतने लंबे संघर्ष के बाद लोगों में कठिनाइयों का सामना करने की तैयारी नहीं रह पाई है और अंग्रेज़ सरकार तो उन्हें भूखा मारकर ही छोड़ेगी।

यह सोचकर श्रीराम राजू अपने-आपको अंग्रेज़ों के हवाले सौंपने चला। सेना के मेजर गुडॉल, मम्पा गाँव में डेरा डाले हुए थे। राजू को गिरफ़्तार करके उसके सामने पेश किया गया। गिरफ़्तारी की खबर सुनकर आसपास के गाँवों के लोग बड़ी संख्या में वहाँ इकट्ठे होने लगे।

मेजर गुडॉल मन ही मन बहुत अधिक खुश हो रहा था। उसे कहाँ उम्मीद थी कि उनका शिकार खुद जाल में फँसने चला आएगा। राजू माँग कर रहा था कि उसे कचहरी में पेश किया जाए और कानून के हिसाब से उसके साथ बर्ताव हो। पर गुडॉल का कोई इरादा नहीं था कि कोर्ट-कचहरी के चक्कर में राजू को अपनी जान बचाने का ज़रा भी मौका मिले। बस, उसके इशारे पर एक सिपाही ने राजू पर गोली चलाई और उसका काम तमाम कर दिया गया।

इस तरह अल्लूरी श्रीराम राजू अपने लोगों की खातिर शहीद हुआ। इसके बाद कोया आदिवासियों का आंदोलन टूट गया। पर अंग्रेज़ सरकार ने अच्छा-खासा पाठ पढ़ लिया था। वे समझ गए थे कि आदिवासियों के साथ मनमर्जी नहीं की जा सकती। तब से आदिवासियों के हितों की रक्षा करने के लिए विशेष कोशिश करने का फैसला हुआ।

अपने देश के इतिहास में कोया आदिवासियों ने अन्याय के खिलाफ़ लड़ने की मिसाल स्थापित की।

—चकमक से

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

गुलाम	- किसी के अधीन, पराधीन	टुकड़ी	- समूह
हक	- अधिकार	अचूक	- खाली न जाने वाला
निगाह	- नज़र	सख्ती	- कड़ाई
क्रूर	- निर्दयी, दया नहीं करने वाला	फुर्ती	- तेज़ी
घमंड	- अभिमान	तरकीब	- उपाय
पगडंडी	- मनुष्यों के चलने से जंगल, खेत या मैदान में बना हुआ पतला रास्ता	मिसाल	- उदाहरण

1. पाठ से

(क) आंध्र के घने जंगलों में रहने वाले आदिवासियों के बीच अपना हक जमाने के लिए अंग्रेजों ने क्या किया?

(ख) श्री राम राजू कौन था? उसने अंग्रेज़ों के सामने आत्मसमर्पण क्यों किया?

(ग) अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए कोया आदिवासी क्या-क्या करते थे?

(घ) कोया आदिवासियों के विद्रोह को स्वतंत्रता संग्राम क्यों कहना चाहिए?

2. गाँधीजी की बात

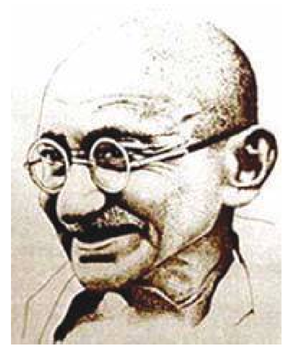

"भारत के लोगों को अंग्रेज़ सरकार का सहयोग नहीं करना चाहिए और उनका काम बंद कर देना चाहिए। अगर कोई अंग्रेज़ अन्याय करेगा तो हम अन्याय सहने से इंकार करेंगे।"

ऊपर श्रीराम राजू द्वारा आदिवासियों से गाँधी जी की कही हुई बात का उल्लेख हुआ है। गाँधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए बहुत सारी बातें कही थी। यह सब तुम्हें गाँधी जी पर लिखी गई किताबों, फ़िल्मों और अन्य जगहों पर मिल सकता है। तुम उनकी कही हुई बातों में जो बहुत महत्वपूर्ण समझो उसको अपने साथियों को बताओ।

3. देशभक्तों के नाम

तुमने इस पाठ में भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले दो व्यक्तियों के नामों को जाना। एक गाँधी जी और दूसरा श्रीराम राजू। पता करो कि भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वालों में तुम्हारे प्रदेश से कौन-कौन व्यक्ति थे। उनमें से किसी एक के बारे में कक्षा में चर्चा करो।

© NCERT not to be republished

4. क्या ठीक होगा?

(i) "दो दिन में जंगल में सड़क बनाने का काम शुरू होगा। तुम सब लोगों को इस काम पर पहुँचना है। अगर नहीं पहुँचे तो ठीक नहीं होगा।"

(ii) "काम करेंगे तो बदले में क्या मिलेगा।"

ऊपर के कथनों में पहला कथन तहसीलदार बेस्टीयन का है जो आदिवासियों के गाँवों में जाकर चिल्ला-चिल्लाकर बोला था और दूसरा कथन आदिवासियों में से किसी का है जो तहसीलदार से पूछना चाहा था। अब तुम सोचकर बताओ कि–

(क) तुम्हारे विचार से बेस्टियन का कथन ठीक होगा?

(ख) आदिवासियों में से किसी के द्वारा कहा गया वह कथन कैसा है? तुम्हारे विचार से क्या ठीक होगा?

(**संकेत:**–तुम अपनी पसंद से कथन को अपने ढंग से लिख सकते हो)

5. पता करो

(i) सड़क बनाने में किन-किन सामानों की ज़रूरत होती है? पता करके लिखो।

(ii) इन प्रदेशों में कौन-कौन से आदिवासी रहते हैं? पता करके लिखो?

(क) झारखंड

(ख) छत्तीसगढ़

(ग) उड़ीसा

(घ) मिजोरम

(ङ) अंडमान निकोबार द्वीप समूह

6. तुम्हारे विचार से

(क) राजू हाई स्कूल तक पढ़ाई करने के बाद जंगलों में रहने क्यों आया होगा?

(ख) राजू के शहीद होने का आदिवासियों के आंदोलन पर क्या असर हुआ होगा?

7. खोजबीन

"लोगों की बंदूकों के कारतूस खत्म हो गए।"

ऊपर का यह वाक्य इसी पाठ का है जिसमें आदिवासियों के द्वारा बंदूकों व कारतूसों के प्रयोग का भी प्रमाण मिलता है। इस पाठ की खोज़बीन करो तो पाओगे कि आदिवासी "पुलिस चौकियों या सेना पर हमला कर देते थे और उनके अस्त्र-शस्त्र लूटकर भाग जाते थे।" अब तुम ज़रूर समझ गए होंगे कि आदिवासियों ने बंदूकों व कारतूसों का प्रयोग कैसे किया। 'कारतूसों' ने सन् 1857 में स्वतंत्रता की चिंगारी को फैलाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। समूह बनाकर इसके बारे में खोज़बीन करो। कक्षा के प्रत्येक समूह में से एक प्रतिनिधि सबको अपनी खोज़बीन के बारे में बताएगा।

© NCERT not to be republished

8. मुहावरे

नीचे लिखे वाक्यों में मुहावरों का प्रयोग किया गया है। इन्हीं मुहावरों का प्रयोग करते हुए तुम कुछ नए वाक्य बनाओ।

(क) एक सिपाही ने उसका काम तमाम कर दिया।

(ख) आदिवासियों की हिम्मत जवाब देने लगी।

(ग) अंग्रेज़ों ने अपने दांतों तले उँगली दबा ली।

(घ) किसी को कानो-कान खबर न हो।

(ङ) अंग्रेज़ सरकार के छक्के छूट गए।

(च) अंग्रेज़ों के होश उड़ गए।

(छ) भारतीय सैनिकों का बालबाँका न होने पाए।

9. 'मन और मन'

(क) आदिवासियों के साथ मन-मर्जी नहीं की जा सकती।

उसके पास कई मन गेहूँ था।

ऊपर के पहले वाक्य में 'मन' का मतलब है–दिल, हृदय।

दूसरे वाक्य में 'मन' नाप-तौल का एक शब्द है। इस तरह मन के दो अर्थ हैं। ऐसे शब्दों को अनेकार्थक शब्द कहते हैं। नीचे दिए गए शब्दों को पढ़ो और वाक्य बनाओ।

सोना	–	सो जाना (नींद)
		स्वर्ण, एक धातु
उत्तर	–	एक दिशा
		जवाब
हार	–	पराजय, हार जाना
		माला

10. वचन बदलो

(क) सिपाही ने राजू पर गोली चलाई।

सिपाहियों ने ....

(ख) उगी हुई फसल को जलाया जाने लगा

....

(ग) आदिवासी की हिम्मत जवाब दे गई।

....

(घ) आगे से यह सवाल मत पूछना।

....

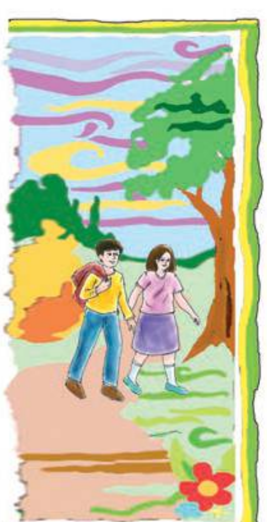

11. समझकर रूप बदलो

भाववाचक संज्ञा से विशेषण बनाओ।

घमंड	घमंडी
हिम्मत	....
साहस	....
स्वार्थ	....
अत्याचार	....
विद्रोह	....

© NCERT not to be republished

0848CH14

चौदहवाँ पाठ

बच्चों के प्रिय केशव शंकर पिल्लै

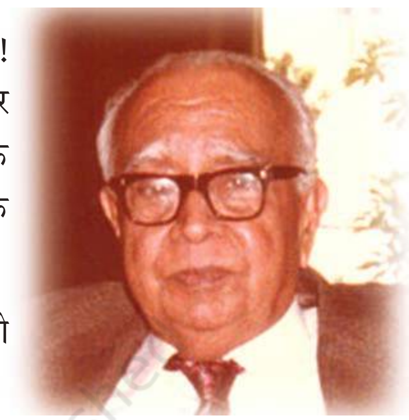

बच्चो, तुम डाक-टिकट, पुराने सिक्के आदि जमा करते हो न! छोटी लड़कियाँ गुड़ियों का भी संग्रह करती हैं लेकिन ढेर सारी गुड़ियों का संग्रह करना उनके लिए मुश्किल है क्योंकि एक तो गुड़िया महँगी होती है, दूसरे उन्हें सुरक्षित रखने के लिए जगह भी ज़्यादा चाहिए।

लेकिन क्या तुमने कभी किसी बड़ी उम्र के पुरुष को गुड़ियों का संग्रह करते देखा है?

यहाँ मैं तुम्हें उस व्यक्ति के बारे में बताने जा रही हूँ, जिसने दो-चार, पाँच-दस नहीं, पाँच हज़ार से भी अधिक गुड़ियों का संग्रह किया है। सारी दुनिया में घूम-घूमकर विभिन्न देशों से भाँति-भाँति की रंग-बिरंगी खूबसूरत गुड़ियों का संग्रह।

जानते हो, ये इतनी सारी गुड़ियाँ उसने अपने लिए नहीं इकट्ठी कीं। देश-विदेशों की भिन्न-भिन्न वेशभूषा में सजी, अपने-अपने देश के तौर-तरीकों वाली खूबसूरत गुड़ियाएँ उसने भारतीय बच्चों के लिए ही जमा की हैं। इन गुड़ियों को उसने दिल्ली के एक विशाल संग्रहालय में इस तरह सजा रखा है कि बच्चे उन्हें देख सकें। उन्हें बच्चों से प्रेम था, इतना कि वह उनकी खुशी के लिए और भी बहुत सारे काम करते थे और सुबह से शाम तक इन्हीं कामों में लगे रहते थे।

इस व्यक्ति का नाम था, केशव शंकर पिल्लै। वही शंकर पिल्लै जो लंबे समय तक 'शंकर्स वीकली' के लिए कार्टून बनाते रहे थे। वे

© NCERT not to be republished

बच्चों के लिए प्यारी-प्यारी पुस्तकें और पत्रिकाएँ निकालते थे। उनके लिए चित्रकला प्रतियोगिताएँ आयोजित करते थे। सिर्फ़ भारत के ही नहीं बल्कि सारी दुनिया के बच्चे उन्हें जानते हैं। बच्चे ही उनकी कमज़ोरी थे और बच्चे ही उनकी ताकत।

केशव शंकर पिल्लै का जन्म 1902 में त्रिवेंद्रम में हुआ था। त्रिवेंद्रम विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद उन्होंने मुंबई में सिंधिया शिपिंग कंपनी के संस्थापक के निजी सचिव के रूप में नौकरी की। साथ ही साथ कानून का अध्ययन और चित्रकला का अभ्यास भी चलता रहा। कार्टून बनाना उनकी हॉबी थी। 'बाम्बे-क्रॉनिकल' में उनके कुछ कार्टून छपे तो उन्हें हिंदुस्तान टाइम्स में कार्टूनिस्ट की नौकरी मिल गई। 1932 से 1946 तक उन्होंने वहाँ काम किया। वे भारत के पहले कार्टूनिस्ट थे जिन्हें किसी पत्र ने पूरे समय के लिए नौकरी दी थी। देश-विदेश की बड़ी-बड़ी हस्तियों पर बनाए उनके कार्टूनों ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा और शंकर पिल्लै प्रसिद्ध होते गए। प्रतिभा छुपी नहीं रह सकती, उसे प्रकट होना ही था।

© NCERT not to be republished

1946 में वे 'इंडियन न्यूज क्रॉनिकल' में चले गए, जो अब 'इंडियन एक्सप्रेस' है। फिर शीघ्र ही उन्होंने अपनी पत्रिका 'शंकर्स वीकली' निकालनी शुरू कर दी। यह अपने ढंग की पहली और अनूठी कार्टून पत्रिका थी। 'शंकर्स वीकली' के 'बड़ा साहब' और 'मेम साहब' शीर्षक नियमित कार्टूनों में 'बड़े लोगों' की खोखली दुनिया पर हास्य-व्यंग्य को बहुत पसंद किया गया।

लगभग पच्चीस साल पहले इन 'बड़े लोगों' को इनके हाल पर छोड़ शंकर बच्चों की ओर झुक गए। उन्हें लगा ये सुंदर, प्यारे-प्यारे, भोले-भाले बच्चे कितने उपेक्षित हैं, क्यों न इनके लिए, इनकी खुशी के लिए ही काम किया जाए।

कलाकार तो भावुक होते ही हैं। बच्चों के प्रति उनके मन में जो प्रेम उमड़ा तो वे उन्हीं के खयालों में डूबते चले गए। उन्होंने पहली बार 'शंकर्स वीकली' द्वारा 1948 में बाल-चित्रकला प्रतियोगिता का विचार लोगों के सामने रखा। विचार नया था, बच्चों के हित का, इसलिए लोगों ने उसे बहुत पसंद किया। उस समय देश के प्रधानमंत्री और बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू को भी यह विचार अच्छा लगा। 1949 में पहली अंतर्राष्ट्रीय बाल-चित्रकला प्रतियोगिता हुई। 1950 में 'शंकर्स वीकली' के बाल-विशेषांक में श्री नेहरू ने लिखा था, "अनेक देशों के बच्चों की यह फौज अलग-अलग भाषा, वेशभूषा में होकर भी एक-जैसी ही है। कई देशों के बच्चों को इकट्ठा कर दो, वे या तो खेलेंगे या लड़ेंगे और यह लड़ाई भी खेल जैसी ही होगी। वे रंग, भाषा या जाति पर कभी नहीं लड़ेंगे।" शंकर पिल्लै का उद्देश्य भी यही था, संसार भर के बच्चों को निकट लाना। इसके बाद हर वर्ष 'शंकर्स वीकली' के बाल-विशेषांक निकलते रहे, हर वर्ष यह प्रतियोगिता होती रही और उसमें भाग लेने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ती रही।

शंकर चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए ढाई साल से सोलह साल के बच्चे भारत के स्कूलों में तैयारी करते रहते हैं। भारत के बाहर भी लगभग 100 देशों के बच्चे हर वर्ष इस अंतर्राष्ट्रीय बाल-चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। सन् 1970 में 103 देशों से कुल 1 लाख 90 हज़ार बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था और 18 देशों के 22 बच्चों ने 'नेहरू स्वर्ण पदक' जीता था। कुल 482 पुरस्कार दिए गए थे, जिनमें से 50 पुरस्कार लेखन के लिए और शेष चित्रकला के लिए थे। नेहरू जी जब तक जीवित रहे, इस वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि बने और बाल-लेखकों और बाल-चित्रकारों के साथ तसवीरें खिंचवाते रहे। बच्चों की प्रतिभा के विकास में उनकी भी गहरी रुचि थी। इसीलिए शंकर पिल्लै के इस कार्य को उन्होंने प्रोत्साहन और सरकारी सहायता दिलवाई। आज नयी दिल्ली में चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट, बाल-पुस्तकालय, गुड़िया-घर है। एक नया 'हॉबी सेंटर' है।

शंकर ने जिस तरह सभी देशों की सुंदर, कलापूर्ण गुड़ियों की खोज़ की उसी तरह बच्चों के लिए विश्व-भर की चुनी हुई हज़ारों पुस्तकों का भी एक संग्रह किया। उनका स्थापित किया हुआ 'चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट' हर वर्ष बहुत सारी पुस्तकों का

© NCERT not to be republished

प्रकाशन भी करता है। इन पुस्तकों में भारत की लोक-कथाएँ, पौराणिक कथाएँ, पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियाँ तथा ज्ञान-विज्ञान की कहानियाँ होती हैं, जिनकी छपाई का स्तर बहुत ऊँचा है। भारत की संस्कृति की इन कहानियों को देश की सभी भाषाओं में प्रस्तुत करने की योजना है। देश में छपाई का स्तर ऊँचा हो, इसके लिए वे प्रशिक्षण कोर्स भी चलाते थे।

1954 में शंकर को हंगरी की एक गुड़िया उपहार में मिली। वह गुड़िया इतनी सुंदर थी कि शंकर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने विभिन्न देशों से ढेर सारी गुड़ियाँ ला-लाकर भारतीय बच्चों के लिए जमा करनी शुरू कर दीं। पहले उन्होंने अपनी गुड़ियों के इस संग्रह को कई जगह प्रदर्शनियाँ लगाकर बच्चों को दिखाया। जब गुड़ियों की संख्या बहुत ज़्यादा हो गई तो जगह-जगह प्रदर्शनियों में उन्हें ले जाना मुश्किल हो गया। ऐसे में कीमती गुड़ियों के खराब हो जाने का भी डर था। तब शंकर के मन में एक गुड़िया-संग्रहालय बनाने का विचार आया। देश की राजधानी में बना विशाल गुड़िया-घर उनके उसी विचार का परिणाम है।

गुड़िया-घर में अब एक वर्कशाप भी खोल दी गई है जहाँ भारतीय गुड़ियों का निर्माण होता है और फिर उन्हें विदेशी बच्चों को भेजा जाता है। हर साल उस गुड़िया-घर को देखने वाले भारतीय बच्चों की संख्या एक लाख से अधिक होती है। यहाँ लगभग 85 देशों की प्राचीन और आधुनिक गुड़ियों का आकर्षक संग्रह है। भारत के सभी राज्यों की गुड़ियाँ यहाँ एकत्रित हैं। इनके माध्यम से बच्चे भारत के हर राज्य के और विदेशों के रहन-सहन, तौर-तरीकों, फैशन, वेशभूषाओं तथा रीति-रिवाज़ों से परिचित हो सकते हैं। गुड़िया-घर के कुछ प्रमुख आकर्षण हैं, हंगरी की ऊन कातती वृद्धाएँ, टर्की की संगीतज्ञ-टोली, स्पेन की प्रसिद्ध 'साँड' से लड़ाई, जापान का चाय उत्सव और काबुकी नर्तकियाँ, इंग्लैंड का राजपरिवार और शेक्सपीयर जैसे कवि, अफ्रीका के आदिवासी, भारत की सांस्कृतिक झाँकियाँ और देश-विदेश के बच्चों का कक्ष, चंद्र-तल पर मानव आदि।

ये गुड़ियाएँ इतनी आकर्षक हैं कि हँसती-बोलती, काम करती, चलती-फिरती सजीव-सी लगती हैं। बच्चे इनके बीच जाकर घंटों खो जाते हैं। इस संग्रहालय को एक दिन में अच्छी तरह देखा भी नहीं जा सकता और इसे कई बार देखने पर भी मन नहीं भरता। बच्चों का भरपूर मनोरंजन हो

© NCERT not to be republished

और देश-विदेश के बारे में उनकी जानकारी बढ़े, गुड़िया-घर की स्थापना के पीछे शंकर का यही उद्देश्य था।

बच्चों के विकास के लिए शंकर की अगली योजनाएँ थीं-आर्ट क्लब और हॉबी सेंटर चलाना, 'भारत के बच्चे' नामक पुस्तकों की एक लंबी सीरीज निकालना और हर वर्ष छुट्टियों में 3-4 कैंप लगाकर सारे भारत के बच्चों को एक जगह मिलने का अवसर देना। अपनी इस योजना को वे 'बच्चों का जनतंत्र' नाम देना चाहते थे।

इस तरह केशव शंकर पिल्लै अपने बाल-प्रेम और कृतियों से न सिर्फ़ भारत में बल्कि पूरे विश्व में विख्यात हो गए। दुनिया-भर के बच्चों से उन्हें प्यार था तो देश-विदेश के लाखों बच्चों का प्यार भी उन्हें मिला।

– आशा रानी व्होरा

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

निजी – स्वयं का, व्यक्तिगत
हस्तियाँ – विशिष्ट लोग
अनूठी – अनोखी, अद्‌भुत
उपेक्षित – जिसकी ओर पूरी तरह ध्यान न दिया जाए
विशेषांक – विशेष प्रकार का अंक, किसी विशेष विषय को आधार बनाकर छापा गया अंक (पत्रिका)
अंतर्राष्ट्रीय – विभिन्न राष्ट्रों के बीच
कलापूर्ण – कला से युक्त
पौराणिक – पुराणों से संबंधित
प्रशिक्षण – सिखाना, शिक्षण देना
आकर्षक – मोहक, सुंदर
एकत्रित – जमा की हुई, इकट्ठा किया हुआ
माध्यम – के द्वारा, जरिए
कृतियाँ – रचनाएँ, पुस्तकें
विख्यात – प्रसिद्ध, मशहूर
संग्रह – जमा करना, एकत्र करना
संग्रहालय – वह स्थान जहाँ कई वस्तुएँ इकट्ठी करके जमा कर रखी जाती हैं।
संस्थापक – स्थापना करने वाला
खोखली – पोली, किसी ठोस वस्तु के भीतर खाली स्थान होना
प्रदर्शनी – कुछ वस्तुओं को एक स्थान पर देखने के लिए रखना

© NCERT not to be republished

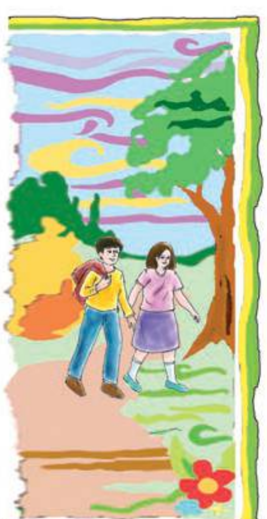

1. पाठ से

(क) गुड़ियों का संग्रह करने में केशव शंकर पिल्लै को कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

(ख) वे बाल चित्रकला प्रतियोगिता क्यों करना चाहते थे?

(ग) केशव शंकर पिल्लै ने बच्चों के लिए विश्वभर की चुनी हुई गुड़ियों का संग्रह क्यों किया?

(घ) केशव शंकर पिल्लै हर वर्ष छुट्टियों में कैंप लगाकर सारे भारत के बच्चों को एक जगह मिलने का अवसर देकर क्या करना चाहते थे?

2. तरह-तरह के काम

केशव ने कार्टून बनाना, गुड़ियों व पुस्तकों का संग्रह करना, पत्रिका में लिखना व पत्रिका निकालना, बाल चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन व बच्चों का सम्मेलन कराना जैसे तरह-तरह के काम किए। उनको किसी एक काम के लिए भी तरह-तरह के काम करने पड़े होंगे। अब बताओ कि-

(क) कार्टून बनाने के लिए उन्हें कौन-कौन से काम करने पड़े होंगे?

(ख) बच्चों के लिए बाल चित्रकला प्रतियोगिता कराने के लिए क्या-क्या करना पड़ा होगा?

(ग) केशव शंकर पिल्लै की तरह कुछ और भी लोग हुए हैं जिन्होंने तरह-तरह के काम करके काफी नाम कमाया। तुम्हारी पसंद के वो कौन-कौन लोग हो सकते हैं? तुम उनमें से कुछ के नाम लिखो और उन्होंने जो कुछ विशेष काम किए हैं उनके नाम के आगे उसका भी उल्लेख करो।

3. घर

तुमने इस पाठ में गुड़ियाघर के बारे में पढ़ा। पता करो कि 'चिड़ियाघर', 'सिनेमाघर' और 'किताबघर' कौन और क्यों बनवाता है? तुम इनमें से अपनी पसंद के किसी एक घर के बारे में बताओ जहाँ तुम्हें जाना बेहद पसंद हो?

© NCERT not to be republished

4. संग्रह की चीज़ें

आमतौर पर लोग अपनी मनपसंद, महत्वपूर्ण और आवश्यक चीज़ों का संग्रह करते हैं। नीचे कुछ चीज़ों के नाम दिए गए हैं। जैसे-

(क) डाक-टिकट

(ख) पुराने सिक्के

(ग) गुड़िया

(घ) महत्वपूर्ण पुस्तकें

(ङ) चित्र

(च) महत्वपूर्ण व्यक्तियों के हस्तलेख

इसके अतिरिक्त भी तुम्हारे आसपास कुछ चीज़ें होती है जिसे लोग बेकार या अनुपयोगी समझकर कूड़ेदान या अन्य उपयुक्त जगह पर रख या फेंक देते हैं।

(क) तुम पता करो यदि उसका भी कोई संग्रह करता है तो क्यों?

(ख) उसका संग्रह करने वालों को क्या परेशानियाँ होती होंगी?

(इनके उत्तर के लिए तुम बड़ों की सहायता ले सकते हो।)

5. लड़ाई भी खेल जैसी

"अनेक देशों के बच्चों की यह फ़ौज अलग-अलग भाषा, वेशभूषा में होकर भी एक जैसी ही है। कई देशों के बच्चों को इकट्ठा कर दो, वे खेलेंगे या लड़ेंगे और यह लड़ाई भी खेल जैसी ही होगी। वे रंग, भाषा या जाति पर कभी नहीं लड़ेंगे।"

ऊपर के वाक्यों को पढ़ो और बताओ कि-

(क) यह कब, किसने, किसमें और क्यों लिखा?

(ख) क्या लड़ाई भी खेल जैसी हो सकती है? अगर हो तो कैसे और उस खेल में तुम्हारे विचार से क्या-क्या हो सकता है।

6. सुबह से शाम

केशव शंकर पिल्लै बच्चों के लिए सुबह से शाम तक काम में लगे रहते थे। तुम सुबह से शाम तक कौन-कौन से काम करना चाहोगे? नीचे उपयुक्त जगह में अपनी पसंद के काम को भी लिखो और सही (✓) का निशान लगाओ। तुम उसका कारण भी बताओ।

© NCERT not to be republished

क्रम सं.	काम का नाम	✓ या ×	कारण
(क)	खेलना		
(ख)	पढ़ना		
(ग)	चित्रकारी करना		
(घ)	....		
(ङ)	....		
(च)	....		

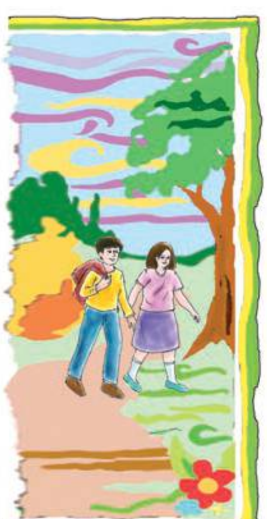

0848CH15

पंद्रहवाँ पाठ

फ़र्श पर

चिड़िया आती है
डाल जाती तिनके फ़र्श पर
हवा आती है
बिखेर जाती धूल फ़र्श पर
सूरज आता है
सजा जाता चिंदियाँ फ़र्श पर
मुन्ना आता है
उलट देता कटोरी फ़र्श पर
मम्मी आती हैं
बीनतीं दाल-चावल फ़र्श पर
पापा आते हैं
उतार देते जूते फ़र्श पर
महरी आती है
समेट लेती है सब कुछ
अपने बिवाई पड़े हाथों में
और इस तरह लिखती है हर रोज़
एक कविता फ़र्श पर।

—निर्मला गर्ग

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

चिंदियाँ	–	छोटे-छोटे टुकड़े, धूप के छोटे-छोटे चकते	महरी	–	काम करने वाली, घरेलू सहायिका
बीनना	–	चुनना	बिवाई	–	हाथ-पैर के चमड़े का फटना

1. पाठ से

(क) कविता में फ़र्श पर कौन-कौन और क्या-क्या करते हैं?

(ख) फ़र्श पर सभी के द्वारा कुछ न कुछ काम करने की बात कविता में हुई है, मगर महरी के काम को ही कविता लिखना क्यों कहा गया है?

2. तुम्हारी बात

(क) तुम अगर मुन्ना की जगह रहो तो क्या करोगे और क्यों?

(ख) मम्मी और महरी के काम में तुम्हें जो कुछ समानता और असमानता नजर आती है, उसे अपने ढंग से बताओ।

(ग) तुम कविता में सभी को कुछ न कुछ करते हुए पाते हो। उसमें से तुम्हें किसका काम सबसे ज़्यादा पसंद है और क्यों?

(घ) तुम अपने घर को साफ रखने के लिए क्या-क्या करते हो? उन कामों की सूची बनाओ और उसके सामने यह भी लिखो कि तुम वह काम कब-कब करते हो।

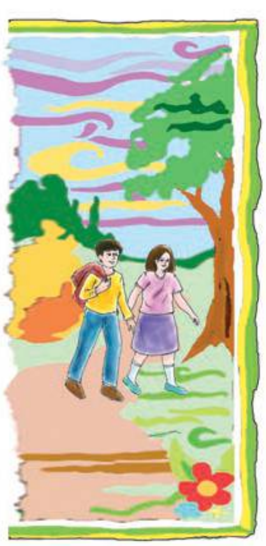

3. तुम्हारी कल्पना

कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं–

चिड़िया, डाल, तिनके, सूरज, हवा, हाथ, मुन्ना, कविता

इनका प्रयोग करते हुए कोई कहानी या कविता लिखो।

4. फ़र्श पर कविता

"और इस तरह लिखती है हर रोज़
एक कविता फ़र्श पर।"

© NCERT not to be republished

कविता में फ़र्श पर काम करने को भी कविता लिखना बताया गया है। .फर्श के अतिरिक्त अन्यत्र भी तुम कुछ लोगों को काम करते हुए पा सकते हैं। उनमें से तुम जिन कामों को कविता लिखना बता सकते हो, बताओ और उसके कारण भी बताओ।

5. बच्चे और फ़र्श

बच्चे फ़र्श पर अपनी मर्ज़ी से जो उन्हें अच्छा काम लगता है वो काम करते हैं। उसमें कभी-कभी फ़र्श को तो कभी-कभी बच्चों को भी नुकसान उठाना पड़ता है। पता करो–

(क) बच्चों द्वारा फ़र्श पर क्या-क्या करने से उन्हें नुकसान होता है? उसकी सूची बनाओ।

(ख) बच्चों के किन-किन कामों से फ़र्श को नुकसान होता है?

6. काम के शब्द

कविता में बहुत से कामों का ज़िक्र किया गया है; जैसे–बीनना, बिखेरना, सजाना, उतारना, समेटना आदि। इन्हें क्रियाएँ कहते हैं। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें उचित क्रिया के साथ लिखो–

पानी, टोकरी, बस्ता, चावल, हथेली, रंग, जूते

....	बीनना	....	बिखेरना	....	सजाना
....	उतारना	....	समेटना		

© NCERT not to be republished

0848CH16

सोलहवाँ पाठ

बूढ़ी अम्मा की बात

एक था किसान। गोमा मोरी नाम था उसका। गुजर-बसर लायक खेती थी। एक गाय, एक जोड़ी बैल, बीस बकरियाँ थीं। छोटा-सा घर। घर के सामने पशु बाँधने का बाड़ा। तीन साल से वर्षा बहुत कम हुई थी। न फसलें हुईं थीं न चारा। इस वर्ष भी आषाढ़ सूखा ही रह गया। वर्षा की कोई आशा नही बँधी थी। "खेत जोतकर क्या करूँगा?" गोमा ने एक लंबी साँस छोड़ी और मन ही मन सोचा। वह बैलों को हाँकते हुए वापिस घर की ओर चल पड़ा।

अगले दिन गोमा बड़े सवेरे सोकर उठा। गाय, बैल व बकरियों को बाड़े से निकाला। उसकी पत्नी बकरियों को घेरकर उन्हें चराने चली गई। उसने फिर हिम्मत बटोरी और हल को बैलों के कँधे पर रखकर चल पड़ा खेतों की ओर। रास्ते में उसे कई किसानों ने टोककर कहा कि "गोमा! खेत जोतने से क्या होगा? वर्षा के तो कुछ भी आसार नहीं दिख रहे।" गोमा ने सब की बात सुनी। कई बार उसका मन डाँवाडोल भी हुआ फिर भी उसने हिम्मत रखी और कुछ सोचकर खेत पर पहुँच गया।

उसने आकाश की ओर देखा। सूरज आग के गोले की तरह जल रहा था। उसने धरती को भी निहारा। खेतों में गहरी और चौड़ी दरारें पड़ गई थीं। वह बैलों को देखकर उनकी दशा से भी चिंतित था। भूख-प्यास सहन करते-करते वे बहुत दुबले हो गए थे। वह थोड़ा निराश भी हुआ। उसे बैलों की दशा पर दया हो आई। उसने फिर एक लंबी साँस छोड़ी और खेत की मेंड़ पर एक वृक्ष के नीचे बैठकर सोचने लगा। क्या करे वह? खेत जोते या उसे यों ही पड़ा रहने दे। वह सोचता रहा। थोड़ी देर बाद वह उठा और दुखी मन से बैलों को हाँककर घर की

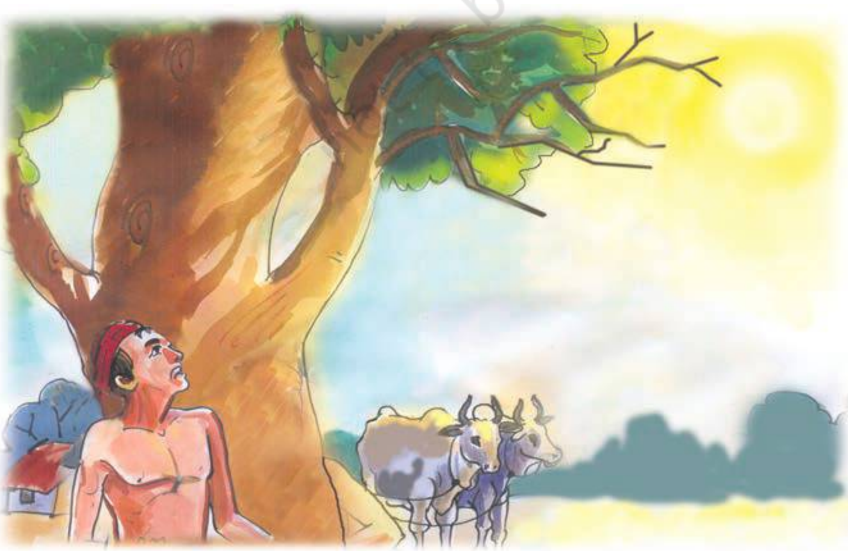

राह पकड़ ली। उसने निर्णय कर लिया कि वह तब तक खेत नहीं जोतेगा जब तक कि वर्षा नहीं हो जाती।

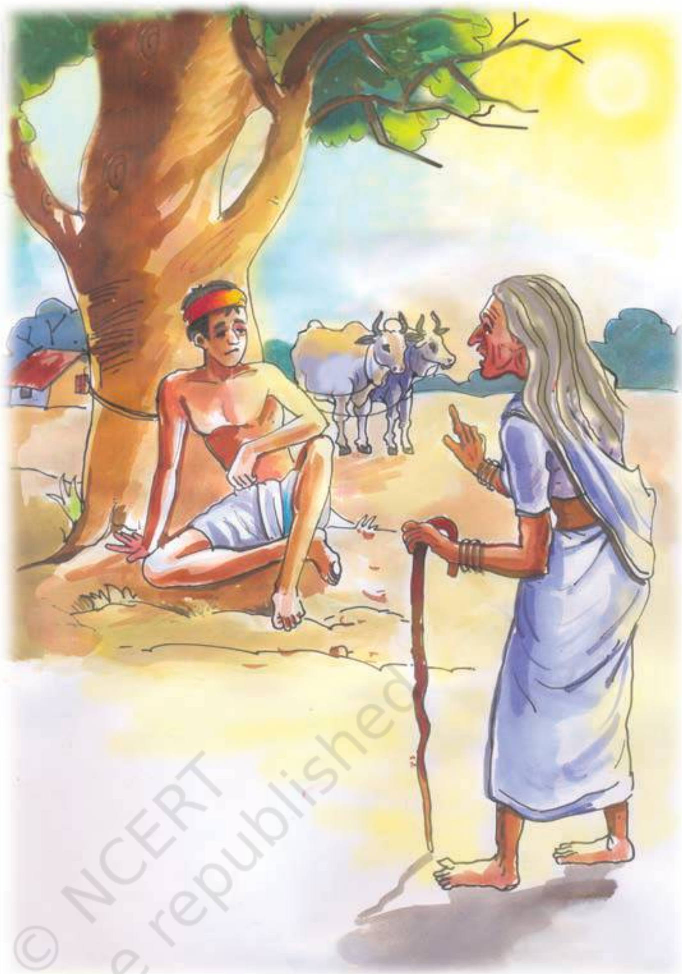

धूप काफी तेज थी। दूसरे दिन वह और भी निराश हो गया। उसके पैर न आगे बढ़ते थे और न पीछे जाने की उनमें हिम्मत ही थी। रास्ते में एक पेड़ के नीचे उसने बैलों को रोका और वहीं नीचे जमीन पर बैठ गया।

तभी वहाँ पर एक बूढ़ी अम्मा आ गई। वह भी उसी पेड़ के नीचे बैठ गई। गोमा ने पूछा, "अरी ओ बूढ़ी अम्मा! कहाँ से आ रही हो इतनी तेज धूप में? तुम्हें किधर जाना है?" बूढ़ी अम्मा ने कहा, "मैं तो अपनी नातिन से मिलने पास के गाँव जा रही हूँ। लेकिन तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो? यह समय तो खेत में हल जोतने का है। लेकिन तुम यहाँ आराम कर रहे हो। क्या तुम बीमार हो या तुम्हारे बैल बीमार हैं। कहीं तुम्हारा हल टूट तो नहीं गया है?"

© NCERT not to be republished

गोमा बोला–"नहीं अम्मा! न तो मैं बीमार हूँ और न ही मेरे बैल बीमार हैं? मेरा हल भी नहीं टूटा है। टूटी है तो मेरी हिम्मत। अम्मा तुम तो जानती हो तीन साल से वर्षा ठीक से नहीं हुई है। इस वर्ष भी यही हाल है। खेत जोतकर क्या करूँ?"

बूढ़ी अम्मा बोली–"देखो बेटा! वर्षा तुम्हारे हाथ में नहीं है। यह तो प्रकृति पर निर्भर है। जब बादल बनेंगे तो वर्षा अवश्य होगी। तुम्हारा काम है खेत जोत-जोतकर तैयार करना। तुम अपना काम समय पर करो। प्रकृति अपना काम अवश्य समय पर करेगी। वर्षा अवश्य होगी।"

गोमा पुनः बूढ़ी अम्मा से बोला–"अम्मा खेत बहुत कठोर हो गए हैं। मेरे बैल दुबले हैं, इन्हें पेटभर चारा तक नहीं मिल रहा है। पीने के लिए पानी तक की दिक्कत है। चारा-पानी ही क्या यहाँ तो पेड़ों की पत्तियाँ तक खत्म हो गई हैं। बेचारे बैल कैसे हल खींचें? वर्षा की आस हो तो हिम्मत भी बँधे।" गोमा ने निराश मन से अपनी बात कही।

बूढ़ी अम्मा बोली—"बेटा! तुम निराशा की बात मत करो। पेड़ों की बात भी तुमने खूब कही। पेड़ तो यहाँ सब लोग काट रहे हैं। देखो अब पेड़ भी कहाँ बचे हैं? जब पेड़ ही नहीं होंगे तो पत्तियाँ कहाँ से आएँगी? अगर पेड़ अधिक होते तो वर्षा भी अवश्य हो जाती। सारे जंगल से पेड़ों की कटाई जारी है। पेड़ नहीं होंगे तो हरियाली कहाँ से होगी? हरियाली नहीं तो वर्षा भी नहीं। लेकिन जो हुआ सो हुआ। अब तो तुम लोग पेड़ों पर ध्यान दो। तुम निराश मत होओ। खेतों में हल चलाओ। उन्हें हाँक-जोत कर बोने के लिए तैयार करो। इस मौसम में कभी न कभी तो वर्षा अवश्य होगी।" बूढ़ी अम्मा ने मुसकराकर गोमा की हिम्मत बढ़ाई। वह उठी और लकड़ी टेकती हुई अपनी राह चल दी।

वैसे तो गोमा मन से निराश था मगर बूढ़ी अम्मा की बातों से उसकी थोड़ी आशा बढ़ी। अगले दिन उसने पूरे उत्साह से अपना खेत जोतना शुरू कर दिया। उसने लगातार चार दिन तक हल चलाया। खेत खूब अच्छी तरह तैयार हो गए। गोमा अपना काम पूरा करके बहुत प्रसन्न था। अब वह बैलों को हाँकते हुए घर की ओर चल पड़ा। पूरी राह वह गुनगुनाता रहा। उस रात उसे नींद भी अच्छी तरह आई। चार दिन की कड़ी मेहनत के कारण वह निढाल होकर सोया।

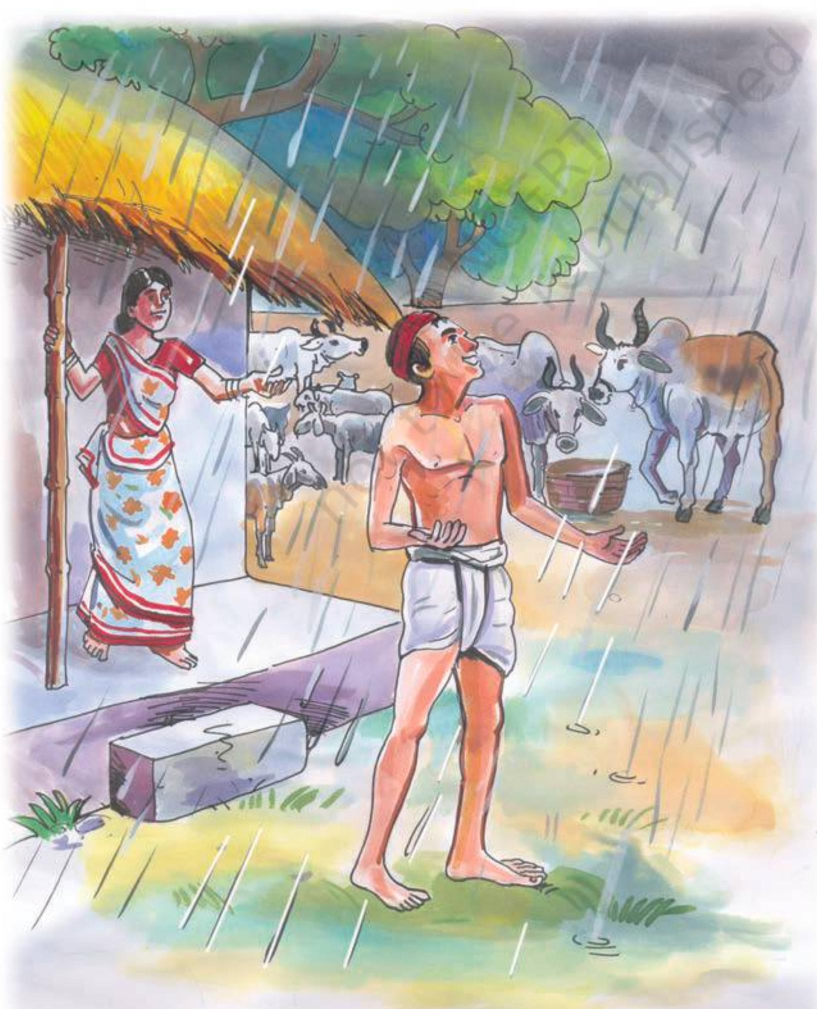

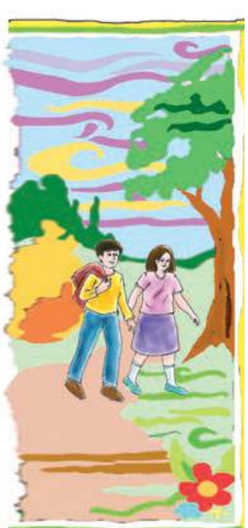

सवेरे जब वह सोकर उठा तो गाय रंभा रही थी। बकरियाँ मिमिया रही थीं। सवेरे-सवेरे अपने पशुओं की ये आवाज़ें सुनने के लिए उसके कान तरस गए थे। वह पुलककर उठा। उसकी पत्नी ने आँगन से आवाज़ लगाई। अजी सुनते हो! बाहर तो आओ। वर्षा होने वाली है। गोमा झटपट बाहर आया। उसने देखा मौसम बहुत सुहाना हो गया है। आसमान में बादल घुमड़ आए थे। उसने बादलों को जी भरकर निहारा। उसे लगा

मानो बादलों से बूढ़ी अम्मा की मुसकुराती हुई आकृति उभर आई हो। उसे बूढ़ी अम्मा की बात रह-रहकर याद आ रही थी। उसने मन ही मन बूढ़ी अम्मा को प्रणाम किया और सोचा कि वह ठीक ही कह रही थी कि तुम अपना काम समय पर करो। बादल बरसने लगे। आँगन तर-बतर हो गया। गोमा को लगा मानो बूढ़ी अम्मा उससे कुछ कह रही हों। वह बूढ़ी अम्मा से कुछ कहना चाहता था। तभी बारिश और तेज़ हो गई।

अभ्यास

शब्दार्थ

निहारना	गौर से देखना	तर-बतर	भीगा हुआ, सराबोर
हाँकना	चलाना	डाँवाडोल	अस्थिर, करने न करने की स्थिति
हल जोतना	खेत जोतना	मेंड़	खेत की हदबंदी, सिंचाई आदि के लिए उसके इर्द-गिर्द बनाया हुआ मिट्टी का घेरा
आस	उम्मीद, आशा	नातिन	बेटी की बेटी
घुमड़ना	बहुत से बादलों का आसमान में छा जाना	निर्भर	आश्रित, सहारे पर टिका हुआ

© NCERT not to be republished

1. पाठ से

(क) लोककथा में गोमा बिना खेत जोते अपने बैलों को हाँककर घर की ओर क्यों चल पड़ा?

(ख) गोमा को पेड़ के नीचे बैठा देखकर बूढ़ी अम्मा ने उससे क्या कहा?

(ग) गोमा ने अपने खेतों को क्यों जोता?

2. क्या होता अगर

(क) गोमा खेतों को तैयार न करता?

(ख) गोमा को बूढ़ी अम्मा नहीं मिलती?

(ग) बूढ़ी अम्मा की बात पर गोमा ध्यान न देता?

(घ) इस साल भी वर्षा न होती?

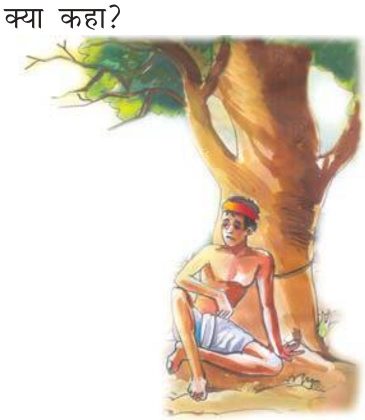

2020-21

3. वर्षा कैसे हो!

(क) बूढ़ी अम्मा ने वर्षा न होने का क्या कारण बताया था?

(ख) क्या तुम बूढ़ी अम्मा की बात से सहमत होते? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

4. गाँव और पशु

(क) "इस वर्ष भी आषाढ़ सूखा ही रहा।"

लोककथा से जाहिर होता है कि गोमा के गाँव में तीन साल से वर्षा नहीं हुई थी। वर्षा न होने के कारण उनके गाँव के बैलों, खेतों और पेड़ों में क्या बदलाव आए होंगे?

(ख) "सवेरे-सवेरे अपने पशुओं की ये आवाज़ें सुनने के लिए उसके कान तरस गए थे।"

गोमा ने बहुत समय बाद अपने पशुओं की वे आवाज़ें सुनी थीं। क्यों?

5. सोचने की बात

बूढ़ी अम्मा ने कहा, "वर्षा अवश्य होगी।"

(क) तुम्हारे विचार से बूढ़ी अम्मा ने गोमा से यह बात क्यों कही?

(ख) क्या उन्हें मालूम था कि इस साल वर्षा होगी? या उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर केवल अंदाजा लगाया था?

(ग) वर्षा और पेड़ों के संबंधों के बारे में सोचो। पाँच-पाँच बच्चों के समूह बनाकर इस बारे में बातचीत करो। फिर सबको अपने समूह के विचार बताओ।

© NCERT not to be republished

6. कैसा था गोमा

सही शब्दों पर गोला लगाओ-

कामचोर, आलसी, मेहनती, भोला-भाला, मूर्ख, समझदार, गरीब, अमीर, कमज़ोर, लगन का पक्का

अब अपने उत्तर का कारण नीचे लिखो

मेरे विचार से गोमा .... व्यक्ति था क्योंकि........

....

....

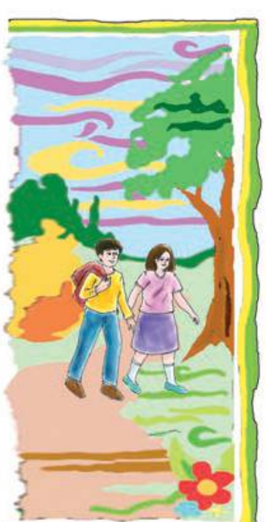

7. डाँवाडोल

"कई बार उसका मन डाँवाडोल भी हुआ।"

गोमा खेतों में काम करने जा रहा था। कई बार उसने घर लौट जाने की बात भी सोची। तुम्हारा मन भी ज़रूर कभी डाँवाडोल होता होगा? ऐसा कब-कब होता है? अपने ढंग से सोचकर इस सूची को पूरा करो।

(क) जब खूब नींद आ रही हो और दोस्त खेलने को बुलाने लगे।

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

8. खेती

इस लोककथा में खेती से संबंधित अनेक शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाओ। फिर उन्हें वर्णमाला के क्रम से लिखो।

9. तुम्हारी लोककथा

यह मालवा (मध्यप्रदेश) की एक लोककथा है। तुम्हारे प्रांत की भाषा/बोली में भी कुछ लोककथाएँ होंगी जिसे लोग सुनते-सुनाते होंगे। उनमें से तुम अपनी पसंद की किसी लोक कथा को अपनी कॉपी में लिखो और अपने मित्रों को सुनाओ।

10. किसका काम

तुम गीत-गाने, किस्सा-कहानी को सुनने के अलावा फ़िल्में भी देखते होगे। अब तुम पता करो कि-

(क) लोकगीतों और लोककथाओं को कौन-कौन लोग बनाते और गाते हैं?

(ख) क्या लोककथाओं पर भी नाटक या सिनेमा बना है? कुछ के नाम बताओ।

ऊपर के काम में तुम बड़ों से भी मदद ले सकते हो।

© NCERT not to be republished

11. अपनी भाषा

नीचे लिखे वाक्यों को अपने ढंग से सार्थक रूप में तुम जिस तरह भी लिख सकते हो वैसे लिखो।

(क) उसने बादलों को जी भर निहारा।

(ख) वर्षा की कोई आशा नहीं बँध रही थी।

(ग) गोमा ने फिर हिम्मत बटोरी।

(घ) उसने घर की राह पकड़ ली।

(ङ) वर्षा बरसाना तुम्हारे हाथ में नहीं है।

12. बहुमूल्य सामान

खेती से प्राप्त होने वाले बहुमूल्य सामानों की सूची बनाओ और उस सूची में से जो सामान तुम्हारे प्रदेश की खेती से प्राप्त होता है उसका भी अलग से उल्लेख करो।

0848CH17

सत्रहवाँ पाठ

वह सुबह कभी तो आएगी

मैं बहुत छोटी थी जब गैस रिसी थी। मेरी अम्मी बताती हैं कि वह मुझे जकड़कर जहाँगीराबाद भागी थी। मेरी याददाश्त में मैंने अपना पहला कदम बीमारी में ही बढ़ाया था। और अब भी मैं उससे बच नहीं पाई हूँ। बीच में कुछ समय तक कुछ राहत थी पर अब फिर सब कुछ वापस आ गया है। मेरा गला और आँखें सूज जाती हैं, मेरा चेहरा सूजन की वजह से बड़ा रहता है, गले से अंदर ही अंदर खून बहता है। मेरी साँसें बुरी तरह से फूलने लगती हैं और मैं होश खो देती हूँ। मेरे पूरे बदन पर लाल-लाल धब्बे हैं। शुरू में ये धब्बे एक-एक रुपये के सिक्के जितने बड़े थे, पर अब तो ये छोटे हो गए हैं। मेरे दाहिने पाँव के कारण मुझे चलने में दिक्कत होती है और मेरे पैर देखो–ये छाले पड़े हुए हैं। कितना कुछ हुआ है हमें–हमारी जिंदगी गैस के कारण हमेशा के लिए बदल गई है।

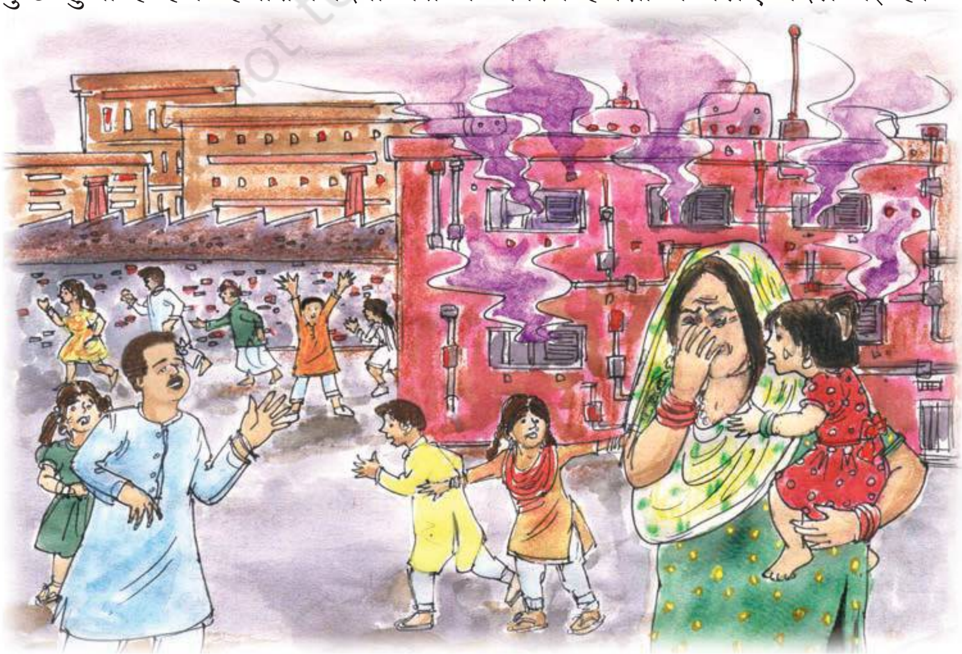

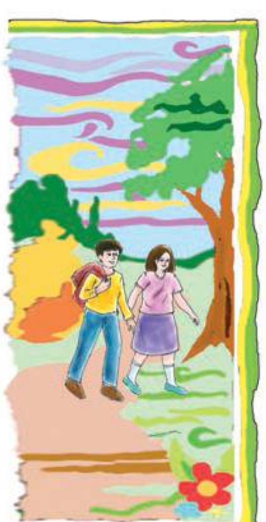

मेरे अब्बू इस दुर्घटना के कारण खत्म हो गए, जब हम बहुत छोटे थे। मेरी माँ की मानसिक हालत बिगड़ गई। वह दरवाज़े पर बैठकर अब्बू का इंतज़ार करती रहती थीं। हमसे कहती कि अब्बू घर आने वाले हैं, उनके लिए चाय बना लें। वह उनके पैरों की आहट सुनतीं और चिल्लाकर कहतीं कि वे घर आ गए हैं। हम उनसे कहते कि अब्बू मर चुके हैं पर वह हमसे कहतीं कि ऐसी बातें नहीं कहते, और अगर हम फिर ऐसा कहते तो वह हमें मार देतीं। हम उनसे कहते कि जब हम बड़े हो जाएँगे तो उनकी देखभाल करेंगे। डॉक्टर लोग हमसे कहते कि उन्हें खुश रखा करें पर उनकी हालत देखकर रोए बिना रह पाना मुश्किल होता था। यह सब कुछ महीनों तक चलता रहा। धीरे-धीरे किसी तरह अम्मी ने अपने आप को सँभाला। शायद इस एहसास ने उन्हें ठीक होने में मदद की कि उन्हें ही कुछ उपाय करने होंगे ताकि हम सब जिंदा रह सकें।

मेरे अब्बू की एक दुकान थी। किसी ने उन्हें समझा-बुझाकर वह दुकान पाँच सौ रुपये में बिकवा दी। जब तक वह पैसा चला, हमें खाने को मिला। फिर मेरी अम्मी कितनी जगहों पर गईं, हर जान-पहचानवाले के पास, उधार माँगने! उन्हें दूसरों के लिए काम भी करना पड़ता। तिस पर मेरी सेहत ने मेरी अम्मी से इतना खर्च करवाया है। मैं हमेशा से ही बीमार हूँ। मेरी एक जुड़वाँ बहन है जो बिल्कुल ठीक है। मेरी अम्मी चिल्ला पड़ती थीं कि वह मेरे इतने बीमार रहने और इतने पैसे खर्च करवाने से तंग आ गई हैं।

एक बार की बात है, जब मैं बहुत बीमार थी। किसी ने मेरी अम्मी से कहा कि मुझे एक प्राइवेट डॉक्टर के पास ले जाएँ। वह डॉक्टर अच्छा माना जाता है। मुझे नर्सिंग होम ले जाया गया।

डॉक्टर ने उन्हें बताया कि मैं मरने ही वाली हूँ और मेरे इलाज के लिए सिर्फ नर्सिंग होम के बिस्तर का खर्चा ही ढाई सौ रुपये हर दिन का आएगा, इलाज का अलग। मेरी माँ ने उन्हें बताया कि हमारे पास इतने पैसे नहीं है। तब उसने कहा कि मुझे घर ले जाएँ। पर वह नहीं मानीं। मैं वहीं पड़ी रहती जब तक कि दोपहर को वह न आतीं। मुझे नहीं मालूम कि वह कहाँ से पैसे लाती। पर वह मेरे इलाज के लिए पैसे जुटा ही लेतीं।

अब मैं आयुर्वेद की दवाएँ लेने लगी हूँ और उससे मुझे काफी आराम है। मेरे पाँव के छाले सूख रहे हैं, पसलियों का दर्द चला गया है, चेहरे की सूजन, सिर दर्द, बदन दर्द और गले से खून बहना बंद हो गया है। अब मुझे पहली बार ऐसा लगने लगा है कि मैं ठीक हो सकती हूँ। मैं यह जानती हूँ कि अभी हमें बहुत दूर जाना है। मैं इतनी खुश रहती हूँ। मैं तो अब जीना चाहती हूँ।

– *सलमा*

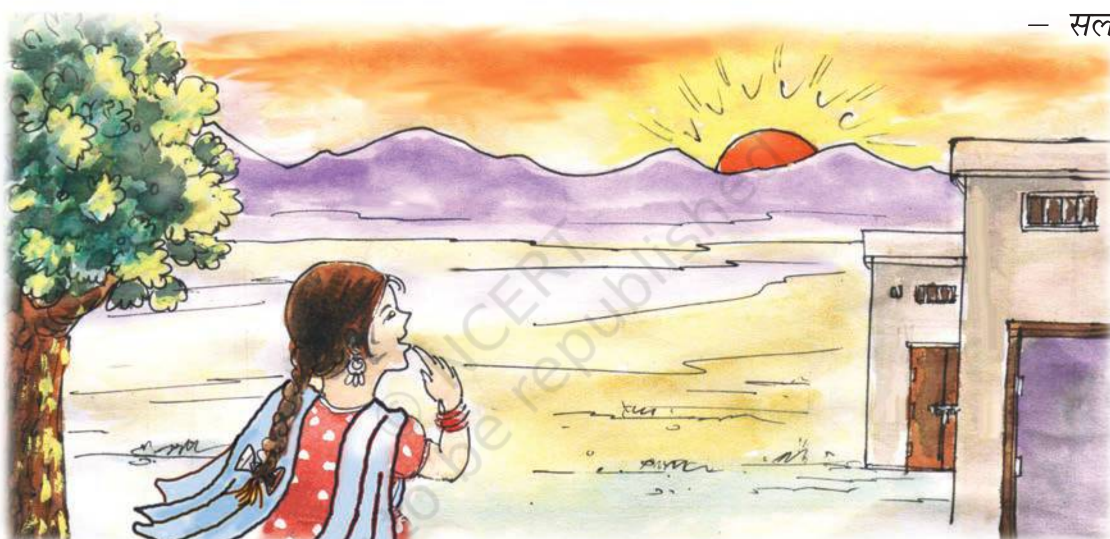

अभ्यास

शब्दार्थ

जकड़ना	–	कसकर पकड़ना	बदन	–	शरीर
याददाश्त	–	याद रखने की शक्ति	धब्बे	–	दाग
राहत	–	आराम	आहट	–	आवाज़
सूजन	–	किसी अंग का फूलना	सेहत	–	स्वास्थ्य

1. पाठ से

(क) सलमा का पहला कदम बीमारी में ही क्यों बढ़ा था?

(ख) सलमा अपनी अम्माँ से क्या कहती थी जिससे उसकी अम्माँ उसे मार देती थी?

(ग) सलमा ने ऐसा क्यों कहा कि मैं तो अब जीना चाहती हूँ?

2. दुर्घटना

"मेरे अब्बू इस दुर्घटना के कारण खत्म हो गए, जब हम बहुत छोटे थे।"

ऊपर के वाक्य से पता चलता है कि सलमा के अब्बू किसी गैस दुर्घटना के कारण मर गए थे। दुर्घटना में कुछ लोगों को अपने शरीर के अंगों को गँवाना भी पड़ जाता है। तुम हवा, आग और पानी से होने वाली दुर्घटनाओं की एक सूची बनाओ। तुम इस सूची के आगे यह भी लिखो कि इसमें क्या-क्या नुकसान होता है।

3. देखभाल

"हम उनसे कहते कि जब हम बड़े हो जाएँगे तो उनकी देखभाल करेंगे।" इस वाक्य को पढ़ो और बताओ कि–

© NCERT not to be republished

(क) कौन किसकी देखभाल करना चाहता/चाहती है?

(ख) वह बड़ा/बड़ी होकर ही देखभाल करना क्यों चाहता/चाहती है?

(ग) क्या वह छोटे होने पर देखभाल नहीं कर सकता/सकती है?

(घ) अगर वह छोटे होने पर भी देखभाल करेगा/करेगी तो क्या हो सकता है?

4. निबंध या संस्मरण

इस पाठ में भोपाल गैस त्रासदी का वर्णन हुआ है, जिसे इस त्रासदी को सहने वाली सलमा ने 'वह सुबह कभी तो आएगी' शीर्षक से लिखा है। अब तुम बताओ कि–

(क) तुम इसे निबंध या संस्मरण में से क्या कह सकते हो और क्यों?

(ख) अगर इसे कोई कहानी कहे तो क्या होगा?

(ग) मान लो कि अगर तुम इसे लिखते तो इसका क्या शीर्षक देते और क्यों?

(**संकेत**–इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तुम अपने बड़ों की सहायता भी ले सकते हो।)

5. पंक्ति और शीर्षक

'वह सुबह कभी तो आएगी'–यह इस पाठ का शीर्षक है। साथ ही यह साहिर लुधयानवी के 'गीत' की पंक्ति भी है। इस तरह तुम कुछ अन्य गीतों, कविताओं, लेखों, कहानियों और प्रसिद्ध लोगों के विचारों आदि की किसी पंक्ति का चयन कर उसकी सूची बनाओ जिस पर अपने विचारों को लिख सकते हो और वह तुम्हारे लेख के लिए सही शीर्षक हो सकता है।

6. भेंट–मुलाकात

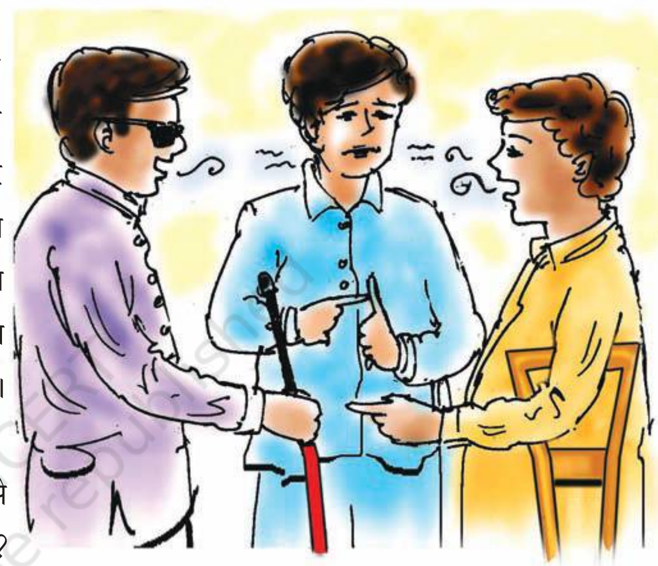

तुम्हारी भेंट–मुलाकात अक्सर कुछ ऐसे लोगों से भी होती होगी या हो सकती है जिनकी आँखें नहीं होतीं, जो बोल और सुन नहीं सकते। कुछ वैसे भी लोग होंगे या हो सकते हैं जो हाथ–पैर या अपने किसी अन्य अंग से सामान्य मनुष्य की तरह काम नहीं कर सकते। अब तुम बताओ कि–

(क) यदि तुम्हें किसी गूँगे व्यक्ति से कुछ समझना हो तो क्या करोगे?

(ख) यदि तुम्हें किसी बहरे व्यक्ति को कुछ बताना हो तो क्या करोगे?

(ग) यदि तुम्हें किसी अंधे व्यक्ति को कुछ बताना हो तो क्या करोगे?

(घ) किसी ऐसे व्यक्ति के साथ खेलने का अवसर मिल जाए जो चल फिर नहीं सकता हो तो क्या करोगे?

© NCERT not to be republished

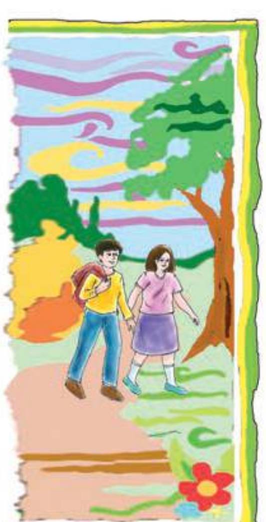

7. उपाय

नीचे कुछ दुर्घटनाओं के बारे में लिखा हुआ है; जैसे–

(क) सड़क दुर्घटना – सड़क पर होती है

(ख) ट्रेन दुर्घटना – ट्रेन की पटरी पर होती है

(ग) हवाई दुर्घटना – धरती या आसमान कहीं भी हो सकती है

(घ) नौका दुर्घटना – जल में हो सकती है

इनके कारणों में मानवीय भूल, जानबूझकर और प्राकृतिक रूप से संबंधित कोई भी कारण हो सकता है। मान लो कि तुम्हारे आस–पास ऐसी कोई भी दुर्घटना घट जाती है तो तुम क्या–क्या करोगे?

(क) क्या तुम स्वयं को बचाओगे?

(ख) किसी और को बचाओगे?

(ग) किसी अन्य को बचने और बचाने का उपाय बताओगे?

(घ) किसी अन्य को उस दुर्घटना के बारे में बताओगे और बुलाओगे?

(ङ) क्या तुम चुपचाप रह जाओगे?

इसमें तुम जो भी करना चाहते हो, उसका कारण भी बताओ।

8. शब्द प्रयोग

मेरा गला और आँखें सूज जाती हैं, मेरा चेहरा सूजन की वजह से बड़ा रहता है।

ऊपर के वाक्य में सूज और सूजन शब्द का प्रयोग सार्थक ढंग से हुआ है। इसके साथ सूजना शब्द का प्रयोग भी किया जा सकता है। तुम भी अपने ढंग से कुछ ऐसे शब्दों की सूची बनाओ जिनके रूप में थोड़ा-बहुत अंतर हो तभी सार्थक ढंग से उसका प्रयोग किया जा सकता है; जैसे– टूट, टूटना, टूटन आदि।

© NCERT not to be republished

0848CH18

अठारहवाँ पाठ

आओ पत्रिका निकालें

बहुत-से बच्चों को लेखक बनने का शौक होता है—अपना नाम पत्रिकाओं में छपा देखने का, बड़े होने पर अपने नाम की किताब छपी देखने का। यह कोई बुरी बात नहीं बल्कि अच्छी बात है लेकिन इसके लिए तैयारी ज़रूरी है, जैसे खिलाड़ी बनने के लिए ज़रूरी है। दुनिया के अधिकतर बड़े लेखकों ने अपनी पत्रिकाएँ निकाली हैं। तुम भी अपनी पत्रिका निकाल सकते हो।

बाज़ार से रूलदार कागज़ ले आओ। अपने भाई-बहनों से, अपने स्कूल और मुहल्ले के साथियों से बातचीत करो। उनसे कहो कि पत्रिका निकालने जा रहे हो। वे तुम्हारी पत्रिका के लिए कुछ लिखें—कविता, कहानी, लेख, चुटकुले जो भी जी में आए। इसके लिए तुम्हें अपनी रचना दे दें।

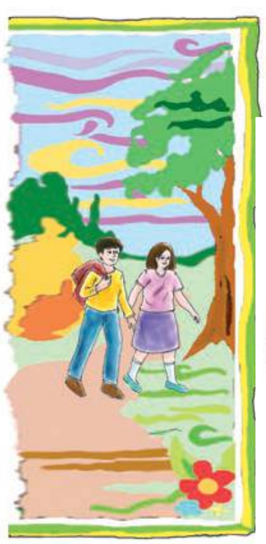

जब सारी रचनाएँ इकट्ठी कर लो तब उसे साफ़-साफ़ हाथ से रूलदार कागज़ पर लिख लो या तुम्हारे साथियों में जिसकी हस्तलिपि बढ़िया हो उससे लिखा लो। अगर कोई ड्राइंग या पेंटिंग बनाना चाहे तो उसी साइज के, बिना रूल वाले, कागज़ पर उससे बनवा लो। फिर उसे रचनाओं के बीच-बीच में लगा लो। सबको इकट्ठा कर खुद ही सी लो।

पत्रिका को खूबसूरत बनाने के लिए उसका कवर मोटे कागज़ का रखो और उस पर रंगीन

© NCERT not to be republished

कागज़ व रंग से सजावट कर लो। अपनी पत्रिका का कुछ नाम रख लो। पृष्ठों पर नंबर डाल लो। शुरू में एक सूची बना लो। किस पृष्ठ पर किसकी रचना है वहाँ लिख दो। पर तुम्हारी पत्रिका कितनी छोटी-बड़ी हो या कितने लोग कितना लिखेंगे, इसके हिसाब से तय करो। रंगीन पेंसिलों से हर पृष्ठ का हाशिया बेल-बूटेदार बना सकते हो। कोशिश करो कि तुम्हारे साथी लेखक अपना सोचकर लिखें, जो न लिख पाएँ वह दूसरे किसी लेखक की रचना लिखें, लेकिन चोरी न करें। उस लेखक की रचना है, यह लिख दें।

अपनी पत्रिका निकालने के लिए तुम पाँच बातें ज़रूर ध्यान में रखो–

1. हिज्जे दुरुस्त हों और भाषा और व्याकरण की अशुद्धियाँ न हों। किसी बड़े को पहले दिखा सकते हो।
2. अपनी लिखी मौलिक रचना को लेख, कहानी, कविता जो कुछ भी हो पहला स्थान दो। दूसरे की प्रिय रचना को दूसरा स्थान दो। चोरी की रचना मत दो।
3. लिखने-लिखाने से पहले यदि साथी लेखक चाहते हों तो उनसे बात कर लो। क्या लिख रहे हैं उस पर साथ मिलकर विचार कर लो।
4. तुम अपनी पत्रिका निकाल रहे हो अतः संपादक होने का घमंड मत करो बल्कि अपने लेखकों को प्यार करो, उन्हें आदर-सम्मान दो। कमज़ोर रचना को ठीक करना हो तो उनको बता दो।
5. पत्रिका लिखावट और सजावट में जितनी खूबसूरत बना सकते हो, बनाओ।

© NCERT not to be republished

जब तुम्हारी पत्रिका सिल-सिलाकर तैयार हो जाए तो सारे लेखक साथियों को इकट्ठा करो और यदि माँ चाय-पकौड़ी का जुगाड़ कर दें तो क्या कहने!

पत्रिका के अंत में कुछ पृष्ठ कोरे छोड़ना न भूलना। इस पर अपने माता-पिता, अध्यापक या आसपास के कुछ छोटे-बड़े लेखक हों तो उनसे उनकी राय लिखवा लेना। फिर स्कूल खुलने पर अपने-अपने शिक्षकों को भी दिखाना, उनकी राय लिखवाना और यदि चाहो तो अपने स्कूल के प्रमाण-पत्र के साथ हमें अपनी पत्रिका निकालने की सूचना देना।

वैसे दुनिया के बड़े लेखकों ने अपनी खुशी के लिए शुरू-शुरू में अपने हाथ से लिखी पत्रिकाएँ निकाली हैं, किसी नाम के लिए नहीं। चाहो तो उनका यह रास्ता अख्तियार कर सकते हो। हमारी शुभकामनाएँ अभी से लो!

– *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना*

© NCERT
not to be republished

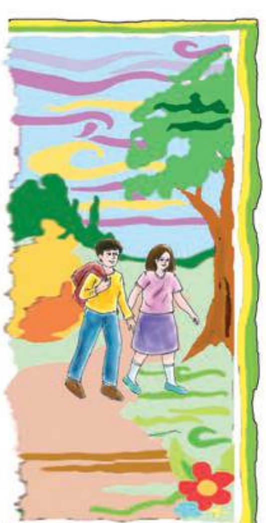

उन्नीसवाँ पाठ

आह्वान

कस ली है कमर अब तो, कुछ करके दिखाएँगे,
आज़ाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे।

हटने के नहीं पीछे, डर कर कभी जुल्मों से,
तुम हाथ उठाओगे, हम पैर बढ़ा देंगे।

बेशस्त्र नहीं है हम, बल है हमें चरखे का,
चरखे से ज़मीं को हम, ता चर्ख गुँजा देंगे।

परवा नहीं कुछ दम की, गम की नहीं, मातम
की, है जान हथेली पर, एक दम में गवाँ देंगे।

उफ़ तक भी जुबां से हम हरगिज़ न निकालेंगे,
तलवार उठाओ तुम, हम सर को झुका देंगे।

सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका,
चलवाओ गन मशीनें, हम सीना अड़ा देंगे।

दिलवाओ हमें फाँसी, ऐलान से कहते हैं,
खूं से ही हम शहीदों के, फ़ौज बना देंगे।

मुसाफ़िर जो अंडमान के तूने बनाए ज़ालिम,
आज़ाद ही होने पर, हम उनको बुला लेंगे।

–अशफ़ाक उल्ला खाँ

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished